Student ADVISOR®
A different way of learning ...

हिन्दी

व्याकरण व पाठ्यपुस्तक

उत्तर पुस्तिका

कक्षा

8

Published & Printed by :

Student Advisor Publications Pvt. Ltd.

E-38, Industrial Area, Mathura-281004

☎ Off. 7251835835, 7251836836

Visit us at : www.studentadvisorbooks.in

e-mail : studentadvisorpublications@gmail.com

info@studentadvisorbooks.in

Follow us on facebook

www.facebook.com/studentadvisorpublications

© Publishers

वैधानिक चेतावनी

इस पुस्तक के किसी भी अंश या भाग की पुन: प्रस्तुति या प्रतिलिपि किसी भी रूप में अन्यत्र नहीं की जा सकती है। प्रकाशक की लिखित पूर्व अनुमति के बिना किये गए ऐसे किसी भी कार्य के लिए संबंधित व्यक्ति वैधानिक कार्यवाही या वाद के भागीदार होंगे। सब तरह के वैधानिक विवादों का निपटारा मथुरा न्यायालय के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत होगा। पुस्तक को लिखते समय यद्यपि पूर्ण सावधानी रखी गयी है, फिर भी मुद्रण में किसी प्रकार की त्रुटि के लिए प्रकाशक व मुद्रक की जिम्मेदारी नहीं है ।

1 वर दे

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. वीणावादिनि—माँ सरस्वती।
नव—नया।
अंध-उर—अज्ञानरूपी अंधकार से युक्त हृदय।
बंधन-स्तर—बंधन का स्वरूप।
विहगवृन्द—पक्षियों का समूह।
कलुष—मन के मलिन भाव।
तम हर—अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करके।
प्रकाश—उजाला।
नवल—नवीन।
मन्द्र रव—धीमा तथा गम्भीर स्वर।
उर—हृदय।
जननि—माता, माँ।
तम—अज्ञान का अंधकार।
पर—पंख।
जगमग जग कर दे—संसार को प्रकाशित कर दे।
कलुष भेद—मन के मलिन भाव को काटकर।
ज्योतिर्मय निर्झर—प्रकाश से युक्त झरना।
नवल—कोमलता से युक्त नवीन।

2. **(क)** 'नव नभ' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि भारत के लोग नए समाज का निर्माण करें और उन्हें नए निर्माण हेतु सभी साधन प्राप्त हो सकें।
(ख) ज्ञान की देवी माँ सरस्वती से।
(ग) कवि भारत में नव अमृत मन्त्र भरने के लिए कह रहा है।

3. **(क)** कवि माँ सरस्वती से यह वरदान चाह रहा है कि स्वतन्त्रता का नव अमृत मंत्र सम्पूर्ण भारतवर्ष में भर जाये तथा हर प्राणी के हृदय से से अज्ञान का अन्धकार हट जाए और ज्ञान की ज्योति का झरना सभी जगह बहने लगे अर्थात् सम्पूर्ण संसार ज्ञान के प्रकाश से चमक उठे।
(ख) कवि चाहते हैं कि प्रकृति की कोई भी वस्तु अपने पुराने अथवा अतीत के स्वरूप में न रहे क्योंकि बिना नवीनता के संसार की उन्नति शीघ्रता से हो पाना संभव नहीं है। इसलिए कवि प्रकृति की हर वस्तु में नया रूप देखना चाह रहा है।

4. **(क)** प्रकाश **(ख)** के बन्धन
(ग) जननि **(घ)** पर, नव।

5. **(क)** हे माँ सरस्वती! लोगों के हृदय में भिन्न-भिन्न प्रकार के अज्ञान के बन्धन हैं, उन्हें काट दीजिए अर्थात् लोगों के मन के विकारों को दूर कर दीजिए और ज्ञान का ज्योतिरूपी झरना बहा दीजिए अर्थात् ज्ञान का प्रकाश फैला दीजिए।
(ख) हे माँ सरस्वती! जो यह आकाश के समान नया समाज फैला हुआ है। इसमें नए-नए कवि नवीन पक्षियों के समान चहकते हुए नवीन कल्पना की उड़ान भरने के लिए उत्साहित हैं। उन्हें नई गति प्रदान करते हुए नवीन लय और ताल से युक्त छन्द प्रदान कीजिए, इन्हें नए पंख देकर कल्पना की ऊँची उड़ान भरने योग्य बना दीजिए। इनके कण्ठ को कोमल और बादलों का सा गम्भीर स्वर प्रदान कीजिए जिससे ये प्रभावशाली नवीन गीत गा सकें।

6. **(क)** (आ) अनुप्रास
(ख) (अ) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(ग) (इ) पक्षियों का समूह

भाषा अध्ययन

1. छात्र शुद्ध उच्चारण करने का स्वयं अभ्यास करें।

2. रव, भर, उर, स्तर, ज्योतिर्मय, निर्झर, अमृत, प्रिय, हर, वृन्द।

3.

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अमृत	सुधा, अमिय
जननि	माँ, माता
रात	रात्रि, निशा
जग	संसार, जगत्
आकाश	नभ, गगन
विहग	पक्षी, खग

4.

शब्द	विलोम शब्द
तम	प्रकाश
स्वतंत्र	परतन्त्र
बंधन	मुक्त
नव	पुरातन
अमृत	गरल
सुरूप	कुरूप

5.

क्र.	उपमेय	उपमान	साधारण धर्म	वाचक शब्द
1.	सीता का मुख	चन्द्रमा	सुन्दर	के समान है
2.	मन	पीपर पात	डोला	सरिस
3.	हरिपद	कमल	कोमल	से
4.	कुटिया	नन्दनवन	फूल उठी	सी

2 आत्मविश्वास

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. दुर्भाग्य – बुरा भाग्य।
आत्महीनता – मन की हीन भावना।
एकाग्रता – तल्लीनता।
क्षमता – सामर्थ्य।
विश्वविख्यात – जग में प्रसिद्ध।
तल्लीनता – किसी काम में एकाग्रचित्त हो जाना।
अभंग – अटूट, अखण्ड।
सुगमता – सरलता।
दुविधा – असमंजस।
यथापूर्व – पहले जैसा।
अविचल – स्थिर, दृढ़।
सूक्ति – अच्छी उक्ति।
अखण्ड – अटूट, बिना खण्डित।
मर्सिया – शोक गीत।

2. **(क)** बाली को यह वरदान प्राप्त था कि जो भी उसके सामने आएगा, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाएगी।

(ख) राम बाली के सामने आकर इसलिए नहीं लड़े क्योंकि बाली को अपने विरोधी के आधे बल को खींच लेने का वरदान प्राप्त था।

(ग) कृष्ण ने महाभारत में न्याय का साथ देकर पाण्डव पक्ष का सहयोग किया और निर्वासित पाण्डवों को उनका अधिकार दिलवाकर अपना सर्वोत्तम काम किया।।

3. **(क)** सामने वाले की आधी ताकत खींच लेने की शक्ति हम सबको प्राप्त है, परन्तु हम को इस आत्मशक्ति की पहचान नहीं है। इस आत्मशक्ति का विकास विश्वास से होता है। हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करना होगा तथा आत्मबल का विकास करना होगा जिससे हम विरोधी की आधी शक्ति अपने अंदर खींच सकें।

(ख) लेखक ने हेलन केलर का उदाहरण देकर हमें यह समझाना चाहा है कि जब हमें सफलता मिलती है तो उससे सुख मिलता है, परन्तु जब हम लक्ष्य प्राप्ति में विफल हो जाते हैं तो सुख के द्वार बंद हो जाते हैं। इससे हम आत्मशक्ति तथा लक्ष्य प्राप्ति की सामर्थ्य को खो बैठते हैं जबकि होना यह चाहिए कि लक्ष्य प्राप्ति हेतु अपने अन्दर की शक्ति को विश्वास के साथ विकसित करना चाहिए और सफलता प्राप्त कर लेने तक अपना प्रयास जारी रखना चाहिए।

(ग) आत्मविश्वास द्वारा विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य होती है। इसके द्वारा मनुष्य अवश्य ही सफल हो जाता है। अतः जो उचित दिशा में अपने कर्तव्य का पालन करता है और अपने लक्ष्य की साधना के लिए अपनी सामर्थ्य और क्षमता में पूरा विश्वास रखता है वही भाग्यशाली है। विजयमाला भी उन्हीं को अर्पित की जाती है जो चुनौतियों का सामना करते हैं।

हमारे सामने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का उदाहरण है, जिन्होंने अपने जीवन में सिर्फ चुनौतियों को ही चुना और सफलताओं के शिखर पर पहुँचते रहे। उन्होंने आत्मविश्वास के बल पर अपने विरोधियों की प्रत्येक कुचाल को नष्ट किया। अतः आत्मविश्वास के बूते पर जीवन में सब कुछ सम्भव है।

4. **(क) प्रसंग—**प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा-भारती' कक्षा-8 के पाठ 'आत्मविश्वास' से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक लोगों को दोहरी मानसिकता को व्यक्त करता है।

व्याख्या— जो लोग किसी उद्देश्य को प्राप्त करने का उत्साह नहीं रखते और सदैव निराशापूर्ण भावनाओं में ही डूबे रहते हैं, वे जीवन में उतार से प्राप्त दुःख की ही बातें करते रहते हैं। वे कभी भी उन्नति के सुख की बात नहीं सोचते। ऐसे लोग कूड़ेघर के पास बैठकर शहर की गंदगी को कोसते हैं, उन्हें शहर की स्वच्छता नहीं दिखाई देती। ये लोग निम्नकोटि की विचारधारा से युक्त होते हैं। वे अपनी दूषित विचारधारा को संस्कारित नहीं कर सकते। जब

गन्दगी को एकत्र करने वाले उसे वहाँ से हटायेंगे तभी कूड़ेघर की गन्दगी वहाँ से हटेगी। ऐसे आलसी और कुसंस्कारित व्यक्ति कभी भी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते।

(ख) प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा-भारती' कक्षा-8 के पाठ 'आत्मविश्वास' से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक स्पष्ट मानसिकता को अपनाने का तथा रूढ़िवादी मानसिकता को छोड़ने पर बल देता है।

व्याख्या—जब कोई विरोधी व्यक्ति हमारे सामने आता है, तो हमारे मन में एक हीनभावना पैदा हो जाती है। इसका कारण होता है कि हमारे अन्दर भरोसे की कमी पैदा हो जाती है जिससे हम कायर बनने लगते हैं। यह सब बुरे संस्कारों के कारण होता है। अपनी क्षमताओं पर विश्वास न होने के कारण और अपने बल की नापतौल किए बिना हम अपने विरोधी को खुद से अधिक शक्तिशाली मान लेते हैं।

5. (क) यदि हमारे अन्दर लक्ष्य के प्रति अटूट विश्वास है तो निश्चय ही हम अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अतः अविचल श्रद्धा ही सफलता का, संघर्ष में विजय का, जीवन में उन्नति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है।

(ख) हमारी सफलता और असफलता का कारण हमारी सोच है। सफलता की सोच आशावादी और असफलता की सोच निराशावादी बनाती है। अतः हमें अपने विचारों को संतुलित रखना आवश्यक है।

(ग) मनुष्य आत्मविश्वास होने से अपने लक्ष्य में सफल होता है, जिसके द्वारा वह अपने दुश्मनों को आत्मबल से रहित बना सकता है। अतः सफलता हेतु आत्मविश्वास का होना अनिवार्य है।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र शुद्ध उच्चारण करने का स्वयं अभ्यास करें।

2. (i) लोगों को भला-बुरा समझकर हर निर्णय करना चाहिए।

(ii) दाता-याचक की उपमा ईश्वर और भक्त से उत्तम क्या होगी।

(iii) संस्कारों के आधार पर ही बच्चे सपूत-कपूत होते हैं।

(iv) मनुष्य में निश्चित-अनिश्चित होने की दशा दुविधा पैदा करती है।

(v) अपनी सोच द्वारा मनुष्य भाग्यवान-भाग्यहीन बन बैठता है।

(vi) हर कदम रखने से पूर्व पाप-पुण्य के बारे में जरूर सोचें।

(vii) सुख-दु:ख जीवन के पहलू होते हैं।

3. ताकत = बल। विजिटिंग कार्ड = पहचान पत्र। इशारा = संकेत। मर्सिया = शोक-गीत।

4.

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
तल्लीन	तत्	लीन	
दुर्भाग्य	दु:	भाग्य	
शक्तिशाली		शक्ति	शाली
कायरता		कायर	ता
एकाग्रता		एकाग्र	ता
खण्डित	अ	खण्ड	इत
अभागा	अ	भाग्य	आ

5.

सामासिक पद	समास विग्रह	समास का नाम
आत्मविश्वास	आत्मा में विश्वास	तत्पुरुष
कूड़ाघर	कूड़े का घर	तत्पुरुष
खन्दक-खाइयों	खन्दक और खाइयों	द्वन्द्व
शक्तिहीन	शक्ति से हीन	तत्पुरुष
यथापूर्व	पूर्व की तरह	अव्ययीभाव
विश्वविख्यात	विश्व में विख्यात	तत्पुरुष

6. (क) शीर्षक होगा—काँच का महल।

(ख) प्रयुक्त मुहावरे-

(i) भटका हुआ

(ii) टूट पड़ना

(iii) शान दिखाना

(iv) दिल धड़कना

(v) घबरा जाना

(vi) झपट पड़ना।

वाक्य प्रयोग—

(i) रास्ते में भटका हुआ व्यक्ति देर रात तक घूमता रहा।

(ii) पाण्डवों की सेना अपने शत्रुओं पर टूट पड़ी।

(iii) अपनी झूठी शान दिखाना गलत है।

(iv) किसी बुरी घटना को सुनकर मेरा दिल धड़कने लगता है।

(v) अचानक आये समुद्री तूफान से नाविक घबरा जाते हैं।

(vi) सेनानायक के आदेश पर सैनिक शत्रुओं पर झपट पड़े।

(ग) महल काँच का था, उसकी दीवारों पर कुत्ते को अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। इसलिए कुत्ते को चारों ओर कुत्ते दिखाई दे रहे थे।

(घ) कुत्ते ने अपने प्रतिबिम्ब को दूसरा कुत्ता समझा इसलिए उसने भौंकना शुरू कर दिया।

(ङ) साधारण वाक्य—

वह उन कुत्तों पर झपटा।

मिश्रित वाक्य—

अपनी शान दिखाने के लिए जब उसने भौंकना शुरू किया तब उसे चारों ओर कुत्ते भौंकते सुनाई दिये।

संयुक्त वाक्य—

उसका दिल धड़कने लगा और वह बुरी तरह घबरा गया।

3 मध्य प्रदेश की संगीत विरासत

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. ध्रुपद — गायन की एक विशेष शैली।
विरासत — उत्तराधिकार से प्राप्त।
प्रणेता — रचनाकार।
गुरुभाई — एक ही गुरु के शिष्य
जीवन्त — जीवित।

2. **(क)** मध्यप्रदेश में संगीत सम्राट तानसेन, राजा मानसिंह तोमर, सन्तूरवादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, कुमार गन्धर्व एवं स्वर कोकिला लता मंगेशकर आदि प्रमुख संगीतकारों ने संगीत की साधना की।

(ख) मध्यप्रदेश में प्रख्यात सरोदवादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के नाम पर 'अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी' की स्थापना की गई है।

(ग) भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर को दिया गया था।

(घ) कुमार गन्धर्व का वास्तविक नाम सिद्राम कोमकली था।

(ङ) संगीतज्ञ लता मंगेशकर के गले में सरस्वती स्वयं विराजमान मानी जाती हैं।

3. **(क)** संगीत का वास्तविक महत्त्व तब होता है, जब संगीत की शास्त्रीयता साधना को महत्त्व देती है। तब संगीत की मिठास आत्मिक शान्ति पहुँचाती है और जीवन जीने की उमंग पैदा करती है। संगीत सुरों को सुनकर आदमी अपने आप में थिरक उठता है। उसके हृदय में करुणा का भाव उमड़कर आँसुओं के रूप में बह निकलता है। जिसे सुनकर साधारण जन प्रभावित हो उठते हैं।

(ख) कुमार गन्धर्व ने राग-मालवती, लग्न गंधार, सहेली तोड़ी और गांधी मल्हार रागों की रचना की। उन्होंने 'अनूप राग-विलास' नामक पुस्तक लिखकर संगीत प्रेमियों को सीख भी दी।

(ग) बादशाह अकबर ने अपने दरबार में तानसेन से संगीत का प्रभाव दिखाने का हठ किया। इस पर तानसेन संगीत साधना में लीन हो गये और दीपक राग की साधना की। स्वर के आलाप धीरे-धीरे सिद्ध होते गये। इसके प्रभाव से दरबार में रखे सभी दीप जल उठे।

(घ) लता मंगेशकर को समूचे राष्ट्र की गायिका कहा जाता है। ऐसा मानना है कि उनके गले में सरस्वती विराजमान थीं। इसके लिए उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें 'दादा साहब फालके', 'पद्मभूषण' तथा 'पद्मविभूषण' आदि पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

(ङ) संगीत की महिमा अनन्त है। संगीत की शास्त्रीयता जहाँ साधना को महत्त्व देती है, वहीं संगीत में विद्यमान मधुरता से हमें आत्मिक शान्ति भी मिलती है जिससे जीवन को जीने की उमंग व उत्साह प्राप्त होता है। संगीत में पगे गीतों को सुनकर मनुष्य के पैर अपने आप ही थिरक उठते हैं। मनुष्य में करुणा का भाव पैदा हो जाता है जिसके कारण अनायास ही आँसू बह उठते हैं।

(च) पाठ में आए संगीतकारों में से मुझे सबसे अच्छी संगीतकार लता मंगेशकर लगी हैं क्योंकि उन्होंने गीतों में इस तरह स्वर पिरोया है कि हर भाव, धर्म और भाषा अपने स्वरूप में व्यंजित हो उठते हैं। इसीलिए उन्हें समूचे राष्ट्र की गायिका कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि उनके गले में स्वयं सरस्वती विराजमान थीं।

4. **(क)** 2. स्वामी हरिदास
(ख) 1. अलाउद्दीन खाँ

5. **(अ)** कुमार गन्धर्व **(आ)** तानसेन
(इ) तानसेन **(ई)** प्राणहीन।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र शुद्ध उच्चारण करने का स्वयं अभ्यास करें।

2.

	सामासिक शब्द	समास का नाम
(क)	राजपुत्र	तत्पुरुष
	प्रतिदिन	अव्ययीभाव
	माता-पिता	द्वन्द्व
(ख)	पीताम्बर	कर्मधारय
	कमल-नयन	कर्मधारय
	भगवान	तत्पुरुष
(ग)	राजभवन	तत्पुरुष
	रसोईघर	तत्पुरुष
	शयनकक्ष	तत्पुरुष

3. अनूठी—परम्परा, ग्वालियर—घराना,
मन्त्र—मुग्ध, रण—भेरी,
मधुर—तान

4. ज्ञान + हीन = ज्ञानहीन। मान + हीन = मानहीन।
जल + हीन = जलहीन। धन + हीन = धनहीन।
रक्त + हीन = रक्तहीन।

5.

शब्द	सन्धि-विच्छेद	संधि का प्रकार
दिगम्बर	दिक् + अम्बर	व्यंजन सन्धि
उल्लास	उत् + लास	व्यंजन संधि
सम्मान	सम् + मान	व्यंजन संधि
इत्यादि	इति + आदि	यण सन्धि

6. (अ) दीपक राग
(आ) भारत रत्न
(इ) संगीत सम्राट
(ई) स्वामी हरिदास
(उ) बाल गायक।

4 अपराजिता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. विलक्षण — अनोखा।
उत्फुल्ल — प्रसन्न।
अकस्मात — उचानक।
विषाद — दु:ख, उदासी।
विच्छिन्न — अलग, काटी हुई।
बुद्धिदीप्त — मेधावी, तेज बुद्धि वाला।
जिजीविषा — जीने की इच्छा।
कंठगत — गले में आना।
पटुता — चतुराई।
उत्कट — प्रबल।
ख्याति — प्रसिद्धि।
नियति — भाग्य।
आघात — प्रहार, चोट।
क्षत-विक्षत — घायल।
व्यथा — कष्ट, रोग।
आभामण्डित — तेज से युक्त।
नूरमंजिल — लखनऊ स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल।

2. **(क)** अपराजिता संस्मरण की लेखिका गौरा पन्त 'शिवानी' है।
(ख) डॉ चन्द्रा जी की माताजी का नाम श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम है।
(ग) डॉ. चन्द्रा को सामान्य ज्वर के बाद पक्षाघात की बीमारी हो गई।
(घ) 'वीर जननी' का पुरस्कार डॉ. चन्द्रा की माँ श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम को मिला।

3. **(क)** लेखिका की दृष्टि में डॉ. चन्द्रा सामान्य जनों से अनेक बातों में भिन्न थीं। वे असामान्य रूप से शारीरिक अक्षमता व रोग से पीड़ित थीं। उनके शरीर का निचला धड़ निष्प्राण मांस-पिण्ड मात्र था लेकिन वे सदा प्रफुल्ल रहती थीं। उनमें अदम्य साहस और उत्कट जिजीविषा थी। उनके मुखमण्डल पर ज्ञान का तेज झलकता था। उनका व्यक्तित्व महत्त्वाकांक्षा से परिपूर्ण था।
(ख) लेखिका ने जब चन्द्रा को पहली बार कार से उतरते देखा तो वे अचम्भित रह गईं। क्योंकि उन्होंने देखा कि कार का द्वार खुला और एक

प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से व्हील चेयर निकालकर सामने रख दी और भीतर चली गई। एक युवती ने धीरे-धीरे अपने निर्जीव धड़ को कार में से बड़ी दक्षता से नीचे उतारा और बैसाखियों के सहारे लिया और व्हील चेयर तक पहुँची तथा उसमें बैठ गई और बड़ी सहजता से उसे चलाती हुई कोठी के अन्दर चली गई।

4. (क) आशय—लेखिका को अपंगता से ग्रसित बित्ते भर की लड़की (डॉ. चन्द्रा) किसी देवांगना से कम नहीं लगी क्योंकि उसके चेहरे पर अद्‌भुत कान्ति थी। अपने बुद्धिबल और आत्मनिर्भरता के मुताबिक वह शरीर से बहुत छोटी थी।

(ख) आशय—अपंगता से ग्रसित डॉ. चन्द्रा लेखिका से कहती है कि वह नहीं चाहती है कि कोई उसको थोड़ा भी सहारा दे। वह स्वावलम्बी बनकर रहना चाहती है।

(ग) आशय—इस कथन का आशय है कि डॉ. चन्द्रा एक चिकित्सक बनना चाहती थी; लेकिन अपनी अपंगता के कारण वे चिकित्सक नहीं बन सकीं। जबकि विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा ने अनेक सफलताएँ प्राप्त कीं तथा विज्ञान के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया। इस प्रकार चिकित्सा ने उन्हें खो दिया और विज्ञान ने उन्हें प्राप्त किया।

(घ) आशय—लेखिका के अनुसार, डॉ. चन्द्रा की आँखों में बुद्धि का तेज झलकता था। उनमें कुछ पाने का उत्साह था। प्रत्येक क्षण भरपूर जीवित रहने की प्रबल इच्छा थी। इसके साथ ही उनमें प्रगतिशील बनने की अनेक महत्त्वाकांक्षाएँ थीं।

भाषा-अध्ययन

1. 'ऑ' आगत स्वर है जो अंग्रेजी से जुड़ा है। अत: छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें; फिर उन्हें लिखें।

3. (क) (1) अ **(ख)** (2) ता
(ग) (1) अभि **(घ)** (3) पराजिता

4. साधारण वाक्य—

1. आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास (चेन्नई) में काम कर रही हैं।
2. उस कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था।

मिश्रित वाक्य—

1. लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी।
2. ईश्वर सब द्वार नहीं बंद करता, यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा खोल भी देता है।

संयुक्त वाक्य—

1. प्राणिशास्त्र में एम.एस-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की।
2. एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं।

5. (क) उचित शीर्षक 'आत्मविश्वास की प्रबल प्रतिभा।'

(ख) हम विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के लिए उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए हरसम्भव प्रयास कर सकते हैं। उन्हें साधन सुलभ करा सकते हैं।

(ग) मुहावरे

दंग रह जाना—अचम्भे में पड़ जाना।

वाक्य प्रयोग—पाँच वर्ष की बालिका ने जब गीता श्लोक मौखिक सुनाए, उपस्थित लोग दंग रह गये।

हथियार डालना—हार मान लेना।

वाक्य प्रयोग—राजा के समक्ष शत्रुओं ने अपने हथियार डाल दिये।

धरना देना—एक स्थान पर अपनी माँगें लेकर बैठ जाना।

वाक्य प्रयोग—नेताओं ने अपनी माँगों के समर्थन में विधानसभा के सामने धरना दे दिया।

अपने पैरों पर खड़ा होना—आत्मनिर्भर हो जाना।

वाक्य प्रयोग—युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करना चाहिए।

(घ) सरल वाक्य—भगवान की लीला विचित्र है।

मिश्रित वाक्य—हमें चाहिए कि हम उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित करें।

संयुक्त वाक्य—उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें और उन्हें अच्छा जीवन जीने का मार्ग सुझाएँ।

6. ''नहीं, मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा। ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए, आपकी पुत्री की ह्वील चेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा?''
''आप चिंता न करें, मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराऊँगी।''

7.

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
कर्मठ	ता	कर्मठता
शालीन	ता	शालीनता
उदार	ता	उदारता
कृपण	ता	कृपणता
चाय	वाला	चायवाला
मिठाई	वाला	मिठाईवाला
फल	वाला	फलवाला
रिक्शा	वाला	रिक्शावाला
गाड़ी	वाला	गाड़ीवाला

8.

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
प्रति	क्षण	प्रतिक्षण
	दान	प्रतिदान
	ध्वनि	प्रतिध्वनि
	रूप	प्रतिरूप
	वादी	प्रतिवादी

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
परा	जय	पराजय
	क्रम	पराक्रम
	भव	पराभव
	भूत	पराभूत
	वर्तन	परावर्तन

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
अभि	मुख	अभिमुख
	शाप	अभिशाप
	नव	अभिनव

5 श्री मुफ्तानन्दजी से मिलिए

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. नि:संकोच – बिना किसी संकोच के।
कृतकृत्य – धन्य।
जीवन-यापन – जीवन बिताना।
तिकड़म-जुगाड़ – चतुराई।
खुशामद – चापलूसी।
इहलोक – मृत्युलोक।
मुफ्तानंद – मुफ्त की प्राप्त वस्तु का आनन्द।
साष्टांग – आठ अंग (सिर, आँख, हृदय, पैर, हाथ, मन, कर्म और वचन)

2. **(क)** लेखक ने इस पाठ का नाम मुख्य पात्र के नाम पर इसलिए रखा, क्योंकि पूरी कहानी मुफ्त में लेने वाले मुफ्तानंद जी के बारे में है।
(ख) मुफ्तानन्द को 'मुफ्तखोरों का सरताज' कहा गया है।
(ग) लेखक से मुफ्तानंद ने कालिदास ग्रन्थावली माँगी।
(घ) मुफ्तानन्द जी की कमीज मुफ्त में बरफ पाने के लिए लगी लाइन में लगने पर खींचातानी में फट गयी।
(ङ) लेखक मुफ्तानंद जी को साष्टांग प्रणाम करता है क्योंकि लेखक ने उन जैसा मुफ्तखोर नहीं देखा।

3. **(क)** मुफ्तानन्द जी को बिना पैसे के पान खाने का शौक, पतंग को लूटना, दैनिक पत्रों को मुफ्त में पढ़ना, बच्चों को मुफ्त में ही शिक्षा प्राप्त करा लेना, मुफ्त में थियेटर देखना, मुफ्त में बर्फ प्राप्त करना, मुफ्त में औषधि प्राप्त करना आदि घटनाएँ प्रधान हैं परन्तु उनके द्वारा अपनी इस उम्र में कटी पतंग को लूटने के लिए दौड़ लगाने की घटना बहुत ही प्रभावित करती है।

(ख) लेखक के घर प्रतिदिन दो समाचार-पत्र आते थे। उन को सबसे पहले मुफ्तानन्द जी ही पढ़ते थे। उनके पढ़ लेने के बाद ही अखबार को 'प्रसाद' रूप में लेखक प्राप्त करते थे। मुफ्तानन्द जी को मुहल्ले के उन सभी आदमियों के नाम याद थे जिनके घर प्रतिदिन अखबार खरीदा जाता था। कभी-कभी उन सभी के घरों पर समाचार-पत्र पढ़ने के लिए वे चले जाते थे। इस प्रकार वे रोजाना पढ़ने के लिए समाचार-पत्र प्राप्त करते थे।

(ग) मुफ्तानन्द जी दूसरों से माँगी गई पुस्तकों के माध्यम से अपना लाभ प्राप्त करते थे। उन मुफ्तखोर महोदय को पुस्तकें दे दिये जाने के बाद कभी वे पुस्तकें लौटकर नहीं आती थीं। उन्होंने मुफ्त में माँगकर लाई गयी पुस्तकों से अपनी अलमारी को भर रखा था। अपनी अलमारी पर वे किसी भी व्यक्ति की निगाह भी नहीं पड़ने देते थे।

(घ) लेखक ने 'कबीर का रहस्यवाद' इस सन्दर्भ में कहा कि मुफ्तानन्द जी बीमार हुए, उन्होंने अपने इलाज पर कुछ भी खर्च नहीं किया। उन्होंने 'दवा' तो क्या उस शीशी के पैसे भी कभी भी अपने जेब से नहीं दिये। डॉक्टर, वैद्य और हकीम सबके वे दोस्त होते हैं और उन्हें कभी भी फीस नहीं देते। उन्हें औषधि भी सरकारी अस्पताल से प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार मुफ्तानन्द जी को सभी औषधियाँ मुफ्त में ही प्राप्त हो जाती हैं।

(ङ) परलोक के बारे में मुफ्तानंद जी का मानना है कि जब भगवान ने इहलोक में आनन्दपूर्वक निभा दी तो परलोक में भी भगवान मुफ्त में ही उनकी मुक्ति कर देंगे। अर्थात् वहाँ भी वे अपने जुगाड़ व तिकड़मबाजी से भगवान को प्रभावित कर स्वर्ग का आनंद पा लेंगे।

4. (1) मुफ्त, नन्दन (2) मुफ्त, बेरहम।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

निमन्त्रण—मेरी बहिन के विवाह के शुभ अवसर पर आपका निमन्त्रण है।

सिद्धान्त—भारतीय वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग करके विज्ञान के सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है।

अनुष्ठान—आज मेरे घर में एक विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया जा रहा है।

तिलांजलि—अपने पूर्वजों को तिलांजलि देने से उन्हें मुक्ति मिलती है।

कृतकृत्य—देव-दर्शन करके हम सभी कृतकृत्य हो गये।

कण्ठस्थ—बालकों को अपनी पाठ्यपुस्तक की कविताएँ कण्ठस्थ करनी चाहिए।

साष्टांग—हमारे देश में आज भी महान लोगों को साष्टांग प्रणाम किया जाता है।

कृतार्थ—सत्कर्म करने से प्राणी कृतार्थ हो जाता है।

2. अन्न — अन्य

अन्न = अनाज; अन्य = दूसरा।

वाक्य प्रयोग—

- भारत अन्न उत्पादन में उन्नति कर रहा है।
- अब भारत किसी भी चीज के लिए अन्य देशों पर निर्भर नहीं है।

आदि — आदी

आदि = प्रारम्भ का; आदी = आदत पड़ना।

वाक्य प्रयोग—

- शुक्राचार्य राक्षसों के आदि गुरु थे।
- वह पान खाने का आदी है।

अनल — अनिल

अनल = आग; अनिल = हवा।

वाक्य प्रयोग—

- अनल सबको भस्म कर देती है।
- सर्वत्र अनिल फैली है, दिखती नहीं।

अकथ — अथक

अकथ = न कहने योग्य; अथक = बिना थके हुए।

वाक्य प्रयोग—

- मैंने उसकी अकथ कहानी पढ़ी।
- अथक परिश्रम से सफलता मिलती है।

उपकार — अपकार

उपकार = भलाई; अपकार = बुराई।

वाक्य प्रयोग—

- कभी किसी का उपकार नहीं भूलना चाहिए।
- यदि उपकार नहीं कर सकते तो अपकार मत करो।

3. यथा नाम तथा गुण—मुफ्तानन्द जी ने मुफ्त की खा करके 'यथा नाम तथा गुण' सिद्ध कर दिया।

माले मुफ्त दिले बेरहम—आजकल के लोगों पर यह कहावत कि 'माले मुफ्त दिले बेरहम' चरितार्थ होती है।

मुफ्त का चंदन-घिस मेरे नंदन—मुफ्त में वस्तु प्राप्त करने वाले लोग 'मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन' के अनुसार दिखाई पड़ते हैं।

धरना देना—छात्रों ने अपनी माँगों के समर्थन में डीएम के यहाँ धरना दिया।

नब्ज टटोलना—चुनावों में नेता लोग मतदाताओं की नब्ज टटोलना जानते हैं।

टोह में रहना—शिकारी जंगली जानवरों के शिकार की टोह में रहते हैं।

4. भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव-जंतु छोड़े हैं। कुछ काले, कुछ गोरे, कुछ सुन्दर, कुछ असुन्दर, भोले और जल्लाद। अलग-अलग स्वभाव, अलग-अलग चाल-ढाल। मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं, नाम है मुफ्तानंद जी।

5. खुशामद = चापलूसी। नब्ज = नाड़ी। सलामत = ठीक, स्वस्थ। दावत = भोज। बेरहम = निर्दय। अखबार = समाचार-पत्र। रोजाना = प्रतिदिन। नुकसान = हानि।

6. **(क)** (i) मोहल्ले में कौन-कौन लोग अखबार मँगाते हैं।

(ii) प्रत्येक मनुष्य को अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए समाचार-पत्र पढ़ना चाहिए।

(iii) ईश्वर की कृपा से उनके छह लड़के और चार लड़कियाँ हैं।

(ख) (i) वह रोज नहाता है।

(ii) यह मेरी पुस्तक है।

(iii) यह वही पुस्तक है जो मेरे घर में थी।

(iv) क्या कर रहा है?

(v) बाहर कोई आया है।

7. (i) प्रत्येक पाँच-पाँच पूड़ी खाएगा।

(ii) सब पके-पके आम इकट्ठे करो।

(iii) बच्चो, अपने चित्र अच्छे बनाओ।

(iv) लाल-लाल टमाटर होते हैं।

6 भक्ति के पद

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. पंछी — पक्षी।

छाँड़ि — छोडकर।

कूप — कुआँ।

छेरी — बकरी।

मधुकर — भौंरा।

अम्बुज — कमल।

तजि — छोड़कर

अधम — नीच।

उधारे — उद्धार किया।

दनुज — राक्षस।

बास — सुगन्ध

घन — बादल

चकोरा — चकोर।

पूँजी — धन।

2. **(क)** सूरदास के मन को सुख भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में प्राप्त होता है।

(ख) अधम के उद्धारक भगवान राम हैं।

(ग) रैदास ईश्वर के नाम के आराधक थे।

(घ) मीराबाई को रामरूपी रत्न प्राप्त हो गया।

3. **(क)** (इ) रैदास

(ख) (आ) दास भाव

(ग) (ई) करील

(घ) (इ) मीरा

4. **(क)** 'जहाज का पक्षी' भगवान कृष्ण के भक्त सूरदास का प्रतीक है। जिस तरह समुद्र की यात्रा में जानकारी लेने के लिए पक्षियों को छोड़ा जाता था, जमीन न दिखने पर पक्षी लौटकर जहाज पर ही आ जाते थे। उसी प्रकार भक्त भी बार-बार सभी ओर से निराश होकर भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिरूपी जहाज पर शरण प्राप्त करते हैं। उन्हें अन्यत्र कहीं सुख की प्राप्ति नहीं होती।

(ख) तुलसी ने खग (जटायु), मृग (मारीच), ब्याध (वाल्मीकि), पाषाण (शाप से पत्थर हुई गौतम की पत्नी अहल्या), बिटप (यमलार्जुन नामक वृक्ष), जड़ (भरत मुनि) आदि का उद्धार प्रभु श्रीराम द्वारा त्रेतायुग में तथा भगवान श्रीकृष्ण द्वारा द्वापर युग में किए जाने का उल्लेख किया है। प्रभु श्रीराम व कृष्ण ने अपने भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होकर उनकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

(ग) रैदास ने भगवान से अपना संबंध स्थापित करते हुए चन्दन, घन बादल, चन्द्रमा, दीपक, मोती के रूप में माना है और अपने आपको क्रमशः पानी, मोर, चकोर, बत्ती, धागे के रूप

में खुद को जोड़ा है। चन्दन पानी में घिस जाता है और उसकी गंध फैलने लगती है। बादल की गरजना के साथ ही वन में मोर कूकता है। चन्द्रमा को चकोर एकटक निहारता है। दीपक में बत्ती होती है, वह दीपक की ज्योति रूप में प्रकाश करती है। मोतियों में धागा पिरोकर हार (माला) बनाया जाता है। सोने को सुहागे से चमक प्राप्त होती है। इस तरह प्रभु से भक्त रैदास जी का ऊपर बताई गई चीजों की तरह सम्बन्ध है।

(घ) मीरा ने अपना मन संसार के मायामोह से हटा लिया और वे भगवान कृष्ण की भक्ति में रंग गईं। ईश्वर की भक्ति उनके लिए वह रत्न है जिसे चोर चुरा नहीं सकता, जो खर्च करने पर भी खर्च नहीं होता। उनका यह रत्न तो प्रतिदिन सवाया ही होता जाता है। वे कहती हैं कि जब मनुष्य सतगुरु की कृपा प्राप्त कर लेता है तब सत पर आधारित उसकी जीवन नौका बड़ी सरलता से संसार सागर को पार कर जाती है। इस प्रकार वे संसार की विविध वस्तुओं के प्रति मोह त्याग कर प्रभु श्रीकृष्ण का ही गुणगान करती हैं।

5. **(क)** तुलसीदास जी कहते हैं कि हे राम! मैं आपके कमल रूपी चरणों की भक्ति को त्यागकर कहाँ जा सकता हूँ? मुझे आपके सिवाय कोई अन्य देवता नहीं दिखाई देता है जिसने हठपूर्वक अपने यश के लिए पापियों का उद्धार किया हो। पक्षी (जटायु), मृग (मारीच), ब्याध (वाल्मीकि), पषान (अहल्या), वृक्ष (यमलार्जुन),जड़ (भरत मुनि) आदि का किस देवता ने संसार-सागर में आकर उद्धार किया है।

(ख) सूरदास जी कहते हैं कि कामधेनु को छोड़कर बकरी दुहने का विचार कौन करता है ? अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण को छोड़कर, हे मेरे मन ! तू किस दूसरे देव की आराधना करने का विचार करता है ? यदि तू ऐसा करता है तो निश्चय ही तू बड़ा मूर्ख है, उचित और अनुचित का भेद तुझे करना नहीं आता अर्थात् प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों की भक्ति में ही सूरदास जी को अथाह आनंद की अनुभूति होती है।

6. **(क) संदर्भ**—प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी (भाषा भारती) कक्षा 8 में संकलित पाठ 'भक्ति के पद' से अवतरित है। इसके रचनाकार भक्त रैदास जी हैं। रैदास जी भगवान से प्रार्थना करते हैं।

भावार्थ—तुम सुगन्धित चन्दन हो, हम पानी के समान हैं। चन्दन की सुगन्ध जल के साथ मिलकर उसमें समा जाती है। उसी तरह, हे प्रभो! तुम्हारी भक्ति में मेरा अंग-अंग डूबा हुआ है।

(ख) संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी (भाषा भारती) कक्षा 8 में संकलित पाठ 'भक्ति के पद' से ली गई हैं। इसकी रचयित्री मीरा है। यहाँ मीरा अपनी भक्ति का वर्णन कर रही है।

भावार्थ—मीराबाई कहती हैं कि मैंने रामरूपी रत्न को धन के रूप में प्राप्त कर लिया है। मेरे श्रेष्ठ गुरु ने मुझे एक बेशकीमती वस्तु प्रदान की है। मेरे गुरु ने बड़ी ही कृपा करते हुए मुझे अपना लिया है। इस तरह मैंने प्रत्येक जन्म की पूँजी प्राप्त कर ली है। संसार सम्बन्धी सब कुछ खो दिया। यह भक्तिरूपी सम्पत्ति बहुत ही अजब है जिसे किसी भी तरह खर्च नहीं किया जा सकता। कोई चोर भी इसे चुरा नहीं सकता। यह भक्तिरूपी धन प्रतिदिन ही सवाया होकर बढ़ता ही जा रहा है।

भाषा-अध्ययन

1. **(क)** पक्षी
(ख) चरण
(ग) नीरज
(घ) रजनी।

2.

शब्द	**पर्यायवाची**
रात	रात्रि, रजनी
पानी	तोय, जल
कमल	नीरज, पंकज

3.

तद्‌भव शब्द	**तत्सम शब्द**
महातम	माहात्म्य
दुरमति	दुर्मति
मानुस	मनुष्य
सोना	स्वर्ण

4. **(क)** यह दोहा छंद है। यह मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

(ख) यह सोरठा छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

(ग) यह भी सोरठा छंद है।

7 भेड़ाघाट

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. बंदिनी – महिला कैदी।
निष्काम – बिना किसी कामना के।
कृष्णत्व – कालापन, श्याम रंग।
घर्षण – रगड़, घिसना।
नगण्य – तुच्छ, किसी गणना में न आने वाला।
नुस्खा – वैद्य या हकीम द्वारा रोग दूर करने के लिए औषधि का उपाय।
कूता – संख्या जानना, तौल आदि का अन्दाजा लगाना।
तृण – तिनका, घास।

2. **(क)** भेड़ाघाट जबलपुर से तेरह मील दूर है।
(ख) त्रिपुरी राजघराने के महाराज करण देव की महारानी अल्हणा देवी ने संवत् 1155-56 विक्रमी में गौरीशंकर मन्दिर बनवाया था।
(ग) नर्मदा का संगमरमरी चट्टानों पर से बहता जल जब घर्षण के साथ धुआँधार झरने के रूप में गिरता है, तो वह दूध जैसा दिखाई पड़ता है; इसे ही दूधधारा कहते हैं।
(घ) भेड़ाघाट घूमने के लिए लेखक गया था।
(ङ) भेड़ाघाट पर नर्मदा के दोनों ओर की चट्टानें संगमरमर के पत्थर की बनी हैं।

3. **(क)** नर्मदा अमरकंटक से निकलती है। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा मनोरम है। यहाँ का वायुमण्डल खुला है जो लोगों को बार-बार आकर्षित करता है। यहाँ पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु आकर स्नान करते हैं। नर्मदा के किनारे अपने ऊपर कोमल घास धारण किए हुए हैं। वह जाड़ा, गरमी, बरसात के मौसम में बराबर बहती है। उसकी धवल धार चंद्रमा को भी मात देती है। नर्मदा के पवित्र भेड़ाघाट के पास ही एक प्राकृतिक झरना है, जिसे दूध-धारा कहते हैं। यहाँ प्रकृति अपने को क्षण-क्षण बदलती रहती है। इसके किनारों में मंदिर व धर्मशालाएँ हैं। यहाँ चारों ओर प्रकृति का सौंदर्य पसरा हुआ है।
(ख) जबलपुर में भेड़ाघाट के अलावा कई सुंदर घाट हैं। जैसे– ग्वालीघाट तिलवाड़ा आदि। इन स्थानों की प्रकृति भी कम सौन्दर्यमयी नहीं है। यहाँ की चट्टानें भी सतपुड़ा के शिखरों का गौरव हैं। यहाँ की प्राकृतिक शोभा के महत्व को आँका नहीं जा सकता। दूध-धारा और धुआँधार भी अपने प्राकृतिक सौन्दर्य की आभा को बिखेरती हैं। किन्तु भेड़ाघाट की सुन्दरता का मुग्धकारी प्रभाव अपने आप में चमत्कारिक है।
(ग) सन् 1914 ई. की बात है जब लेखक को भेड़ाघाट देखने का अवसर मिला। भेड़ाघाट जबलपुर से तेरह मील दूर है। वे आधा घण्टे में मीरगंज स्टेशन पर पहुँचकर उतर गए। उन दिनों रेलगाड़ी की यह गति बहुत तेज समझी जाती थी। दो-तीन अंग्रेज अपने खानसामे के साथ भेड़ाघाट जाने के लिए मीरगंज स्टेशन पर उतरे थे। नर्मदा नदी के भेड़ाघाट तक वहाँ सड़क कच्ची थी। वे अंग्रेज शुक्रतारा की तरह उनके साथी बन गए थे। नर्मदा नदी अमरकंटक से निकली है। नर्मदा का प्रवाह आठ सौ मील तक बहता है, परन्तु भेड़ाघाट इसके उद्गम अमरकण्टक से एक सौ चौवन मील की दूरी पर है। मुर्की और लोकेश्वर के बीचोंबीच भेड़ाघाट स्थित है।

4. **1.** (ग) मध्य प्रदेश
2. (क) नर्मदा
3. (ग) गौरी-शंकर
4. (ख) श्रीधर पाठक

5. **(क)** इस कहावत का आशय यह है कि बैल अपने जिस निश्चित स्थान पर बँधता रहा होता है, उसे वही स्थान अच्छा (प्रिय) लगता है। यह बात लेखक स्वयं के लिए कह रहे हैं क्योंकि वे वहीं पले-बढ़े हैं।
(ख) इसका आशय यह है कि नर्मदा नदी अपने जल के प्रवाह से मर-मर की ध्वनि उत्पन्न करती है, किन्तु इसके दोनों किनारों की ऊँची चट्टानों की श्वेतता कभी भी मर नहीं सकती है।
(ग) भेड़ाघाट के दोनों किनारों पर खड़ी संगमरमरी चट्टानें जिस तरह नर्मदा को मानो अपनी भुजाओं में स्थान देती प्रतीत होती हैं, उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति जनसेवार्थ झुककर कोई कार्य सम्पन्न करने हेतु चल पड़ता है, तो उसे समाजरूपी सुन्दर एवं मजबूत हाथ अपना संबल प्रदान कर देते हैं।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें और लिखें।

2. उज्ज्वलता, किनारा, खूँटा, ग्वारी घाट, दर्शन, नर्मदा, नवरत्न, बरसात, भेड़ाघाट, मुलायम, रेती, संन्यासी।

3. **1.** ईमानदारी से देखा जाय तो इन संगमरमरी चट्टानों की अपेक्षा चाँदी का मूल्य भी नगण्य लगता है।

2. लेखक ने जबलपुर के समीप नर्मदा नदी के भेड़ाघाट का प्रकृति चित्रण बहुत ही मनोरम शैली में किया है।

3. रात को पक्षी अपने-अपने घोंसलों में छिप जाते हैं।

4. पर्वत, नर्मदा, श्रेणी, पूर्वी, प्रपात, पश्चिम

5.

शब्द	अर्थ	नया शब्द
आम	एक फल का नाम	आम फलों का राजा है।
	जन साधारण	नेता जी ने आम लोगों के बीच भाषण दिया।
काल	समय	प्राचीन काल में लोग जंगलों में रहते थे।
	मृत्यु	सुनामी आने पर लोग काल के गाल में समा गये।
गति	चाल	हवा की गति तेज हो गई।
	अवस्था	कुसंगति द्वारा लोगों की बुरी गति हो जाती है।
अर्थ	भाव, आशय	उसके कथन का अर्थ समझ नहीं आया।
	धन	दिनोंदिन भारत की अर्थ व्यवस्था अच्छी हो रही है।
तात	पुत्र	अरे तात! इन सबको जल पिलाओ।
	पिता	दोनों बच्चों ने तात को प्रणाम किया।

6. **(अ)** कृतज्ञ
(आ) अनुकरणीय
(इ) मिताहारी
(ई) चिकित्सक
(उ) सर्वज्ञ
(ऊ) हस्तलिखित
(ए) लोकप्रिय

8 गणितज्ञ-ज्योतिषी आर्यभट

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. कीर्ति — यश।
संगम — मिलन, दो या अधिक नदियों के मिलने का स्थान।
शंकु — शंकु के आकार में।
प्रख्यात — प्रसिद्ध।
प्रलय — सर्वनाश, बर्बादी।
हेय — घृणित, घृणा करने योग्य।
वेधशाला — तारों और नक्षत्रों के अध्ययन के लिए बनी शोधशाला।
धारणा — मत।
आसन्न — समीप, पास।
पद्धति — ढंग।
सूत्रबद्ध — धागे में बँधा हुआ।

2. **(क)** पटना शहर का पुराना नाम पाटलिपुत्र है।

(ख) पटना के पास नालन्दा विश्वविद्यालय था जो उस समय का बहुत ही प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था।

(ग) पटना के पास गंगा, सोन और गंडक नदियों का संगम हुआ है।

(घ) जहाँ तारामण्डल और नक्षत्रों की गति का अध्ययन किया जाता है उसे वेधशाला कहते हैं।

(ङ) 'भट' शब्द का आशय 'योद्धा' होता है।

(च) आर्यभटीय पुस्तक संस्कृत भाषा में रचित है। इसके चार भाग निम्नलिखित हैं—

1. दशगीतिका 2. गणित
3. कालक्रिया 4. गोल।

(छ) 'आर्यभटीय' की ताड़पत्र पोथियों की खोज महाराष्ट्र के विद्वान डॉ. भाऊ दाजी ने सन् 1864 ई. में की थी।

3. **(क)** पाटलिपुत्र नगर से दूर आश्रम में एक वेधशाला थी। इस आश्रम में ज्योतिषी और विद्यार्थी इसलिए एकत्रित होते थे ताकि वहाँ इकट्ठे होकर हिसाब लगाकर भविष्यवाणी की जा सके कि ग्रहण किस समय लगेगा, कहाँ दिखाई देगा तथा इस ग्रहण का समय क्या होगा। वे अपनी गणना के अनुसार की गई भविष्यवाणियों की सत्यता की परख हेतु एकत्र हुआ करते थे।

(ख) आर्यभट ने सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है और इसके साथ हम भी घूमते रहते हैं। इसलिए आकाश का स्थिर तारामण्डल हमें पूर्व से पश्चिम की ओर जाता हुआ जान पड़ता है। दरअसल, तारामण्डल स्थिर है, पृथ्वी ही अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है।

(ग) आर्यभट ने बताया कि पृथ्वी की छाया जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्रग्रहण लगता है। इसी प्रकार चन्द्रमा जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आता है और वह सूर्य को ढक लेता है, तब सूर्यग्रहण होता है। राहु नामक राक्षस सूर्य अथवा चन्द्रमा को निगल जाता है, यह एक किंवदन्ती है।

(घ) ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संसार को प्राचीन भारत की सबसे बड़ी देन है—शून्य सहित केवल दस अंक संकेतों से भी संख्याओं को व्यक्त करना। इस दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति की खोज आर्यभट से तीन-चार सौ वर्ष पहले हो चुकी थी। आर्यभट इस नई अंक पद्धति से परिचित थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ के आरंभ में वृन्द (1000000000) यानी अरब तक की दस गुणोत्तर संख्या-संज्ञाएँ देकर लिखा है कि इनमें प्रत्येक स्थान अपने पिछले स्थान से दस गुना है। इस तरह हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संसार को बहुत बड़ी उपलब्धि प्रदान की।

(ङ) आर्यभट ने हमारे देश में गणित और ज्योतिष के अध्ययन की एक नई स्वस्थ परम्परा शुरू की। इसलिए आर्यभट को प्राचीन भारतीय विज्ञान का सबसे चमकीला सितारा कहा जाता है। वे गणित और ज्योतिष के अध्ययन में गहरी रुचि लेते थे। वे अपनी विचारधारा को बिना किसी झिझक के प्रस्तुत कर देते थे। वे एक साहसी ज्योतिषी वैज्ञानिक थे। उन्होंने पृथ्वी की गति के बारे में अपने विचार खुलकर सबके सामने प्रस्तुत किए। वे सबसे पहले ज्योतिषी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से अपने शब्दों में कहा कि पृथ्वी स्थिर नहीं है और धुरी पर चक्कर लगाती है। स्थिर तो आकाश का तारामण्डल है।

4. **(क)** पश्चिम, पूर्व
(ख) आर्यभट
(ग) आर्यभटीय।

भाषा-अध्ययन

1.

तालिका 'अ'	स्वतंत्र स्थिर आकाश निर्भय अंधकार अपराह्न
तालिका 'ब'	भय परतंत्र अस्थिर पाताल पूर्वाह्न प्रकाश
सही क्रम	परतन्त्र, अस्थिर, पाताल, भय, प्रकाश, पूर्वाह्न।

2.

उद्देश्य	विधेय
(क) आर्यभट	महान् गणितज्ञ और ज्योतिषी थे।
(ख) आर्यभटीय	दक्षिणापथ में गोदावरी तट क्षेत्र के अश्मक जनपद में पैदा हुए थे।
(ग) उन्होंने	अपने विचार खुलकर व्यक्त किए।
(घ) आर्यभटीय	भारतीय गणित ज्योतिष का पहला ग्रन्थ है।

3. **वि** = विज्ञान, विशिष्ट, विभूति, विशेष।
प्र = प्रस्तुत, प्रमुख, प्रधान, प्रख्यात।
अधि = अधिसंख्य, अधिपत्र, अधिक्रम।
अति = अतिदाह, अतिदीन, अतिदोष।

4. **ता**—सुन्दरता, कुरूपता।
आई—पढ़ाई, लिखाई।
आवट—लिखावट, दिखावट, रँगावट।
वाला—दूधवाला, मिठाईवाला।
त्व—घनत्व, विद्वत्व।

5.

समानार्थी शब्द	विरोधार्थी शब्द	पुनरुक्त शब्द
बाग-बगीचे	लंबे-चौड़े	तरह-तरह
ब्राह्मण-पुरोहित	चहल-पहल	दूर-दूर
दान-पुण्य	इर्द-गिर्द	कहाँ-कहाँ
गणितज्ञ-ज्योतिषी		कभी-कभी

विविध प्रश्नावली-1

1. अमृत — सुधा
विहग — पक्षी
कमल — सरोज

रात — निशा

सरस्वती — वीणावादिनी

2. **1.** (ख) दु:खी होना

2. (ग) मीरा

3. (ग) संयुक्त वाक्य

3. **(क)** सूरदास, **(ख)** बाली,

(ग) मात्रिक।

4.

उपसर्ग	**शब्द**
प्रति	क्षण
परा	जय
अभि	शाप
अनु	गमन
वि	ज्ञान

5. **1.** विरोधी के और अपने बल को तौले बिना, उसे शक्तिशाली मान लेने पर हमारी शक्ति आधी हो जाती है।

2. उपमा अलंकार में चार अंग निम्नलिखित हैं—(i) उपमेय (प्रस्तुत), (ii) उपमान (अप्रस्तुत), (iii) साधारण धर्म, (iv) वाचक।

3. अपराजिता महिला का नाम डॉ. चन्द्रा है।

6. **1.** कवि वीणावादिनी से ज्ञान के प्रकाश से परिपूर्ण झरना बहाने के लिए आग्रह कर रहा है।

2. कलुष भेद से कवि का आशय मन के विकारों को दूर करने से है।

3. आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए सूत्र यह है—''हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का पाठ पढ़ाने वालों के संपर्क से दूर रहो।''

4. जो शब्दांश या ध्वनि किसी सार्थक शब्द के शुरू में जुड़कर इसके अर्थ में बदलाव कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं जैसे—परा + भव = पराभव आदि। जबकि जो शब्दांश सार्थक शब्दों के अन्त में जुड़कर नयापन या भिन्न अर्थ की उत्पत्ति करता है, वह प्रत्यय कहलाता है जैसे—स्वतंत्र + ता = स्वतंत्रता आदि।

7. **1.** ● अनुप्रास अलंकार ● उपर्युक्त पंक्तियाँ 'वर दे!' पाठ से ली गई हैं। ● इस कविता के कवि का नाम सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' है। ● ताल-छन्द का आशय यह है कि 'कविता' करने के लिए किसी भी ताल अथवा छन्द की अनिवार्यता का होना आवश्यक है। यह साहित्य में रस का उद्गार करती हैं।

2. रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—(i) साधारण वाक्य, (ii) मिश्रित वाक्य, (iii) संयुक्त वाक्य।

3. मुफ्तानन्द जी मुफ्त खाकर मस्त रहते हैं। पैसा खर्च करना वे अपने आदर्श के विरुद्ध मानते हैं। वे अखबार पर भी खर्च नहीं करते। अपनी सन्तान की शिक्षा पर भी कोई खर्च नहीं करते। मुफ्त में प्राप्त की गई पुस्तकों में से वे अपने पुस्तकालय की शोभा बढ़ाते हैं। 'फ्री पास' से सिनेमा देखना वे अच्छा मानते हैं। औषधि तक वे मुफ्त ही प्राप्त करते हैं। यहाँ तक कि अपने मोक्ष के लिए भी वे मुफ्त का ही जुगाड़ ढूँढ़ने की बात कहते हैं।

4. तुलसीदास जी ने ''अपनपौ हारे'' इसलिए कहा है क्योंकि तुलसीदास जी भगवान राम के चरणों की भक्ति को त्यागकर किसी अन्य देवता की भक्ति नहीं करना चाहते हैं। जो भी देवता, दानव, मुनि, नाग और मनुष्य हैं, वे सब माया के वशीभूत हैं। अत: उन्हें ईश्वर की भक्ति का अनुभव नहीं हो सकता। इनसे किसी भी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है। उनके जैसा भक्त भगवान राम अलावा अन्य किसी की शरण में नहीं जाना चाहता।

5. यह दोहा छन्द है। इसके चार चरण हैं जिससे पहले और तीसरे चरण में तेरह-तेरह और दूसरे तथा चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ हैं।

6. **नतमस्तक** — सिर झुकाकर।

वाक्य प्रयोग—मैंने पिता को नतमस्तक होकर प्रणाम किया।

आभामण्डित — कांति से सुशोभित।

वाक्य प्रयोग— लक्ष्मीबाई का आभामण्डित मुखमण्डल तेज बिखेर रहा था।

रंचमात्र — थोड़ा-सा, तनिक-सा।

वाक्य प्रयोग—बनवीर अपने कुकृत्य पर रंचमात्र भी लज्जित नहीं था।

जिजीविषा — जीवित रहने की इच्छा।

वाक्य प्रयोग—डॉ. चन्द्रा में उत्कट जिजीविषा थी।

जिह्वाग्र — जीभ पर।

वाक्य प्रयोग—आचार्य के जिह्वाग्र पर गीता-श्लोक रहते हैं।

पुष्पवेणी — फूलों की माला, जो स्त्रियाँ अपने बालों में गूँथती हैं।

वाक्य प्रयोग—देवाङ्गनाएँ प्रायः पुष्पवेणी करती हैं।

यातनाप्रद — कष्टदायक।

वाक्य प्रयोग—उसे यातनाप्रद परिस्थितियों ने निराश बना दिया।

7. भारत ने आर्यभट के अतिरिक्त अनेक कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में भेजे हैं। इनमें से भास्कर -I व II, रोहिणी, ऐरियन मैसेंजर, 1A; 1B, 1C, 1D, IRS-1A, 1B, इण्सेट 2A, 2B, 2C, 2D, 2E, ओसियन सेट, इण्सेट 3A, 3B, 3C, 3D, 3E, कल्पना-I, ऐड्सेट, इण्सेट -4A, 4B, 4C, 4D इत्यादि प्रमुख हैं।

8. छात्र स्वयं करें।

9. अब कैसे छूटै नाम रट लागी।
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी ज्योति बरे दिन राती॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रैदासा॥

9 बिरसा मुण्डा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. जीवन-वृत्त — जीवनी या जीवन परिचय।
जागृति — चेतना।
उद्धारक — उद्धार करने वाला, तारने वाला।
चौपट होना — बरबाद होना।
कारागार — जेल।
पथ — मार्ग, रास्ता।
मुग्ध — मोहित हो जाना।
प्रारम्भिक — शुरुआत की।
बियावान — निर्जन।
धूमिल — धूल में लिपटा हुआ, धूल-धूसरित हो जाना।
पीड़ादायी — कष्ट देने वाली।
उपासना — पूजा।
तत्कालीन — उस समय की।
शोषण — काम करने पर मजदूरी न दिया जाना।
उपचार — इलाज।
दासता — गुलामी।
नाद — स्वर।
सामान्य — साधारण।
सदी — शताब्दी।
कथन — कहावत, कहना।
बर्बरता — निर्दयता, क्रूरता।

2. **(क)** (1) झारखण्ड
(ख) (3) सूर्य

3. **(क)** क्योंकि उन्होंने वहाँ दासता का अनुभव किया तथा मुण्डा लोगों का शोषण देखकर उन्हें बहुत कष्ट हुआ।

(ख) बिरसा रोगियों का उपचार जड़ी-बूटियों से करते थे।

(ग) बिरसा गाँववासियों और आसपास के लोगों का जड़ी-बूटियों से इलाज किया करते थे तथा उन्हें स्वस्थ रहने के उपाय बताते रहते थे।

(घ) बिरसा की मृत्यु के बाद उपद्रव के भय से अंग्रेजों ने बिरसा का दाह-संस्कार सार्वजनिक रूप से नहीं होने दिया।

(ङ) बिरसा मुण्डा ने मुण्डाओं को अंग्रेजों के अत्याचारों से तथा शोषण से मुक्ति दिलाने तथा भारत को आजादी दिलाने के उद्देश्य से अपना आन्दोलन प्रारम्भ किया।

4. **(क)** बिरसा मुण्डा
(ख) भाले, तीर-कमान
(ग) लालच।

5. **(क)** हमें आज से सौ वर्ष पूर्व के आदिवासियों के जीवन से भारत की आजादी के लिए किए गए त्याग और बलिदान की जानकारी मिलती है। साथ ही यह भी पता चलता है कि मुण्डा भारत की प्रमुख जनजाति है, जो राँची और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में निवास करती है। मुण्डा जाति बहुत ही सरल जीवन बिताने वाली जाति है। वह अपने जीवनयापन के लिए पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर करती है। अन्य जनजातियों की भाँति मुण्डा समाज में भी काफी जागृति आ गई है। विदेशी दासता से मुक्त होने के लिए तत्कालीन उरांव, मुण्डा और

खड़िया जनजातियों ने बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे और जमकर विरोध किया था।

(ख) बिरसा मुण्डा आन्दोलन के निम्नलिखित कारण थे—

(i) मुण्डाओं की जमीन पर जमींदार और दलाल थोप दिये गये। (ii) उनके पंच-पंचायत समाप्त कर दिये गये। (iii) मुण्डा जाति को उनकी जमीन से बेदखल कर दिया गया था। (v) मुण्डा जाति के लोगों के जंगलों पर अंग्रेजी शासन ने अपने दलालों और लोगों को मालिक बना दिया। वे मालिक से नौकर हो गये। (vi) उन्हें बेगार में घसीटा जाता। उनका शोषण होता था। (vii) आर्थिक तंगी का मामला बिरसा मुण्डा के आन्दोलन का सबसे बड़ा कारण था। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी।

(ग) बिरसा मुण्डा का आन्दोलन अन्याय और शोषण के विरुद्ध तथा मानवता की रक्षा के लिए था। उन दिनों प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानियों में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, कुँवर सिंह आदि की वीरता की गाथाएँ लोगों के अंदर जुनून पैदा कर रही थीं।

बिरसा के नेतृत्व में मुण्डा और दूसरी जनजातियाँ भाले और तीर-कमान लेकर चारकाड़ गाँव में एकत्र हो गये। बिरसा को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध दंगा भड़काने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। सजा पूरी होने के बाद उन्होंने सामाजिक जागरण को स्वतन्त्रता-संग्राम का नाम दे दिया गया। बिरसा ने बैठकें शुरू कीं जिसकी सूचना शासन को लग गई और इनके विरुद्ध वारंट कट गया। इन्हें पकड़ने के लिए इनाम घोषित हुए। इनाम के लालच में कुछ देशद्रोहियों ने सोते हुए बिरसा को पकड़वा दिया। ऐसी घटनाओं से पता चलता है कि भारत जब भी विदेशियों से पराजित हुआ, तो देशद्रोहियों के कारण।

(घ) अंग्रेजों ने मुण्डा जनजाति के लोगों को खेतों से बेदखल कर दिया और उनके परम्परागत रहन-सहन तथा ग्रामीण व्यवस्था को अंग्रेजों ने नष्ट करके जमींदार, जागीरदार, जंगल के ठेकेदार और दलाल उन पर लाद दिए। वनवासी अपनी ही जमीन पर मालिक से नौकर हो गये। वे भूख और दमन से स्वयं को असहाय समझने लगे। ऐसी स्थिति में बिरसा मुण्डा ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। यह आन्दोलन अन्याय और शोषण के विरुद्ध था, मानवता की रक्षा के लिए था। मुण्डा समाज की दबी भावनाएँ उभरकर आ गईं। सामाजिक आन्दोलन ने राजनैतिक रूप धारण कर लिया था। बिरसा मुण्डा इन गतिविधियों के केन्द्रबिन्दु थे तथा उन्होंने अंग्रेजी शासन को समूल उखाड़ फेंकने को अपना उद्देश्य बना लिया।

(ङ) बिरसा मुण्डा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) एकता की भावना— बिरसा ने अपने समाज के लोगों को एकत्र किया, उनको संगठित करके अपनी भावना बतायी।

(ii) देशप्रेम की भावना— बिरसा बचपन से ही एक होनहार और देशभक्त बालक था। उसमें अपने समाज और देश के उत्थान के लिए सब कुछ कर गुजरने की तीव्र इच्छा थी। उसने लोगों को स्वतन्त्रता और अपने जीवन-मूल्यों को समझने की बात बतायी। जड़ी-बूटियों के द्वारा बीमारियों का इलाज करना सीखा, इससे उनमें स्वदेशी की भावनाओं की तीव्रता का पता चलता है।

(iii) स्वतन्त्रता की भावना—देश की आजादी के लिए उन्होंने जीवनभर संघर्ष किया। अंग्रेज सरकार के जुल्मों को सहा। उनका देश की आजादी का सपना पूरा तो नहीं हो सका, परन्तु लोगों में आजादी की चेतना जागृत कर दी।

भाषा-अध्ययन

1. आदेश, युवक, दण्ड, पुरस्कार, प्रस्तुत, स्वास्थ्य।

2.

पूर्ण शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
जीवन-वृत्त	जीवन का वृत्त	तत्पुरुष समास
शैशवकाल	शैशव का काल	तत्पुरुष समास
शंखनाद	शंख का नाद	तत्पुरुष समास
टीका-टिप्पणी	टीका और टिप्पणी	द्वन्द्व समास
जड़ी-बूटी	जड़ी और बूटी	द्वन्द्व समास
बहला-फुसला	बहला और फुसला	द्वन्द्व समास
गाँववासी	गाँव के वासी	तत्पुरुष समास

3.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
तत्कालीन	तत् + कालीन	व्यंजन संधि
उद्धारक	उत् + धारक	व्यंजन संधि
तन्मय	तत् + मय	व्यंजन संधि
सत्याग्रह	सत्य + आग्रह	स्वर संधि
युवावस्था	युवा + अवस्था	स्वर संधि

4. (अ) ता, (आ) बे, (इ) नीय, (ई) इक।

5.

शब्द	पर्यायवाची शब्द	गलत शब्द
रास्ता	मार्ग, रथ, पगडंडी, पथ	रथ
बच्चा	बाल, शिशु, काल, बालक	काल
पिता	जनक, पितृ, पितामह, तात	पितामह
सूर्य	रवि, शशि, भानु, दिनकर	शशि
जेल	बंदीगृह, आवास, कारागार, कारागृह	आवास

10 प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. रक्षक – रक्षा करने वाले।
   ताम्रपत्र – ताँबे का पत्तर, स्मृति पत्र।
   श्रद्धांजलि – मरने के बाद श्रद्धा प्रकट करने हेतु व्यक्त शब्द।
   संवर्द्धन – वृद्धि, विकास।
   शहीद – बलिदान।
   प्रशस्ति – प्रशंसा।
   उत्कृष्ट – उच्च कोटि का।

2. **(क)** सैनिकों की कुल्हाड़ी का सबसे पहले विरोध एक महिला अमृता देवी विश्नोई ने किया।
   (ख) अमृतादेवी का नारा था–''सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण''।
   (ग) विश्नोई समाज की स्थापना आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले सन् 1485 ई. में भगवान जम्भेश्वर ने की थी।
   (घ) हिरणों की रक्षा में श्री निहालचन्द विश्नोई शहीद हुआ था।
   (ङ) राजा अभयसिंह ने सैनिकों के दुष्कृत्य के लिए क्षमा माँगी तथा ताम्रपत्र पर राजाज्ञा जारी की गई कि विश्नोई गाँवों में कोई भी पेड़ नहीं काटेगा। यदि काटेगा तो राजदण्ड का भागी होगा।

3. **(क)** जोधपुर के राजा अभयसिंह को अपने महल निर्माण के लिए लकड़ी की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए उन्होंने अपनी सेना के कुछ सैनिकों को लकड़ी काटकर लाने का आदेश दिया। राजा के सैनिक जोधपुर के पास खेजड़ली गाँव पहुँचे। यह गाँव विश्नोइयों का था। विश्नोइयों ने कहा, ''हम परम्परा से वनों के रक्षक हैं। हमारे रहते पेड़ नहीं कट सकते।'' सैनिकों ने उनके विरोध की अनदेखी की। सैनिकों ने कुल्हाड़ी चला दी। अमृता देवी विश्नोई नामक महिला पेड़ों से लिपट गई और कहती रही, "सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण।" राजा की आज्ञा का पालन करना अपना धर्म मानते हुए सैनिकों ने अमृता देवी को ही काट डाला। इस बलिदान के देखकर सैकड़ों नर-नारी आगे आ गए और बारी-बारी कटते गए किन्तु एक भी पेड़ नहीं कटने दिया।
   (ख) जब राजा के आदेश से सैनिक पेड़ काटने के लिए खेजड़ली गाँव पहुँचे थे तब अमृता देवी वृक्षों की रक्षा हेतु उन्हें काटने से रोकने के लिए, सैनिकों से निवेदन कर सकती थीं तथा अपनी बात को राजा के पास जाकर विरोध के रूप में कह सकती थीं और पेड़ों के न काटने के लिए अपनी परम्परा को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकती थीं।
   (ग) पेड़ों की आवश्यकता सभी को है, दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण से अपनी रक्षा के लिए हमें पेड़ लगाने होंगे और उनकी रक्षा करनी होगी। अत: अमृता देवी का नारा, ''सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण'' सार्थक हो गया। अमृता देवी और तीन सौ बासठ शहीदों के बलिदान की स्मृति में भारत सरकार प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार देती है। मध्य प्रदेश का वन विभाग प्रति वर्ष वन-संवर्द्धन एवं वन रक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली ग्राम पंचायत अथवा संस्था को शहीद अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार और एक लाख रुपया नकद प्रदान करता है। इस प्रकार उनका नारा सार्थक सिद्ध हुआ है।
   (घ) जब जोधपुर के राजा अभयसिंह को विश्नोई समाज के बलिदान सम्बन्धी भीषण

घटना का समाचार मिला तो उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। वे स्वयं खेजड़ली गाँव पहुँचे और सेना के द्वारा किए गये दुष्कृत्य के लिए क्षमा माँगी। उन्होंने ताम्रपत्र जारी किया। उसमें राजाज्ञा जारी की गई कि विश्नोई गाँवों में कोई पेड़ नहीं काटेगा। यदि काटेगा तो राजदण्ड का भागी होगा। इस प्रकार राजा द्वारा पश्चाताप किया गया।

(ङ) अमृता देवी व अन्य शहीदों से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वनों की सुरक्षा करनी चाहिए। उनके संवर्द्धन और विकास में रुचि लेनी चाहिए। वन्य जीवों की सुरक्षा और उनकी प्रजातियों का विकास करना चाहिए। प्रत्येक राज्य सरकार को वृक्षारोपण और वन सम्पदा के विकास और सुरक्षा के लिए अपनी ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार घोषित किये जाने चाहिए तथा वृक्षारोपण करने का अभियान चलाना चाहिए।

4. **(क)** (उ) इन सबके सम्मिलित प्रभाव वाली प्रथा पर

(ख) (आ) अमृता देवी विश्नोई

(ग) (आ) तरु

(घ) (अ) 362

(ङ) (आ) शौर्य चक्र से

भाषा-अध्ययन

1. मूक, रंक, सम्मानित, रक्षक, शोक, अक्षम्य, अहिंसा, अहित, सुखी, समर्थन।

3. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

- महापुरुष के जन्मदिन पर लोगों ने श्रद्धांजलि दी।
- हम देशवासी देश की सेवा करने का संकल्प लेते हैं।
- निहाल चन्द को मरणोपरान्त शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया।
- मध्यप्रदेश में अमृता देवी का वृक्ष संरक्षण कार्यक्रम बड़ा ही प्रासंगिक है।
- भगवान जम्भेश्वर ने प्रकृति के उनतीस नियमों के पालन की शिक्षा दी।

3.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
वृक्षारोपण	वृक्ष + आरोपण	स्वर संधि
एकमेव	एकम् + एव	स्वर संधि
राजाज्ञा	राजा + आज्ञा	स्वर संधि
मरणोपरान्त	मरण + उपरांत	स्वर संधि
वातावरण	वात + आवरण	स्वर संधि

4.

समास पद	समास-विग्रह	समास का नाम
ताम्रपत्र	ताम्र का पत्र	तत्पुरुष
राजदण्ड	राजा का दंड	तत्पुरुष
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष होने वाला	अव्ययी भाव
ग्रामपंचायत	ग्राम की पंचायत	तत्पुरुष
शौर्यचक्र	शौर्य का चक्र	तत्पुरुष

5.

पूर्ण शब्द	उपसर्ग + शब्द
गैरसैनिक	गैर + सैनिक
पर्यावरण	परि + आवरण
सम्मान	सम् + मान
प्रशस्ति	प्र + शस्ति
प्रदूषण	प्र + दूषण
संवर्द्धन	सम् + वर्द्धन

6.

उद्देश्य	विधेय
(क) भगवान जम्भेश्वर	द्वारा हरे-भरे वृक्षों को बनाए रखने की प्रेरणा दी गई थी।
(ख) विश्नोई समाज	ने वनों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
(ग) भारत सरकार	प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार देती है।

11 गिरधर की कुण्डलियाँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(1)** दौलत = सम्पत्ति। ठाँऊ = स्थान, स्थिर। पाहुन = अतिथि, मेहमान। निदान = अन्त, उपचार। निस = रात। अभिमान = घमण्ड। जस = यश। जग = संसार, दुनिया। जियत = जीवित रहते हुए, जीते हुए।

(2) गाहक = ग्राहक, ग्रहण करने वाला। कोकिला = कोयल। सहस = हजार। बिनु = बिना। लहै = प्राप्त करते हैं। ठाकुर मन के = मन के मालिक, मन के स्वामी।

(3) ताहि = उसको। खता = चूक, गलती, कमी। परतीती = विश्वास, भरोसा। सुधि लेइ = खोज- खबर लेनी चाहिए, सोच-समझकर आचरण करना चाहिए। बिसारि दे = भुला दे।

2. **(क)** हमें दूसरे व्यक्तियों से मीठे वचन बोलने चाहिए।

(ख) कोयल सबको अच्छी लगती है क्योंकि वह मिठास भरी बोली बोलती है।

(ग) धनी व्यक्ति को अपने धन का घमण्ड न करने को कहा है।

(घ) 'गुन के गाहक' से आशय है कि गुण को ग्रहण करने वाले सभी होते हैं। गुणरहित वस्तु को कोई भी स्वीकार नहीं करता है।

(ङ) कवि ने बीती तहि.... कहकर लोगों को यह सलाह दी है कि जो बात (घटना) घट चुकी है, उसे भुला देने में ही भलाई है।

3. धन को चंचल बताया गया है, कभी आ जाता है, तो कभी चला जाता है। सम्पत्ति किसी के पास सदा के लिए नहीं रहती। यह तो बहते हुए जल के समान होती है। जल एक स्थान पर कभी स्थिर नहीं रहता उसी तरह धन कभी भी एक व्यक्ति के पास नहीं रहता। यह धन तो चार दिन-रात का मेहमान होता है। अत: मीठा बोलकर, सबके साथ विनयपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। धन पर घमण्ड करना व्यर्थ का सौदा है। अत: धन पाकर हमें अभिमान नहीं करना चाहिए।

(ख) कोयल की वाणी को सभी लोग सुनते हैं उसकी वाणी सभी को अच्छी लगती है, सुहाती है। अपनी कर्कश बोली के कारण कौआ सबके द्वारा अपवित्र और त्याज्य माना गया है। कोयल की वाणी मीठी होने से सब लोगों द्वारा उसकी मिठास की प्रशंसा की जाती है। इस संसार में गुणों की पूजा होती है, अवगुणों की नहीं।

(ग) घटित घटना से हमें निराश और हतोत्साहित नहीं हो जाना चाहिए। आगे के कार्य को सोच-समझकर, मन लगाकर करना चाहिए। फिर जो आसानी से हो सके उसे करना चाहिए। मन लगाकर काम करने से उसमें सफलता मिलती है। दुष्ट व्यक्ति भी फिर हँसी नहीं उड़ा पाते। मन में पक्का विश्वास करके अपने काम में जुट जाना चाहिए। भविष्य में सुख प्राप्ति की आशा होती है। अत: बीती बातों को भुला देने में ही लाभ है।

4 'लोक व्यवहार की बातें' इन कुण्डलियों में हैं। जिनके उदाहरण निम्नवत् हैं—

● दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान।
किसी भी व्यक्ति को अपने धन का घमण्ड स्वप्न में भी नहीं करना चाहिए। यह धन कभी आ जाता है तो कभी चला जाता है।

● मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजै।
हमें मीठे वचन बोलने चाहिए। मधुर व्यवहार से और विनयपूर्वक बोलने से हमें संसार में यश की प्राप्ति होती है। जो लोग मधुर वाणी का व्यवहार नहीं करते, वे निश्चय ही घाटे का सौदा करते हैं।

● पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।
धन का घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि धन सदा किसी के पास नहीं रहता। यह मेहमानों की तरह थोड़े समय के लिए सबके पास आता है।

● बीती ताहि बिसारे दे, आगे की सुधि लेइ।
घटित घटना को भुलाने में ही भलाई है। भविष्य को बेहतर बनाने की भावना से उचित व्यवहार की बात को सोच-समझकर बीती बात भुला देनी चाहिए।

5. **(क) सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी (भाषा भारती) कक्षा 8 में संकलित पाठ 'गिरधर की कुण्डलियाँ' से ली गई हैं। इसके कवि गिरधर जी हैं।

भावार्थ—महाकवि गिरधर जी कहते हैं कि गुणों के ग्रहण करने वाले तो हजारों लोग होते हैं। बिना गुण की वस्तु को कोई भी नहीं लेता। जिस तरह कौआ और कोयल के शब्द को सुनते तो सभी हैं लेकिन कोयल की वाणी सभी को अच्छी लगती है। इन दोनों का रंग एक-सा होता

है, परन्तु सभी कौए को अपवित्र मानते हैं। कवि गिरधर जी कहते हैं कि हे मन के स्वामी! आप सभी इस एक बात को सुन लीजिए कि कोई भी व्यक्ति बिना गुण वाली वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहता। गुणकारी वस्तु के हजारों लोग ग्राहक होते हैं।

(ख) सन्दर्भ—पूर्ववत्।

भावार्थ—बीती बात को भुला देने में ही भलाई है। जो काम आसानी से हो सके, उसमें ही अपने मन को लगाना चाहिए। जो भी बात (काम) बन सके (हो सके) तो उसे ही मन लगाकर करना चाहिए। कविवर गिरधर कहते हैं कि हरेक काम को मन में विश्वास के साथ कीजिए। भविष्य में होने वाले सुख की बात को समझकर उस बीत चुकी बात को भुला दीजिए।

भाषा-अध्ययन

1. स्वप्न, सहस्र, शब्द, गुण, प्रतीति, जीवित, ग्रहणकर्ता।

2. अनुप्रास अलंकार।

3. लीजै-कीजै
तौलत-दौलत
सुहावन-अपावन
देइ-लेइ
पावै-आवै।

4. अनुस्वार के प्रयोग वाले शब्द—पंच, गंज, पंक, पंत, कंस।
अनुनासिक के प्रयोग वाले शब्द—जाँच, आँच, आँख, नदियाँ, फलियाँ।

5. ।ऽ ।ऽऽ ऽ।ऽ ऽ ऽऽ ।।ऽ।
(24 मात्राएँ)

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगारो आपनों, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै।
खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना विचारे॥
खान-पान सम्मान, राग-रंग मनहि न भावै।
कह गिरधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे।

6.

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
दौलत	सम्पदा, धन
संसार	लोक, जग
अभिमान	गरव, दर्प
पाहुन	अतिथि, मेहमान

12 याचक और दाता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. याचक — माँगने वाला।
धरोहर — वह वस्तु या द्रव्य जो दूसरों के पास कुछ समय के लिए दूसरे के पास इस विश्वास से रखी जाए कि माँगने पर उसी रूप में मिल जाएगी।
वात्सल्य — बच्चों के प्रति प्रेम।
हतप्रभ — आश्चर्यचकित।
गुहार = पुकार।
शंका — सन्देह।
जिजीविषा — जीवित रहने की इच्छा।
निस्तब्ध — बिना हिले-डुले।
सहानुभूति — हमदर्दी, संवेदना।

2. **(क)** वृद्धा मन्दिर के पास फूलों की माला बेचा करती थी।
(ख) सेठ बनारसीदास के यहाँ जरूरतमन्दों की भीड़ लगी रहती थी।
(ग) वृद्धा सेठजी के पास जमा अपनी हाँड़ी से कुछ रुपये माँगने के लिए गई थी।
(घ) सेठजी ने अपने बच्चे की पहचान उसकी जाँघ पर बने लाल निशान को देखकर की।
(ङ) बच्चा दवाओं के प्रभाव से होश में आने लगा। किन्तु वृद्धा माँ के बिना वह बच्चा फिर से बीमार पड़ गया।

3. **(क)** निस्तब्ध
(ख) ममत्व
(ग) मकरन्द
(घ) हतप्रभ
(छ) जिजीविषा।

4.

(अ)	**(आ)**	**(इ)**
फूल	दाता	फूल-फुलवारी
याचक	ममता	याचक-दाता
माँ	फुलवारी	माँ-ममता
मंदिर	मानवता	मंदिर-पूजा
मानव	पूजा	मानव-मानवता

5. **(ख)** किसी का बिछुड़ा बच्चा पाकर वृद्धा पहले से अधिक मेहनत करने लगी थी। बच्चे की वजह से वह अपने घर शीघ्र लौटने लगी। बच्चा माँ के

प्यार को प्राप्त करके बहुत ही प्रसन्न था। वह उसके भविष्य के सपने बुनने लगी। वह उसे हर तरह खुश रखना चाहती थी। इससे उसे लग रहा था कि मानो उसे उसकी मंजिल मिल गई हो।

(ख) मोहन उसी नगर के सेठ बनारसीदास का इकलौता बेटा था। बचपन में वह अपने माँ-बाप से बिछुड़ गया था। उस वृद्धा ने अपने पास रखकर उसका पालन-पोषण किया था। माँ की ममता पाकर वह अपने माता-पिता को भूल गया। उस वृद्धा ने बड़े वात्सल्य से उसका पालन-पोषण और परवरिश की। वृद्धा भी अब बच्चे के बिना एक क्षण नहीं रह पाती थी। इस तरह वह बच्चा वृद्धा के पास आया।

(ग) वृद्धा से जब सेठजी ने बच्चे को प्राप्त कर लिया और वृद्धा रोती हुई वहाँ से चली गई तब सेठ ने उसका अच्छे डॉक्टर से इलाज कराया। दवा के प्रभाव से कुछ होश आने पर बच्चे ने 'माँ' को पुकारा। माँ को न पाकर बच्चे की हालत फिर से खराब हो गई। सेठजी वृद्धा के घर पहुँचे, वृद्धा से अनुनय-विनय किया और पैर पकड़कर बोले—''ममता की लाज रख लो।'' माँ का ममत्व जाग उठने पर वृद्धा सब बीती बातें भूल गई। वह सेठ के साथ चलकर बच्चे के पास पहुँची तथा बच्चे के ऊपर हाथ फेरा। माँ के ममता भरे हाथ का स्पर्श पाकर बालक सचेत हुआ और इस प्रकार उस बालक को ज्वर से मुक्ति मिली।

(घ) सेठ के अनुनय-विनय तथा याचना करने पर वृद्धा सेठ की कोठी पर गई। वृद्धा ने सेठजी के घर जाकर मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन ने हाथ को पहचान कर तुरन्त आँखें खोल दीं। उसने मोहन का सिर गोद में रखा, थपथपाया। इससे मोहन को नींद आ गई। कुछ दिन बाद मोहन स्वस्थ हो गया। जब वह वृद्धा माँ वापस लौटने लगी तो सेठजी ने उससे मोहन के पास ही रुक जाने की याचना की, लेकिन वह नहीं मानी तथा जब सेठजी ने हाँडी के रुपये लौटाना चाहा तो वृद्धा ने कहा कि यह तो मैंने मोहन के लिए जमा किये थे। उसी को दे देना।

यहाँ वृद्धा माँ का ममत्व सेठ बनारसीदास के धन से अधिक गरिमावान सिद्ध हुआ। इस तरह सेठजी याचक थे और वृद्धा माँ दाता सिद्ध हुई।

(ङ) सेठजी और वृद्धा के चरित्र में से मुझे वृद्धा का चरित्र अच्छा और सराहनीय लगा। वृद्धा के चरित्र की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) वात्सल्यपूर्ण माँ की ममता-वृद्धा में बच्चे के प्रति प्रेम और उसकी ममता भरी हुई है। उसका खुद का बच्चा न होने के उपरांत भी वह उससे दूर नहीं रहना चाहती।

(2) कर्तव्यपरायणता-वृद्धा बच्चे की हर तरह से परवरिश करती है। विपरीत परिस्थिति में भी अपने ध्येय में लीन होकर उत्तरदायित्व को निभाती है। अंततः अपनी गाढ़ी कमाई को भी वह उसे ही सौंप देती है।

(3) त्याग और उदारता की प्रतिमा-वृद्धा त्याग की साक्षात् मूर्ति है। इकट्ठे किये गये हाँड़ी के धन को सेठ को ही सौंपकर धन्य होती है। सेठजी के बच्चे का पालन-पोषण अपने-तेरे की भावना से ऊपर उठकर करती है।

भाषा-अध्ययन

1. (i) वृद्धा दर्शन करने वालों को पुकारती कहती-"ये फूल चढ़ावा तो लेते जाओ।"

(ii) वृद्धा ने हाँडी सेठजी को सरकाते हुए कहा-"सेठजी, इसे जमा कर लें। मैं इसे कहाँ रखती फिरूँगी।"

(iii) सेठजी ने मुनीम से कहा-"इसे बहीखाते में इसके नाम में जमा कर लो।"

(iv) वृद्धा ने विनम्र भाव से कहा-"मेरा बच्चा बहुत बीमार है। मेरी जमा हाँडी से मुझे कुछ रुपये मिल जाएँ तो मैं डॉक्टर को दिखाकर उसका इलाज करा लूँ।"

(v) वृद्धा ने कहा-"हाँ बेटा तुम्हें छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ?"

2. **टस-से-मस न होना**—एक स्थान से न हटना।
वाक्य-प्रयोग—धरने के लिए बैठे किसान, धरना स्थल से टस से मस नहीं हुए। .

हाथ-पाँव फूल जाना—घबरा जाना।
वाक्य-प्रयोग—बच्चे के बीमार हो जाने पर, माता-पिता के हाथ-पाँव फूल गये।

चंगुल में दबाना—कब्जे में कर लेना।
वाक्य-प्रयोग—भेड़िए ने बकरी को पूरी तरह चंगुल में दबा रखा था।

ताँता बाँधना—लगातार बढ़ते जाना।
वाक्य-प्रयोग—मिठाई की महक पाकर चींटियाँ ताँता बाँधकर आगे-ही-आगे बढ़ने लगी।

जान में जान आना—चैन पड़ना।
वाक्य-प्रयोग—कुत्ता जब शिकारी कुत्तों से जान

बचाकर अपने इलाके में पहुँच गया तब उसकी जान में जान आई।

3. संज्ञा तथा क्रिया रूप में वाक्य प्रयोग—

(i) मेले में याचक हाथ फैलाए खड़े हुए थे।

(ii) याचक बार-बार लोगों से याचना करते हैं।

(iii) दाता के लिए तो सभी याचक समान हैं।

(iv) सच्चा दाता वही है जो दान देना जानता है।

4. **इया** ⇒ दुख + इया = दुखिया। सुख + इया = सुखिया। बन + इया = बनिया। लख + इया = लखिया। लिख + इया = लिखिया। धन + इया = धनिया।

वाला ⇒ दूध + वाला = दूधवाला, फल + वाला = फलवाला, पान + वाला = पानवाला, दुकान + वाला = दुकानवाला, घर + वाला-घरवाला।

5. **अ** ⇒ अ + शुभ = अशुभ। अ + शुद्ध-अशुद्ध। अ + पवित्र = अपवित्र। अ + पावन = अपावन। अ + चल-अचल।

वि ⇒ वि + कार = विकार। वि + नाश = विनाश। वि + लीन = विलीन। वि + लाप = विलाप। वि + लोप = विलोप।

6. **(अ)** उपयुक्त शीर्षक-'सिद्धार्थ और देवदत्त'।

(आ) घायल हंस को सिद्धार्थ ने उठा लिया था।

(इ) देवदत्त हंस को इसलिए माँग रहा था क्योंकि उसने हंस को तीर से घायल कर दिया था। उसका कहना था कि घायल किये जाने से हंस पर उसका अधिकार है।

(ई) राजा ने यह कहते हुए हंस सिद्धार्थ को सौंप दिया कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

(उ) राजा — नृप, भूप।
दिन — दिवस, वासर।
तीर — बाण, सायक।
प्यार — प्रेम, स्नेह।

13 न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. दहलती — डर से काँपती।
विसर्जन — त्याग करके, छोड़ करके।
संवत्सर — वर्ष, सम्वत्।
कर — हाथ।
लहू — खून।
नारीत्व — स्त्री की शक्ति, नारीपन।
लोलुप — लालची।
तेग — बड़ी तलवार।
सिहरती — रोमांचित।
रण — युद्ध।
मुक्ति — आजादी।
हुंकार — गर्जना।
पुरुषत्व — पुरुष की शक्ति।
चरणाघात — पैरों की चोट।
क्षार — राख।
रण बाँकुरी — युद्ध करने में कुशल।

2. **(क)** भारतीय राजा पुरु की वीरता को सुनकर सिकन्दर की छाती दहलती थी।

(ख) नव संवत्सर महाराज विक्रमादित्य ने प्रारम्भ किया था।

(ग) शिवाजी ने मुगल शासक औरंगजेब के विरुद्ध तलवार उठाई थी।

(घ) विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले दो महापुरुष स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी थे।

(ङ) सिकन्दर यूनान के मकदूनियाँ का रहने वाला एक लुटेरा शासक था।

3. (क) 'तलवार सोई है' से यह आशय है कि देश के वीर सैनिकों ने अपनी तलवारें रख दी हैं। हिन्दुस्तानी सैनिक अपनी आन, बान और शान की रक्षा के लिए इसे किसी समय उठाये रहते थे। ऐसा नहीं है कि यह तलवार हमेशा सोती रहेगी। भारत के वीर सपूतों की तलवार ने सदा ही शत्रु आक्रमणकर्ताओं का मुकाबला किया है और उन्हें भयभीत करके देश की सीमाओं से बाहर खदेड़ दिया है। इस प्रकार उन भारतीय वीरों की तलवारें सदा सोने वाली नहीं हैं।

(ख) हर्षवर्द्धन की राजधानी कन्नौज थी। वे हिन्दुस्तान के महान राजा हुए। उन्होंने हिन्दुस्तान की सीमाओं को सुरक्षित किया। विदेशी आक्रमणकर्ताओं-हूण, शक आदि आक्रान्ताओं को वहाँ से खदेड़ दिया। प्रजा पर विश्वास जमाया तथा देश के अन्दर शिक्षा, उद्योगों और कृषि को उन्नत बनाया। इस प्रकार वे महान्

कार्यों के लिए भातीय इतिहास में सदैव प्रसिद्ध रहेंगे।

(ग) हम दूसरे देश की मान-मर्यादा पर आक्रमण करने वाले नहीं रहे हैं, परन्तु यदि किसी लालचभरी दृष्टि वाले देश ने हमारी आजादी को ललकारा अथवा हमारे राष्ट्र की सीमाओं को तोड़ा अथवा अपनी कुदृष्टि से देश को आघात पहुँचाया तो हमारे रणबाँकुरे वीर सैनिक हुँकार भर उठेंगे। उस आक्रमणकारी शत्रु को सब प्रकार से नष्ट करके खदेड़ देंगे, देश के सम्मान की रक्षा के लिए युद्ध करेंगे।

(घ) दिल्ली के सम्राट अलाउद्दीन खिलजी ने एक विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर हमला किया। उस समय युद्ध में वीर भारतीय रणबाँकुरों ने देश की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। उनके इस महान् बलिदान की खबर पाकर राजपूत स्त्रियों ने अपने सम्मान और सतीत्व की रक्षा के लिए रानी पद्मिनी के साथ सोलह हजार वीरांगनाओं ने जलती हुई आग में सामूहिक रूप से कूदकर स्वयं को जला दिया। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है। उन राजपूत वीर क्षत्राणियों का यह महाबलिदान जौहर के नाम से जाना जाता है।

(ङ) इस कविता से हमें यह सन्देश मिलता है कि भारतीय सैनिक देश की सीमाओं के सम्मान की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहते हैं। हर्षवर्द्धन का त्याग और वीरता, विक्रमादित्य का शिक्षा-प्रेम और भारतीय संस्कृति के विकास की स्मृति हमें सन्देश देती है कि हमें सदैव ही अपनी सांस्कृतिक विरासत को सम्पन्न बनाकर उसकी रक्षा करनी है। देश के ऊपर विदेशी आक्रान्ताओं से अन्तिम श्वास तक लड़ते हुए अपनी आजादी की रक्षा करनी चाहिए। देश की आन, बान और शान की रक्षा के लिए भारतीय पुरुषों ने ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी अपने कदम कभी पीछे नहीं रखे।

4. (क) सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक भाषा भारती-8 में संकलित पाठ 'न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है' से अवतरित है। इसके कवि रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल' जी हैं।

भावार्थ—कवि कहता है कि हम नागरिकों ने अपने देश की सीमा को विस्तृत करना कभी नहीं चाहा है। साथ ही, हम भारतवासियों ने किसी अन्य देश की धन-सम्पत्ति पर भी हक जमाने की इच्छा नहीं की है। किन्तु यह बात कहने से हम भारतीय कभी नहीं चूके और न ही चूकेंगे कि हम खून दे सकते हैं, लेकिन अपने प्रिय देश भारत की भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं देंगे। यदि किसी लालच भरी दृष्टि वाले देश ने हम पर आक्रमण करने की अथवा हमारे देश की आजादी को कुचलने की कोशिश की तो तत्काल ही विनाश की वह आग फूट पड़ेगी जो राख के अन्दर छिपी है अर्थात् हम समय आने पर अपनी वीरता का परिचय देते हैं।

(ख) सन्दर्भ—पूर्ववत्।

भावार्थ—यह हिन्दुस्तान वह देश है जहाँ आज तक बीते हुए वर्षों से इसकी प्रशंसा के गीत गाये जाते रहे हैं। हिन्दुस्तान के नाम पर ही अर्थात् हिन्दुस्तान के गौरव के लिए ही मेवाड़ के राणा प्रताप ने अपनी अन्तिम श्वास तक (मृत्यु पर्यन्त) भीषण युद्ध किया था तथा चित्तौड़ ने भी हिन्दुस्तान के नाम पर जौहर की परम्परा चलाई थी। अरे शत्रुओ ! तुम्हें भी यह नहीं समझ लेना चाहिए कि भारतवर्ष के वीरों की धमनियों के अन्दर बहने वाली रक्त (लहू) की धारा सो गई है।

5. (अ) भारतीय योद्धाओं की तलवार के कठोर प्रहारों के विषय में सुनकर शत्रुओं की सेना भय से काँपते हुए तितर-बितर हो जाती थी। हिन्दुस्तानी वीर रण-बांकुरों की तेज तलवार की चोटों से आकाश की छाती आज भी नीली पड़ी हुई है। किसी को भी यह न समझ लेना चाहिए कि युद्ध में हिन्दुस्तानी वीर सैनिकों की हुँकार (गर्जना) सो चुकी है।

(ब) हम हिन्दुस्तानियों ने ही सदैव संसार को शान्ति का सन्देश दिया है। इसका यह अर्थ नहीं लगा लेना चाहिए कि हम अपमान को सह लेंगे। जब धरती पर पैरों के नीचे दबी धूल भी पैरों की ठोकर खाने पर आकाश में उमड़कर चारों ओर छा जाती है तो हम महापुरुषों की वीर संतानें अपमानित होकर कैसे चुप बैठ सकती हैं अर्थात् हमारे देश का कण-कण पौरुष से भरा पड़ा है।

(इ) भारत देश ने कभी भी अपनी सीमा को विस्तृत करना नहीं चाहा है। साथ ही, हमने किसी अन्य देश की धन-सम्पत्ति पर भी अपना कब्जा जमाने की इच्छा नहीं रखी है, परन्तु हम

अपने प्रिय देश की जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं देंगे।

(ई) कवि कहता है कि तलवार से युद्ध करने में चतुर योद्धाओं की कहानी सुनकर सिकन्दर की छाती भी डर से काँप उठती थी। भारतीय वीरों की तलवार से किए जाने वाले युद्ध की भयंकरता के विषय में सुनते ही बाबर के हाथों से उसकी तलवार छूटकर गिर पड़ती थी। हिन्दुस्तानी वीर रण-बाँकुरों की तेज तलवार की चोटों से आकाश की छाती भी नीली पड़ी हुई है। किसी को भी यह न समझ लेना चाहिए कि युद्ध में हिन्दुस्तानी वीर सैनिकों की हुंकार सो चुकी है।

भाषा-अध्ययन

1. **आगत शब्द**—फौजें, लहू, इंसान, लाचार, मगर।
हिन्दी शब्द—मनुष्य, असहाय, यद्यपि, सेनाएँ, रुधिर।

2. आकाश — नभ, व्योम।
रण — संग्राम, युद्ध।
लहू — रुधिर, रक्त।

3.
- अहिंसा का जवाब हिंसा नहीं हो सकता।
- राहुल ने पूरी कविता के अर्थ का अनर्थ कर दिया।
- शान्ति की स्थापना अशान्ति के बाद होती रही है।
- जलती आग को पानी बुझा देता है।

4. (i) सती + त्व = सतीत्व
(ii) मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व
(iii) देव + त्व = देवत्व।

5. (i) कभी छाती सिकन्दर की, तेग बाबर की।
(ii) सिहरती थीं, उभरती थीं।
(iii) हर्ष और विक्रम, संवत्सरों का क्रम।
(iv) शिवाजी ने, राणा प्रतापी ने।
(v) हमारे देश ने विस्तार चाहा है, अधिकार चाहा है।
(vi) न चूके हैं, न चूकेंगे, माटी नहीं देंगे।

6. "न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है", प्रस्तुत कविता वीर रस से युक्त है। वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' होता है।

14 नव संवत्सर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. नव संवत्सर — एक वर्ष की अवधि का समय।
मत्स्य — मछली।
उत्सव — पर्व, त्योहार।
कार्तिकादि — कार्तिक माह से प्रारम्भ होने वाला।
अमान्त — अमावस्या को समाप्त होने वाला पक्ष।
श्रृंगार — सजावट, सजाना।
जयन्ती — जन्मदिन।
पीर — संत, महात्मा।
सृष्टि — रचना, बनाना।
वध — मार देना, नष्ट कर देना।
चैत्रादि — चैत्र माह से शुरू होने वाला।
पूर्णिमान्त — पूर्णमासी को समाप्त होने वाला पक्ष।
ऋतु — मौसम।
सम्वर्द्धन — विकास, वृद्धि, बढ़ोत्तरी।
आततायी — अत्याचारी।

2. **(क)** नव संवत्सर से तात्पर्य है-नये वर्ष का प्रारम्भ। यह नव संवत्सर चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होता है।

(ख) गुड़ी का अर्थ है 'ध्वज या झण्डी' और पड़वा का अर्थ है 'प्रतिपदा'। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा कहा जाता है।

(ग) उज्जयिनी के महान् सम्राट् विक्रमादित्य ने विक्रम संवत् आरम्भ किया। विक्रम संवत् ईसा के ईसवी सन् से 57 वर्ष पहले शुरू होता है।

(घ) बसन्त ऋतु का आगमन चैत्र माह में होता है।

(ङ) दक्षिण भारत में विक्रम संवत् का प्रारम्भ कार्तिक मास से होता है।

3. **(क)** झूलेलाल।
(ख) अधिक।
(ग) चैत्र, कार्तिक।

4. **(क)** संवत्सर का उपयोग समय की गणना के लिए एक वर्ष की अवधि के अर्थ में किया जाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद आदि प्राचीन ग्रन्थों

में भी संवत्सर का एक काल-चक्र के रूप में उल्लेख है। जिस प्रकार हमारे यहाँ दिनों और महीनों के नाम दिए गए हैं, उसी प्रकार संवत्सरों का भी नामकरण किया गया है। ये साठ वर्ष बाद पुनः एक चक्र के रूप में आते रहते हैं। विक्रम संवत 2063 का नाम विकारी नामक संवत्सर है। इसके पहले के दो संवत्सरों के नाम 'हेमलम्ब नाम' और 'विलम्ब नाम संवत्सर थे।

(ख) भगवान झूलेलाल साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता के प्रतीक हैं। उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए समानता के आधार पर स्थापित धर्म की सराहना की और धर्म के सच्चे स्वरूप का विवेचन कर लोगों को सही आचरण करने की सलाह दी। उन्होंने तत्कालीन मुस्लिम शासकों को कट्टरपंथी रुख न अपनाने हेतु निवेदन किया। उन्होंने बताया कि सत्य एक है, ईश्वर एक है, अल्लाह एक है किन्तु नाम व रूप अनेक हैं। भगवान झूलेलाल ने सभी लोगों को विनम्रता और अपने कर्त्तव्य धर्म का पालन करने का उपदेश दिया। ऐसा माना जाता है कि भगवान झूलेलाल की पूजा-अर्चना करने से मन की अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

(ग) धरती सूर्य की परिक्रमा 365¼ दिन में पूरा करती है। यह अवधि एक नक्षत्र सौरवर्ष कहलाती है जबकि चन्द्रवर्ष लगभग 354 दिन का होता है। इसे 360 तिथियों में बाँटते हैं। सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष में सामंजस्य बनाने के लिए प्रत्येक 32 या 33 चन्द्रमासों के बाद एक अतिरिक्त चन्द्रमास जोड़ दिया जाता है। इस अतिरिक्त मास को अधिक मास या मलमास या लौंद का महीना कहते हैं। जिस वर्ष लौंद का महीना होता है, उस वर्ष चन्द्र वर्ष 13 महीने का होता है।

(घ) चन्द्रवर्ष में लगभग 354 दिन होते हैं। इसे 360 तिथियों में बाँटते हैं। सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष में सामंजस्य बनाने के लिए प्रत्येक 32 या 33 चन्द्रमासों के बाद एक अतिरिक्त चन्द्रमास जोड़ दिया जाता है। इस सौर वर्ष के ही कारण ऋतुओं में परिवर्तन होता है। सौरवर्ष में बारह महीने होते हैं जबकि चन्द्रवर्ष में तेरह महीने होते हैं।

(ङ) विक्रम संवत् के अनुसार वर्ष के महीनों के नाम निम्न प्रकार हैं—चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (क्वार), कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

(च) विक्रम संवत् की प्रथम तिथि को गुड़ी पड़वा के नाम से जाना जाता है। इस दिन से भारतीय नववर्ष या संवत्सर शुरू होता है। इसे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भी कहा जाता है। कहते हैं प्रजापति ब्रह्मा ने इसी तिथि को सृष्टि का सृजन किया। भगवान विष्णु ने भी इसी तिथि को मत्स्यावतार धारण किया था। साथ ही यह भी कहा जाता है कि सतयुग का भी प्रारम्भ इसी तिथि को हुआ था। इसी प्रतिपदा के दिन भगवान श्री रामचन्द्रजी ने किष्किन्धा के राजा बाली का वध कर स्वेच्छाचारी राज्य का अन्त किया था। इस प्रकार इस तिथि से अनेक प्रसंग जुड़े हुए हैं।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

- **चैत्र**—भारतीय महीनों का प्रारम्भ चैत्र मास से होता है।
- **पौराणिक**—भारतवर्ष में अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं।
- **किष्किंधा**—किष्किंधा में बाली का शासन था।
- **ऋग्वेद**—ऋग्वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।
- **अथर्ववेद**—अथर्ववेद की रचना अंगिरा ऋषि ने की थी।
- **पूर्णिमा**—पूर्णिमा के दिन चाँद अपने पूरे आकार में होता है।
- **विक्रमादित्य**—विक्रमादित्य उज्जैन के शासक थे।
- **स्वेच्छाचारी**—लंका का राजा रावण स्वेच्छाचारी शासन चलाता था।

2. प्रसंग + इक = प्रासंगिक
समाज + इक = सामाजिक
परिवार + इक = पारिवारिक
नीति + इक = नैतिक
साहित्य + इक = साहित्यिक
मूल + इक = मौलिक।

3.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
स्वेच्छाचारी	स्व + इच्छा + आचारी	स्वर संधि
विक्रमादित्य	विक्रम + आदित्य	स्वर संधि
सूर्योदय	सूर्य + उदय	स्वर संधि

पुस्तकालय	पुस्तक + आलय	स्वर संधि
नरेन्द्र	नर + इन्द्र	स्वर संधि
नीरोग	नि: + रोग	विसर्ग संधि
निष्कपट	नि: + कपट	विसर्ग संधि
प्रात:काल	प्रात: + काल	विसर्ग संधि

4.

शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
पर्व	त्योहार	दीपावली पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।
गणना	गिनती	भारत की गणना महान देशों में की जाती है।
मलमास	लौंद का महीना	मलमास वाले साल के महीने में एक माह बढ़ जाता है।
उपलक्ष्य	सन्दर्भ	दशहरा पर्व अधर्म पर धर्म की विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
प्रस्थान	जाना	शाम होते-होते सारे पक्षी प्रस्थान कर गए।
संवर्धन	विकास	लगातार पढ़ते रहने पर ज्ञान का संवर्धन होता है।

5. अखिल, आगमन, उपयोग, और, ऋग्वेद, कहा, ग्रन्थों, चैत्र, तेरह, दक्षिण, नव, पता, बाद, माह, रोचक, विक्रम, शेखर, संवत्।

6.

विशेषण	विशेष्य
(क) नव, कितने	वर्ष, दिन
(ख) प्राचीन, एक	ग्रंथों, संवत्सर, काल चक्र
(ग) प्रत्येक, दो	माह, पक्ष
(घ) यह, बड़ी, रोचक	बात

विविध प्रश्नावली-2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपकार को मानने वाला – कृतज्ञ
कम खाने वाला –मिताहारी
जो ईश्वर में विश्वास करता है – आस्तिक
जो सब कुछ जानता हो – सर्वज्ञ
जो अनुकरण करने योग्य हो – अनुकरणीय

2. (क) ज्योतिष (ख) सूर्य
(ग) भृगु (घ) कोकिला
(ङ) कुसुमपुर

3. (क) – (2) सत्य + आग्रह।
(ख) – (1) युवा + अवस्था।
(ग) – (3) घबरा जाना

4. शंख से नाद – शंखनाद
गाँव के वासी – गाँववासी
राजा का दण्ड – राजदण्ड
हर एक वर्ष – प्रतिवर्ष
शौर्य के लिए चक्र – शौर्यचक्र
सेना का पति – सेनापति
नीला कमल – नीलकमल।

5. **अनुस्वार (ं) शब्द–** पंचम, दंड, मंगल, बंधन, हंस, संबंध।
अनुनासिक (ँ) शब्द– गाँव, काँच, हँस, बाँधना।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पाटलिपुत्र नगर नंद, मौर्य और गुप्त सम्राटों की राजधानी रहा है।

2. ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत की सबसे बड़ी देन थी—शून्य सहित केवल दस अंक संकेतों से भी संख्याओं को व्यक्त करना था। इस दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति की खोज आर्यभट द्वारा की गई थी।

3. राजा अभयसिंह ने खेजड़ली ग्राम जाकर अपने सैनिकों के दुष्कृत्य के लिए क्षमा माँगी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक ने अपनी शिक्षा और अपना शारीरिक विकास भी नर्मदा के ही किनारे प्राप्त किया। नर्मदा के किनारे ऊँचे संगमरमर के बने हुए हैं। यहाँ का वातावरण और वायुमण्डल खुला है। इसके आसपास के बीहड़, उसके झरने और उनकी घर्षण की ध्वनि बहुत सुहावनी लगती है। नर्मदा संघर्षमयी है। उसका संघर्ष लेखक को भी संघर्षशील बनने की प्रेरणा देता है।

2. लेखक कहता है कि हे विधाता! तू इस सतपुड़ा के ऊँचे-ऊँचे गौरवशाली शिखरों को एक-सा बनाकर दिखाओ तो। ये धवल शिखर इतने ऊँचे हैं कि उनकी ऊँचाई में और श्वेतता में आसमान का नीलापन मालूम ही नहीं पड़ता, वह कहीं खो सा गया है। संगमरमरी श्वेत शिखरों का क्रम अटल है। उन्हें विधाता भी नीचे नहीं झुका सकता है।

3. बिरसा मुंडा को चाईबासा के लूथरन मिशन स्कूल में पढ़ते समय दासता का अनुभव हुआ। बिरसा ने शोषण किए जाते अपनी समाज के लोगों की व्यथा को देखा। वे अंग्रेजों के व्यवहार के विरुद्ध टीका-टिप्पणी करने लगे। इन पर उन्हें विद्यालय से निकालने की घटना ने उनके जीवन की दिशा बदल दी।
4. बिरसा मुंडा के आन्दोलन के समय महान् सेनानियों में- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, ताँत्या टोपे, नाना साहब, कुँवर सिंह आदि उस समय की महान हस्तियों के नामों की चर्चा की गई है, जिन्होंने अपने देश की आजादी के लिए प्राणों को दाँव पर लगा दिया और इतिहास में सदा-सदा के लिए अमर हो गए।
5. अर्जुन अपने लक्ष्य में सफल उस समय हुआ, जब उसने तन्मय होकर अपना ध्यान लक्ष्य पर ही केन्द्रित किया। अत: सफलता प्राप्त करने के लिए अपने लक्ष्य को ही जीवन का उद्देश्य बनाने वाला व्यक्ति सफलता अवश्य हासिल करता है।
6. वृद्धा अपने बीमार बच्चे को किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाकर उसका इलाज कराना चाहती थी। उसने सेठ के पास अपनी हाँड़ी पहले से जमा कर रखी थी। अत: वह सेठजी के पास अपनी अमानत वापस माँगने गई थी।
7. वाक्य रचना की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

   (i) वाक्य में निरर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

   (ii) वाक्य में शब्दों एक विशेष क्रम होना चाहिए।

   (iii) वाक्य जब बोला व लिखा जाये तो तारतम्यता होनी चाहिए।

   (iv) व्याकरण की दृष्टि से वचन, लिंग, कारक होना चाहिए और क्रिया आदि का मेल होना चाहिए।

   (v) वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में अर्थ प्रकट करने की योग्यता होनी चाहिए।

   (vi) वाक्य में एक पद सुनते ही, उसके विषय में जानने की इच्छा होनी चाहिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. **भावार्थ**—वर्षा ऋतु में पीपल के चंचल पत्ते ताली दे-देकर खुशी से पागल होकर नाच रहे हैं अर्थात् जब वर्षा ऋतु आती है तब मानो ऐसा प्रतीत होता है कि पीपल के पत्तों में पड़ती बूँदें छोटे बच्चों की तरह ताली दे-देकर नाचने की सी ध्वनि उत्पन्न करती हैं।
2. **भावार्थ**—उक्त पंक्ति के माध्यम से कवि कहता है कि मेरा मन जल की धार को पकड़कर कल्पनाओं के झूले में झूलने लगता है अर्थात् जब वर्षा ऋतु में झमाझम बारिश होती है तो लगातार वर्षा की आती बूँदें ऐसी मालूम पड़ती हैं मानो प्रकृति ने झूले की रस्सियाँ डाल दी हों, जिस पर कवि झूलकर अपनी खुशी व्यक्त करना चाहता है।
3. सावन मन भावन इसलिए लगने लगता है कि सावन के महीने में होने वाली वर्षा सभी ओर के वातावरण को मनभावन बना देती है। सर्वत्र हरियाली छा जाती है। हवा शीतल होकर बहती है। पर्यावरणीय सुन्दरता मनुष्य को कल्पनाशील बना देती है। उनके जागरण के साथ ही मनुष्य क्रियाशील हो जाता है। मन में अच्छे-अच्छे विचार उठते हैं और चारों ओर सृष्टि का सृजन होने लगता है।
4. अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों से ऊबकर बिरसा मुंडा ने अंग्रेज शासकों के विरुद्ध आन्दोलन चलाने का संकल्प लिया। उन्होंने गाँव-गाँव जाकर सभाएँ कीं। देश की आजादी के लिए लड़ने हेतु मुंडा व अन्य जन-जातियाँ भाले और तीर-कमान लेकर चारकाड़ गाँव में एकत्र हुईं और अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करने का बिगुल फूँक दिया। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें दो वर्ष की सजा हुई। सजा काटने के बाद मुंडा समाज ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई तेज कर दी। बिरसा को देशद्रोहियों ने फिर पकड़वा दिया। बीमार हो जाने से सुनवाई के दिन खून की उल्टी हो जाने पर उनकी मृत्यु हो गई। इस तरह बिरसा का सपना अधूरा रह गया।
5. "प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए" पाठ का मुख्य सन्देश पर्यावरण की रक्षा करना है। आज वृक्षों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। इसके कारण समूचे विश्व में पर्यावरण की रक्षा की चिन्ता की जा रही है। वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई पर रोक लगाई जा रही है तथा नये वृक्ष

उगाने और उनको रोपने तथा उनकी रक्षा किए जाने पर जोर दिया जा रहा है। अत: वातावरण में प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी ही होगी और नये पेड़ लगाने ही होंगे।

6. 'याचक और दाता' कहानी में सही मायने में देखा जाए तो याचक सेठ बनारसी दास हैं। कहानी में एक वृद्धा एक खोए हुए बच्चे का पालन-पोषण करती है। यह बच्चा, वास्तव में उसका नहीं है। बच्चे के पढ़ने-लिखने और उसका पूर्ण विकास करने के उद्देश्य से वह वृद्धा फूल बेचने के काम से जो भी धन उसे मिलता है, उसको गाँव के सेठ बनारसीदास के पास जमा कर देती है। सेठजी के पास जमा रहने पर वह धन सुरक्षित बना रहेगा लेकिन सेठ बनारसीदास आवश्यकता की घड़ी में धन लौटाने से मुकर जाता है। किन्तु जब उसे यह पता चलता है कि बच्चा उसी (सेठ) का है तब वह अपने बच्चे को प्राप्त कर लेता है। वृद्धा के धन को वह लौटाना चाहता है, परन्तु वृद्धा कहती है कि वह धन भी तो उसी बच्चे के लिए उसने जमा किया है और इस प्रकार बच्चा और धन दोनों को वृद्धा उस सेठ को सौंप देती है। इस प्रकार सेठजी स्वयं याचक हैं और वृद्धा दाता है।

7. मेरे शहर के समीप नर्मदा नदी बहती है। यह नदी अपने जल की शुद्धता और अपने आसपास के सौन्दर्य के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इस नदी के दोनों किनारे ऊँचे-ऊँचे हैं। वे पत्थरों से बने हैं। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता मुझे आकर्षित करती रहती है। हरे-भरे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष इसके आस-पास की सुन्दरता को चार चाँद लगा देते हैं। भक्तजन प्राय: शाम को इसके जल में डुबकी लगाते हैं तथा किनारे के मन्दिर और पूजा स्थल पर जाकर देव दर्शन का लाभ प्राप्त करते हैं। बरसात में तो वहाँ की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है।

8. **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' के पाठ 'लक्ष्य वेध' से अवतरित हैं। इसके लेखक श्री रामनाथ सुमन हैं।

प्रसंग—मन की इच्छाशक्ति को जब किसी एक कार्य में केन्द्रित करके प्रयुक्त किया जाता है तो यह स्थिति तन्मयता की होती है जो उन्नति के लिए महत्वपूर्ण होती है।

व्याख्या—लेखक कहना चाहता है यदि किसी कार्य की एक दिशा में अथवा किसी एक लक्ष्य को प्राप्त करने में एकाग्र भाव से अपनी इच्छा शक्ति जगाई जाती है तो यह स्थिति एकाग्रता की कही जाती है। आतिशी शीशे से गुजारी गईं सूर्य की किरणें उस कागज को जला देती हैं जिस पर वे केन्द्रित की गई हैं। सूर्य की किरणों का केन्द्रीकरण उन्हें ऊर्जावान बना देता है। इसी तरह जल में भी छिपी शक्ति को कुछ यन्त्रों रूपी साधनों में केन्द्रित किया जा सकता है और बड़े-बड़े कल-कारखाने चलाये जा सकते हैं। ठीक उसी प्रकार अपनी ऊर्जा को एक ही स्थान पर लगा दिया जाये तो सम्पूर्ण संसार को हिलाया जा सकता है।

9. (क) इन पंक्तियों में कुंडलिया छन्द है। कुंडलिया छन्द के छ: चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इस छन्द के प्रारम्भ में दोहा तथा अन्त में रोला छन्द होता है। इस छन्द की एक विशेषता यह भी है कि जो शब्द इसके आरम्भ में आता है, वही इसके अन्त में भी आता है।

(ख) इन पंक्तियों में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(ग) इस छन्द के रचयिता कवि गिरधर जी हैं।

(घ) कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहता है कि हमें विनयशील और मीठी वाणी बोलने वाला बनना चाहिए। इस तरह हम अपने जीवन को सहज और बेहतर बना सकते हैं।

10. यह कथन नर्मदा तट की संगमरमरी चट्टानों के बारे में कहा गया है।

आशय—चन्द्रमा के उदय होने पर संगमरमर की धवल चट्टानों में से चाँदी की सी चमक उठती हैं। सूर्य के उदित होने पर सूरज की किरणों का ताप उन्हें गर्मी प्रदान करता है जिससे वे तपने लगती हैं अर्थात् रात्रि और दिन के तापमान का उन चट्टानों पर प्रभाव पड़ता है।

11. ईसवी संवत् या सन्, हिजरी संवत्, शालिवाहन संवत्, कलिसंवत, बंगला संवत्, विक्रम संवत् आदि।

12. एक बार गुरु द्रोणाचार्य अन्तिम परीक्षा के लिए पाण्डवों और कौरवों को एक वन में ले गये। उन्होंने एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली के लक्ष्यवेध का निश्चय किया।

आचार्य ने सबको निशाना साधने को कहा और एक छोटा-सा प्रश्न किया 'तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?' किसी ने कहा- वृक्ष की टहनी, उस पर बैठी लाल रंग की चिड़िया दिखाई दे रही है। किसी ने कहा, 'मुझे चिड़िया की चोंच दिखाई दे रही है।' जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उससे वही प्रश्न दोहराया तो उन्होंने कहा-'गुरुदेव मुझे सिवाय चिड़िया की आँखों की पुतली के और कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।' आचार्य ने अर्जुन की पीठ थपथपायी और आशीर्वाद दिया।

13. गिरधर की कुण्डलियाँ मनमें यह विचार उत्पन्न करती हैं कि व्यक्ति को समाज में किस प्रकार जीवन जीना चाहिए। हमारे महान संतों ने अपनी वाणी द्वारा लोक व्यवहार की बातों के जिन ग्रंथों को रचा है, वे सदैव लोगों का मार्गदर्शन करेंगे। हम इनके विचारों को अपनाकर जीवन को सुगम बना सकते हैं।

14. विद्यार्थी अध्यापक की मदद से स्वयं करें।

15 महेश्वर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. संस्कृति – आचरणगत परम्परा, प्राचीन सभ्यता।
पुरातात्विक – पुरातत्व सम्बन्धी।
पुराविद् – प्राचीन इतिहास आदि विषयों की जानकारी रखने वाला।
उत्तरदायित्व – जिम्मेदारी।
सर्वतोन्मुखी – सभी तरह का।
पाषाण – पत्थर।
प्रागैतिहासिक – इतिहास लिखे जाने से भी पहले के इतिहास से सम्बन्धित
उत्खनन – खुदाई।
फलक – पटल, तख्ता।
अवशेष – शेष भाग, वह जो बचा रहे।
अलंकरण – सजावट।

2. **(क)** महेश्वर का प्राचीन नाम माहेश्वरी अथवा माहिष्मती है।

(ख) महेश्वर मध्य प्रदेश के इन्दौर जिले में स्थित है, जो इन्दौर से लगभग 105 किलोमीटर की दूर पर है।

(ग) महेश्वर की खुदाई में पुरातात्विक महत्त्व की अनेक वस्तुएँ और अवशेष प्राप्त हुए हैं।

(घ) हैहय साम्राज्य की स्थापना कार्तवीर्य सहस्रार्जुन ने की थी।

(ङ) नर्मदा के तट पर किला और शिव का मन्दिर महारानी अहल्याबाई ने बनवाया था।

3. **(क)** सहस्रार्जुन ने परशुराम जी के पिता ऋषि जमदग्नि का वध कर दिया तो इसका बदला लेने के लिए भगवान परशुराम ने सहस्रार्जुन का वध करने का संकल्प लिया। वे माहिष्मती पहुँच गए और भीषण युद्ध किया तथा सहस्रार्जुन का वध कर दिया।

(ख) इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने महेश्वर को प्रसिद्धि प्रदान की। उन्हें यह स्थान अत्यन्त ही प्रिय था। उन्होंने इस स्थान पर नर्मदा के तट पर एक किला और भगवान शिव का विशाल मन्दिर बनवाया। यहाँ स्थित पवित्र शिवलिंग महेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। महेश्वर धार्मिक, पौराणिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्पदा से सम्पन्न है। महारानी अहिल्याबाई ने मराठों के शासनकाल में यहाँ सुन्दर घाटों, मन्दिरों, धर्मशालाओं तथा भवनों का निर्माण कराया।

(ग) महारानी अहिल्याबाई को 'लोकमाता' के रूप में इसलिए याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने महेश्वर नगर का सम्पूर्ण विकास कराया और इसे प्रसिद्धि प्रदान करने के लिए महान् से महान् कार्य किए। नर्मदा के तटों पर सुन्दर घाटों और मन्दिरों का निर्माण कराया। यहाँ का वातावरण पवित्र है। यह प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा हुआ एवं मनोहारी है। महारानी ने यहाँ लोक कल्याण हेतु अनेक कार्य किए हैं।

(घ) नर्मदा घाटी में पाषाणकालीन सभ्यता के पत्थर के अनेक औजार मिले हैं। प्रागैतिहासिक काल के पुरा-अवशेषों से पता चलता है कि उस समय यहाँ के लोग घास-फूस के झोंपड़ों में या पेड़ों पर बने घरों में रहते थे। उस समय की पाई गई वस्तुओं में लाल और काले रंग के मिट्टी के बर्तन और घड़ों के टुकड़े प्रमुख हैं। उस समय यहाँ भवनों हेतु ईंटों का प्रयोग किया जाता था। उस समय मिट्टी के कलात्मक घड़े

बनाए जाते थे। सम्भवत: वे अपनी सुरक्षा की दृष्टि से पेड़ों पर या ऊँची जमीन पर अपने घर बनाते थे। यह भी सत्य है कि पाषाणकाल के लोग नदियों, तालाबों आदि के किनारे ही बसते रहे हैं, क्योंकि इन स्थानों पर उन्हें आवश्यकता की सारी वस्तुएँ आसानी से प्राप्त हो जाती थीं।

4. **(क)** पुरातात्विक
   (ख) महेश्वर
   (ग) रेशमी
   (घ) नर्मदा

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।
   वाक्य प्रयोग—
   - **आशीर्वाद**—देवदर्शन करके लोग आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।
   - **सहस्रार्जुन**—सहस्रार्जुन ने ऋषि जमदग्नि का वध कर आश्रम को तहस-नहस कर दिया था।
   - **संस्कृति**—भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में विख्यात है।
   - **ऋषि**—ऋषि परम्परा भारत में प्राचीनकाल से है।
   - **जमदग्नि**—जमदग्नि, भगवान परशुराम के पिता थे।
   - **दर्शनार्थी**—कृष्ण मन्दिर में दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती है।
   - **प्रज्ज्वलित**—दीपावली पर घर-घर में दीप प्रज्ज्वलित किए जाते हैं।
   - **पुरातात्विक**—अभी खजुहागढ़ में पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं।

2.

सामासिक शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
लोकमाता	लोक की माता	कर्मधारय
मधुर-ध्वनि	मधुर है जो ध्वनि	कर्मधारय
नर-नारी	नर और नारी	द्वन्द्व
विशाल मन्दिर	विशाल है जो मन्दिर	कर्मधारय
अखंडदीप	अखण्ड है जो दीप	कर्मधारय
महारानी	महान् है जो रानी	कर्मधारय

3.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अखण्ड	अ	खण्ड
विशेष	वि	शेष
प्रसिद्ध	प्र	सिद्ध
अनुशासन	अनु	शासन
विज्ञान	वि	ज्ञान

4.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
महेश्वर	महा + ईश्वर	स्वर संधि
मनोहर	मन: + हर	विसर्ग संधि
आशीर्वाद	आशी: + वाद	विसर्ग संधि
दर्शनार्थी	दर्शन + अर्थी	स्वर संधि

5.

उद्देश्य	विधेय
(क) इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने	सुन्दर घाटों, मन्दिरों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया था।
(ख) पाषाण कालीन सभ्यता के औजार	नर्मदा के घाटों की खुदाई में मिले हैं।
(ग) महेश्वर की	सिल्क साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

6.

वाक्यांश	शब्द
प्राचीन काल से सम्बन्धित	पुरातात्विक
धर्म से सम्बन्धित	धार्मिक
संस्कृति से सम्बन्धित	सांस्कृतिक
इतिहास से सम्बन्धित	ऐतिहासिक
पुराणों से सम्बन्धित	पौराणिक

7. विद्यार्थी स्वयं लिखें।

16 पथिक से

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. पथिक – राहगीर।
   वापी – बावड़ी।

जलकण – जल की बूँदें।
एकाकीपन – अकेलापन।
असमंजस – दुविधा।
हवन सामग्री – यज्ञ में आहुति देने की वस्तुएँ।
दूर्वादल – दूब घास के कोमल पत्ते।
निर्झर – झरने।
उन्मन – उदास।
कुमकुम थाल – रोली की थाली।
आहुति –यज्ञ में डालने की हवन सामग्री।

2. **(क)** काँटे शब्द का अर्थ बाधाओं से है। लक्ष्य का पथ अनेक कठिनाइयों से भरा होता है।
(ख) (अ)→(इ), (आ)→(ई), (इ)→(अ), (ई)→(आ)
(ग) 'माँ' शब्द के प्रयोग से यहाँ 'भारत माँ' की ओर संकेत किया गया है।

3. **(क)** जीवन रूपी मार्ग पर पथिक को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सफलताएँ ही प्राप्त करता जाएगा, विफलता उसके समक्ष आएँगी ही नहीं, ऐसा सोचना उसकी मूर्खता है। सफलता पाने के लिए अनेक विफलता भी आ सकती हैं। ऐसे समय में अपने भी पराये जैसा व्यवहार करते हैं। मन में आने वाली दुविधाएँ निराशा को जन्म देती हैं। मन खिन्न होता है। कविता में कवि ने तीन बाधाओं को दर्शाया है–
1. निराशा में डूबे हुए पथिक का अकेलापन।
2. उद्देश्य प्राप्ति में सफलता अथवा असफलता की दुविधा।
3. लक्ष्य मार्ग से विचलित करने वाले सम्भावित दृश्य।

(ख) जब मनुष्य अपने प्रयास करने पर सब प्रकार से विफल होने लगता है, तो उस स्थिति में हर एक आदमी पराया-सा लगता है और उसके सामने पूरी तरह से विरोधी बनकर खड़े हो जाते हैं। भारी निराशा और हताशा दोनों स्थितियाँ उसको कष्ट पहुँचाती हैं।

(ग) व्यक्ति को किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम के माध्यम से अपने लक्ष्य तक पहुँचना होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसके मार्ग पर काँटों रूपी रुकावटों के साथ कभी-कभी कोमल घास के दलों से युक्त सुखदायी मार्ग भी प्रतीत होता है। नदियाँ और तालाब तथा झरने भी उसे सम्मोहित करते हैं। उस सौन्दर्य की मृगतृष्णा उस पथिक को भ्रम में डाल देने वाली होती है। सौन्दर्य की मृगतृष्णा में आनन्द और जीवन की सफलता महसूस करना उसे भ्रमित कर सकता है। इसी भ्रम में फँसकर पथिक कर्तव्य पथ से विमुख हो जाता है।

(घ) कवि के अनुसार, जब मातृभूमि की आजादी के लिए अनेक देशभक्तों ने स्वयं का बलिदान फाँसी के तख्ते पर झूलकर दे दिया हो लेकिन आजादी के युद्ध में वीरों की संख्या कम पड़ रही होगी और मातृभूमि अपने राष्ट्रभक्तों की आहुति माँग रही हो। उस समय पथिक के सामने असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है कि वह मातृभूमि के लिए युद्ध में अपने प्राण न्योछावर करें अथवा युद्ध भूमि से भाग जाए।

(ङ) कवि ने इस कविता में विविध प्राकृतिक अंगों-उपांगों का चित्रण प्रस्तुत किया है, जो पथिक को कदम-कदम पर मिलते हैं। पथिक को कभी तो दूब-घास के कोमल दल, अपने निर्मल जल से भरकर इठलाती चलती नदियाँ व तालाब दिखते हैं। इनके अतिरिक्त सुन्दर पर्वत, वन-वाटिकाएँ तथा जल की बावड़ियाँ तथा सुन्दर-सुन्दर झरने जो अपनी कल-कल की मधुर ध्वनि से आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं, दिखाई पड़ते हैं। कर्तव्य पथ के पथिक को प्राकृतिक उपादानों की सुन्दरता मृगतृष्णा के विमोह में फँसा लेने वाली प्रतीत होती है।

भाषा-अध्ययन

1. (क) पाषाण
(ख) जम्बुक
(ग) तटिनी

2.

शब्द	**विलोम शब्द**
प्रथम	अन्तिम
सम्मुख	विमुख
विफलता	सफलता
माँग	पूर्ति
कठिन	सरल
अनुराग	विराग
प्रलय	सृष्टि
पुष्ट	जर्जर

3. सुन्दर-सुन्दर, पग-पग, सुन-सुन, विदा-विदा।
4. (i) लड़कपन (ii) बचपन
   (iii) अकेलापन (iv) बालपन
5. वन-वापी, कठिन-कर्म, सैनिक-पुलक।
6. (क) अनुप्रास अलंकार
   (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार।

17 वसीयतनामे का रहस्य

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. दूरदर्शी — दूर तक की सोचने वाला।
   न्यायप्रिय — न्याय चाहने वाला।
   निष्पक्ष — बिना भेदभाव के।
   वसीयत — जमीन-जायदाद सम्बन्धी लिखित आदेश।
   जटिल — कठिन।
   जायदाद — सम्पत्ति।
   विवाद — झगड़ा।
2. **(क)** सम्पत्ति के बँटवारे का लिखित आदेश वसीयतनामा कहलाता है।
   (ख) गाँव का वयोवृद्ध व्यक्ति अपनी बुद्धिमानी, दूरदर्शिता व न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था।
   (ग) वसीयतनामे में जायदाद को तीनों पुत्रों में बाँटने का संकेत था।
   (घ) बँटवारे का अन्तिम निर्णय राजा ने किया।
   (ङ) राजा के प्रथम दो महलों में जो दो लोग मिले, वे राजा के भाई-बहन थे।
   (च) पंचों को इस बात की शंका थी कि वृद्ध किसान के तीन-बेटे असली हैं तथा कोई एक बेटा उसका नहीं है।
   (छ) वसीयतनामे में दो बातें लिखी थीं। पहली— सम्पूर्ण जायदाद के तीन हिस्से कर उसे तीन भाइयों में बाँट दिया जाए, लेकिन यह नहीं लिखा था कि किस भाई को हिस्सा न दिया जाए। दूसरी—जो पंच इस बात का फैसला करे उसके साथ वृद्ध किसान की बेटी का विवाह कर दिया जाए।
3. **(क)** झगड़े का कारण भाइयों में सम्पत्ति बँटवारा था। पिता के वसीयतनामे पर जायदाद के तीन हिस्से थे और हिस्सेदार चार थे। तीन हिस्से को चार भाइयों में किस प्रकार विभाजित किया जाए? चार भाइयों में से यदि कोई एक भाई अपना हिस्सा छोड़ने को तैयार हो जाता तो न्याय हो जाता परन्तु कोई भी अपना हक छोड़ने के लिए तैयार नहीं था।
   (ख) गाँव वालों को वसीयत के बारे में जानकर आश्चर्य इसलिए हुआ क्योंकि वसीयतनामे में जायदाद का बँटवारा तीन हिस्सों में किया था, जबकि उस वृद्ध किसान के चार पुत्र थे। इस हिसाब से जायदाद का बँटवारा चार हिस्सों में बराबर ही होना चाहिए था। गाँववाले सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने इस तरह की वसीयत क्यों लिखी। अवश्य ही इसमें कोई रहस्य छुपा है। इसलिए ग्रामीणों ने विवाद को जटिल समझकर उन्हें गाँव में पंचायत बैठाने की सलाह दी।
   (ग) गाँव के वृद्ध व्यक्ति ने राजा से जो दो बातें पूछीं, वे निम्नवत् हैं—
   पहली बात यह कि जब हम महल के पास से गुजर रहे थे तो एक युवक मिला था। उस युवक से जब आपके बारे में पूछा तो उसने हमें बताया कि राजा को मरे हुए तीन साल हो गए हैं। इस बात का क्या राज है?
   दूसरी बात यह कि जब हम लोग दूसरे महल के पास से गुजर रहे थे तो वहाँ उन्हें एक रूपवती कन्या मिली। उसने उन्हें बताया कि आप अन्धे हो गए हैं। इस बात का राज भी बता दीजिए।
   (घ) राजा ने तीनों भाइयों को अलग-अलग ले जाकर खूब प्रलोभन दिया और हर एक को अपनी तलवार देकर कहा कि वह शेष तीनों की हत्या कर दे तो उसे सारा धन दे दिया जाएगा और उसके साथ अपनी बहन की शादी कर देगा। परन्तु इन तीनों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और अपने-अपने हिस्से की जायदाद छोड़ने के लिए तैयार हो गये।
   (ङ) राजा के प्रस्ताव से तीनों भाई सहमत नहीं थे। वे इस जमीन-जायदाद के लालच में अपने भाइयों की हत्या करना नहीं चाहते थे। वे अपने इस फैसले पर अडिग थे। वे सभी अपने हिस्से की जायदाद को अपने अन्य भाइयों के लिए छोड़ने को तैयार हो गए थे। उनके अन्दर त्याग की भावना थी और वे अपने भाइयों को आपस में फलता-फूलता देखना चाहते थे। उन्हें राजा का प्रस्ताव उचित नहीं लगा।
   (च) चौथे भाई को जब राजा द्वारा एकान्त कमरे में ले जाया गया और राजा ने उसे अपनी तलवार देते हुए सलाह दी कि वह अपने शेष तीन भाइयों

को उनकी तलवार से कत्ल कर दे। इस बात पर चौथा भाई अपने तीन भाइयों को कत्ल करने के लिए तैयार हो गया क्योंकि उसने सोच लिया था ऐसा अवसर बहुत ही शुभ है। वह शीघ्र ही धनवान हो जाएगा और पूरी जायदाद का मालिक बन जाएगा। इसके अतिरिक्त उसका विवाह भी महाराजा की सुन्दर बहन से हो जाएगा। ऐसे विचारों को सोचकर चौथा भाई राजा के प्रस्ताव से सहमत हो गया।

(छ) राजा ने चौथे भाई की गलत नीयत को समझकर उसे जेल में डाल दिया। जब अन्य लोगों ने राजा की यह बात सुनी तो वे सभी सोचने लगे कि छोटा भाई अपने पिता को इसी तरह कष्ट देता होगा। इसलिए ही पिता ने अपनी जायदाद के तीन हिस्से किए होंगे। तीनों भाइयों को अपने-अपने हिस्से की जायदाद प्राप्त हो गई और बड़े भाई ने राजा के साथ अपनी बहन की शादी कर दी। इस तरह महाराजा की चतुराई से समस्या का समाधान हो गया।

4. (3) तीन बेटे असली हैं और एक बेटा उसका नहीं है।

भाषा-अध्ययन

1. वसीयतनामे — सम्पत्ति का लिखित आदेश-पत्र।
हिस्सा — भाग।
हिस्सेदार — भागीदार।
हक — अधिकार।
राहगीर — पथिक।
शानदार — भव्य, तेज।
फैसला — न्याय।
मामला — विषय
गुजर — व्यतीत।
राज — रहस्य
होशियार — चतुर, सावधान

2.

दो लोगों ने आगे बढ़कर झगड़े का कारण पूछा।	कर्म कारक
राहगीर को भी आश्चर्य हुआ।	कर्म कारक
बुद्धिमानी से करता था।	करण कारक
चारों भाई पंचायत के लिए तैयार हो गए।	संप्रदान
अरे, यह तो बड़ी आसान बात है।	संबोधन

3. (क) साधारण वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
(ग) मिश्रित वाक्य (घ) मिश्रित वाक्य
(ङ) साधारण वाक्य (च) संयुक्त वाक्य।

4.

दूर-दूर	पुनरुक्त
तरह-तरह	पुनरुक्त
राम-राम	पुनरुक्त
सत्रह-अठारह	शब्द युग्म
युवक-युवती	शब्द युग्म
उन्नीस-बीस	शब्द युग्म
अपना-अपना	पुनरुक्त
एक-दो	शब्द युग्म

5.

वर्ग (क)	वर्ग (ख
दूसरा	महल
अद्‌वितीय	सुन्दरी
शान्त	स्वर
पूरा	मामला
रंगीन	सपने
रूपवती	कन्या

6. बहनें, भाइयों, युवकों, युवतियाँ, महलों, सपने, मामले, राहगीरों।

7. छात्र अध्यापक की मदद से स्वयं अभ्यास करें।

18 युद्ध-गीता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1.

निशाचर—राक्षस	कटक— सेना
पताका— ध्वजा	गज— हाथी
जलद— बादल	प्रेरे— प्रेरित
समर— युद्ध	बहु— बहुत
पयोधि— सागर	रेनु—धूल
घोर— भयानक	प्रलय— विनाश
नफीरि— एक बाद्य	पौरुष— पुरुषार्थ
दशानन— रावण	मर्दहु— मसल दो
हौं— मैं	कपिन्ह— वानरों को
कराल—भयंकर	सपच्छ— पंखयुक्त

बृंद— समूह
चतुरंगिनी— चार प्रकार की सेना

बरन— प्रकट वर्ण	मत्त— मतवाले
जूथ— समूह	मरुत— हवा
सूर— योद्धा	निकाया— समूह
छुभित— क्षुब्ध	कुधर— कंधा
वसुधा— पृथ्वी	निसान— झण्डा
रव— ध्वनि	घन— बादल
गाजहि— गरजते हैं	सहनाई— शहनाई

केहरिनाद— सिंहनाद
उच्चरहि— उच्चारण करते हैं

सुभट्टा—उत्तम वीर	ठट्टा— समूह
भूप— राजा	दुहाई— पुकार
मर्कट— बंदर	भूधर— पर्वत

नाना-बान— अनेक बाण
महाद्रुम— बड़े-बड़े पेड़
संक— संदेह
निज-निज— अपने-अपने

जान— समझ	अधीरा— व्याकुल
सनेह— प्रेम	स्यंदन— रथ
सौरज— शौर्य	दृढ़— मजबूत

परहित— दूसरों का भाग
घोरे—घोड़े

कृपाना— तलवार	त्रोन— तरकस
कवच— आवरण	रिपु— शत्रु

संसार रिपु—संसार का दुश्मन
पद कंज—चरण कमल

पुंज— समूह	आयुध— हथियार
मृगराज— सिंह	जोरी— जोड़ी
विरथ— व्यर्थ	वंदि— वंदना

पदत्राना—पैदल, बिना रक्षक कवच के

आना—आकर	धीरज— धैर्य
दम— जोर, ताकत	चाका— पहिया
रजु— रस्सी	परसु— फरसा
कोदण्डा— धनुष	अभेद— अभेद्य
जाके— जिसके	ताके— उसके
मिस— बहने से	अमन— शान्ति

2. **(क)** राक्षस सेना के चलने पर धरती व्याकुल होने लगी।

(ब) कवि ने दौड़ते वानर भालुओं की तुलना पंख धारण करके उड़ने वाले पर्वतों के समूह से की है।

(ग) श्रीराम के पराक्रम का मुख्य आधार शौर्य, धैर्य, सत्य-शील, साहस, यम-नियम, दम, दया, परोपकार आदि धर्म के तत्व हैं।

(घ) धर्मरथ के दो पहिए हैं— शौर्य और धैर्य।

3.

श्रीमदभगवद् गीता	—	महाभारत
धर्मरथ (युद्ध गीता)	—	रामचरितमानस
ऋचाएँ	—	वेद
दर्शन	—	उपनिषद्

4. **(क)** युद्धभूमि में विभीषण ने अधीर होकर श्रीराम से पूछा कि हे स्वामी आपके पास युद्ध करने के लिए रथ नहीं है, उधर आपका शत्रु रावण युद्ध की सभी सामग्री (साधन रथ आदि) से युक्त है। उस धीर और बलवान रावण पर आप किस तरह विजय प्राप्त कर सकेंगे?

(ख) श्रीराम ने विभीषण की शंका का समाधान करते हुए कहा कि जिस रथ में शौर्य और धैर्य रूपी पहिए, सत्य-शील की मजबूत ध्वजा होती है। विवेक का बल होता है। इन्द्रिय दमन और परोपकार के घोड़ों को क्षमा और कृपा की रस्सी से जोता गया होता है उस सद्‌गुणों के रथ पर सवार होकर बाहरी और आन्तरिक शत्रुओं से विजय अवश्य प्राप्त होती है।

(ग) आत्मशक्ति में धर्म के आधारभूत तत्व सम्मिलित हैं। इनमें शौर्य, धैर्य, सत्य-शील, साहस, यम-नियम, दम, दया, परोपकार आदि गुण सम्मिलित होते हैं। इसे ही सद्‌गुणों से युक्त धर्मरथ कहते हैं। बाह्य शक्ति में विविध प्रकार के भौतिक साधन आते हैं जिनमें रथ, कवच व अनेक प्रकार की युद्ध सामग्रियों से युक्त अति बलवान सैनिक होते हैं। बाह्यशक्ति सद्‌गुणों से रहित होती है।

(घ) श्रीराम के कथनानुसार धर्मरथ में जोते हुए चार घोड़े हैं— विवेक, दम, परहित तथा क्षमा। इनके द्वारा खींचा गया रथ सर्वत्र गतिमान रहता है। मनुष्य अपने विवेक, दम, परहित और क्षमा के बल से किसी भी आने वाले संकट पर विजय प्राप्त करता है।

(ङ) संसाररूपी शत्रु को धर्मरथ पर सवार होकर ही जीता जा सकता है। धर्मरथ में शौर्य और धैर्य के पहिए लगे होते हैं। सत्य और शील का मजबूत ध्वज फहरा रहा होता है। क्षमा, कृपा और समता की रस्सी से बल, विवेक, दम और परोपकार के चार घोड़े जुते रहते हैं। इस विशेष प्रकार के रथ पर सवार व्यक्ति संसाररूपी शत्रु

को जीतकर अपने वश में कर लेता है। इस प्रकार वह सभी जगह विजय प्राप्त करता है।

भाषा-अध्ययन

1. लोभ सभी पापों का कारण होता है।
राहुल और विनय समकक्ष ही हैं।
वीर शिवाजी ने अपने पराक्रम से ही देश की आजादी का दीपक बुझने नहीं दिया।
पाण्डवों ने धर्मनीति के पक्ष में युद्ध किया।
आत्मशक्ति शम और दम से बढ़ सकती है।
रावण की सेना वानर-सेना के लिए दुर्जय लग रही थी।
श्रीराम ने लोगों को मर्यादा का पाठ पढ़ाया।

2.

शब्द	**उपसर्ग**	+	**शब्द**
विशेष	वि	+	शेष
विरथ	वि	+	रथ
अधीर	अ	+	धीर
दुर्जय	दुः	+	जय

3.

उचित	अनुचित		
अपेक्षा	उपेक्षा	विजय	पराजय
लाभ	हानि	जीवन	मृत्यु
सुरक्षा	असुरक्षा	धर्म	अधर्म।

4. रण — नीति
युद्ध — कला
मार्ग — दर्शन
धर्म — रथ
दस — सिर

5.

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
धर्मनीति	धर्म की नीति	तत्पुरुस समास
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	अव्ययीभाव समास
आत्मशक्ति	आत्मा की भक्ति	तत्पुरुष समास
राम-रावण	राम और रावण	द्वन्द्व समास

6. चरित्र का अर्थ है— आचरण या चाल-चलन। यहाँ आचरण का अर्थ है— सद्गुणों का भण्डार। जिस व्यक्ति के व्यवहार में सत्य, न्याय, प्रेम, मानवता, करुणा, दया, अहिंसा, त्याग आदि गुण एकत्र हो जाते हैं, वह चरित्रवान कहलाता है। यहाँ चरित्र की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। किस बल पर पाण्डव कौरवों पर भारी पड़े? किस बल पर वनवासी राम ने लंकापति रावण को परास्त किया?

7. (अ) (क) तथा (ख) चौपाई छन्द हैं। चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।
(ब) अनुप्रास अलंकार के उदाहरण निम्नवत् हैं—
विविध भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना।।
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया।।
अति विचित्र वाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेनु जनु साजी।।
अमन अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।

8.

शब्द	**तत्सम**	**शब्द**	**तत्सम**
धीरज	धैर्य	ईस	ईश
सौरज	शौर्य	बुधि	बुद्धि
सील	शील	ताकत	शक्ति
छमा	क्षमा	जम	यम

9. **उपमा अलंकार—** अमन अचल मन त्रोन समाना
रूपक अलंकार— महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।
उत्प्रेक्षा अलंकार— प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे।

19 बहादुर बेटा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. हाहाकार — घबराहट की चिल्लाहट।
वालंटियर — अपनी ही इच्छा से सेवा के कार्य के लिए समर्पित।
फर्स्ट एड — प्राथमिक चिकित्सा, सहायता।
ध्यानस्थ — ध्यान करना।
रेडक्रॉस — मानवता की सेवा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन।
वैज — पहचान-पत्र।

2. (क) संदीप और कुलदीप दोनों बाढ़ में फँसे लोगों की सहायता में जुटे हुए थे इसलिए उन्हें देर हो गई।

(ख) नदियों में बाढ़ आ जाने से गाँव के गाँव तहस-नहस होकर बह जाते हैं। अगणित पशु-प्राणी मर जाते हैं। फसलें नष्ट हो जाती हैं। कई प्रकार के रोग फैल जाते हैं।

(ग) रेडक्रास के सदस्य बाढ़ में फँसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाते हैं। बाढ़-पीड़ित लोगों के लिए भोजन, कपड़े एवं दवाइयाँ आदि का प्रबन्ध करते हैं। वे अपनी जान जोखिम में डालकर पीड़ित लोगों की देखरेख तथा सहायता करते हैं।

(घ) जब संदीप बाढ़ में फँसे लोगों को नाव से सुरक्षित स्थान पर ले जा रहा था तभी संदीप की नाव एकदम उलट गई और पानी के बहाव का तेज रेला संदीप को बहा ले गया।

3. (क) संदीप और कुलदीप को सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के आदेश पर बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा के लिए अन्न, वस्त्र, दवाएँ आदि पहुँचाने का कार्य सौंपा गया था। साथ ही उनके पिता और चाचा ने आजादी की जंग में भाग लिया था। देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण बलिदान कर दिए थे। इस तरह उन्हें भी देश की सेवा करने, मानवता की रक्षा करने की सीख अपने अभिभावकों और बड़ों से मिली थी।

(ख) संदीप द्वारा किए गए बचाव कार्य को रेडक्रॉस की सदस्या ने बताया कि वे सभी बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने के लिए गए हुए थे। संदीप ने वहाँ सबसे बढ़-चढ़कर काम किया। अपने प्राणों की चिन्ता किए बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनके साहस को देखकर हम सब लोग दंग रह गए। बिना आराम किए ही लगातार उन्होंने लोगों को बाढ़ के पानी से सुरक्षित बचाया परन्तु अचानक ही उनकी नाव उलट गई। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की सहायता की।

(ग) बाढ़ पीड़ितों की विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं—उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने की। उनसे सम्बन्धित वस्तुओं को उनके पास पहुँचाने की। उन्हें भोजन, पानी व कपड़े आदि उपलब्ध कराने की। इसके अलावा उन्हें दवाइयों की भी जरूरत होती है क्योंकि बाढ़ आ जाने से पानी से फैलने वाले अनेक रोग हो जाते हैं। उन रोगों के इलाज की तुरन्त आवश्यकता होती है। इन बाढ़ पीड़ितों को रेडक्रॉस और वॉलन्टीयर्स सहायता पहुँचाते हैं। कुछ स्थानीय संस्थाएँ व देश की सेना और स्वयंसेवी संस्थाएँ भी इस कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। बाढ़पीड़ितों को अन्न, वस्त्र, औषधि आदि एकत्र करके उनका सहयोग किया जाता है।

(घ) हमें संकट के समय लोगों का सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। इस एकांकी में कुलदीप और संदीप नाम के दो भाई हैं। उनकी बहन मधुर और माँ भी उनके साथ रहती हैं। कुलदीप को विद्यालय में सूचना मिलती है कि बाढ़ से जन-धन की हानि हुई है। वह अपने साथियों के साथ उन बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए धन संग्रह करने चला जाता है। उधर संदीप नदी की बाढ़ में फँसे लोगों को बचाने के लिए बिना बताए ही चला जाता है। वह अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाता है। ऐसे में वह स्वयं भी डूबते-डूबते बचता है। इस प्रकार इस एकांकी से हमें निस्वार्थ सेवा भावना, अतुलनीय देशप्रेम व आपसी भाईचारे की शिक्षा मिलती है।

(ङ) एकांकी में बहादुर बेटा संदीप को कहा गया है क्योंकि वह मानवता और परोपकार के लिए अपने पिता और चाचा की भाँति सेवाभाव रखता है। वह संस्कारित बालक है। वह ऐसे कार्यों में आगे आना अपना धर्म समझता है।

4. * मधुर अपनी माँ से कहती है।
   * कुलदीप अपनी बहन मधु और माँ से कहता है।
   * संदीप की माँ रेडक्रॉस की सदस्या युवती से कहती है।

भाषा-अध्ययन

1. एक-साथ	बीच-बीच
घर-घर	एक-दो
कभी-कभी	फर्स्ट-एड

2. अनुस्वार (ं) वाले शब्द—गंगा, वंचित, पांडव, शांत, संहारक, संसार।

अनुस्वार (ँ) वाले शब्द—माँ, पाँच, हूँ, बाँध, जाऊँगा।

3.

हृदय	लगाना	हृदय लगाना	प्रेम करना
	टूक-टूक होना	हृदय टूक-टूक होना	निराश हो जाना
	भर आना	हृदय भर आना	दया आना
आँख	तारा	आँखों का तारा	बहुत प्यारा
	गिरना	आँख से गिरना	इज्जत खोना
	अंधा	आँख से अंधा	मूर्ख
	धूल झोंकना	आँखों में धूल झोंकना	बेवकूफ बनाना
	खुलना	आँखें खुलना	सावधान होना
कान	खाना	कान खाना	शोर मचाना
	कच्चा होना	कान का कच्चा होना	बिना समझे दूसरों की बात पर विश्वास करना
	पकड़ना	कान पकड़ना	गलती स्वीकार करना
	भरना	कान भरना	चुगली करना

4.

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
जाह्नवी	गंगा, भागीरथी, सुरसरि।
जननी	माता, माँ, अम्बा।
रात्रि	रजनी, यामिनी, निशा।
सूर्य	भानु, सविता, रवि।

5.

शब्द	**तत्सम शब्द**	**शब्द**	**तत्सम शब्द**
लाज	लज्जा	तज	त्यागना
धीर	धैर्य	सूरज	सूर्य
भीख	भिक्षा	माता	मातृ

6.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
गाड़ीवान	—	गाड़ी	वान
अपरिचित	अ	परिचय	इत्
प्रकाशित	—	प्रकाश	इत्
प्रशंसनीय	—	प्रशंसा	अनीय
रथवान	—	रथ	वान
संहारक	सम्	संहार	अक्
बेकरार	बे	करार	—
मातृहीन	—	मातृ	हीन
दयालु	—	दया	आलु
सुशोभित	सु	शोभा	इत्

7. **(क)** काश! मैं उसे समझ पाता, तो मैं उसके पास इस काम के लिए कभी नहीं जाता।
(ख) रेखा, पूनम, सुनीता और राधा बगीचे में घूम रही हैं।
(ग) जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि तो लगे ही रहते हैं। हमें इनकी कभी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।
(घ) गीता में कहा है— "कर्म करो, परन्तु फल की इच्छा मत करो।"

20 नन्हा सत्याग्रही

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. सलूक — व्यवहार।
दफा हो जाना — तेजी से भाग जाना।
नाचीज — तुच्छ।
बदतमीजी — बुरा व्यवहार।
सकपकाए — घबराए।
हलकान — परेशान।
2. (क) वह बात जरा-सी थी, वह यह थी कि थानेदार के दर्जे के पुलिस अधिकारी ने बेकसूर मोहन को चपत लगा दी थी। इस छोटी-सी बात पर मोहन रोये जा रहा था।
(ख) (क) घमण्ड।

(ग) मोहन के मित्र हाथों में तख्तियाँ लेकर नारेबाजी करने लगे तथा मोहन को न्याय दिलाने की अपील करने लगे।

3. (क) बालकों की बात पर ध्यान न देने के भाव वाले चार वाक्य निम्नवत् हैं—

(i) "अरे भाई, बड़े हैं, जरा जल्दी होगी, किसी ने उन्हें नहीं टोका। एक तुम्हीं उनके आड़े आ गए।"

(ii) "लड़का जिरह किया जाता है, इसे कौन समझाए?"

(iii) "रोता है, रोने दो-कब तक रोएगा?"

(iv) "अभी थककर आप चुप हो जाएगा।"

(ख) उक्त बात लोग इस आधार पर कह रहे थे क्योंकि मोहन पुलिस अधिकारी के द्वारा एक चपत लगाए जाने पर रोए ही जा रहा था। वह कह रहा था कि उसका अपराध क्या है? केवल इसलिए कि मैं छोटा हूँ और कमजोर हूँ, साथ ही बड़ों ने कभी नहीं टोका उन्हें; मोहन ने टोक दिया तो उसे पीट दिया। कोई बड़ा उन्हें रोकता-टोकता तो क्या वह उसके चाँटा जड़ देते? नहीं तो, परन्तु मोहन को इसलिए पीट दिया कि वह बच्चा है, छोटा है, कमजोर है। लोगों का मानना था कि इन छोटी-छोटी बातों का बतंगड़ बनाना बच्चों के लिए अच्छी बात नहीं है।

(ग) आस-पास की मुंडेरों से उभर आए चार-पाँच चेहरों ने जो देखा, उससे सम्बन्धित पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) "अजीब उजड्ड-ढीठ लड़का है।" एक पड़ोसी ने कहा।

(ii) "देखिए, आप इसे समझाएँ अगर यहाँ से दफा नहीं हुआ तो मैं इसे कोतवाली में बन्द करवा दूँगा।"

(iii) "यार, इस लड़के पर कौन-सा भूत सवार है? किसी भी तरह नहीं मानता।" इतना कहकर शर्माजी नीचे उतरे।

(iv) "कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी। कहा न भाई बड़े हैं।"

(घ) जब फरीद बाबा फाटक खोलकर भीतर गये होंगे तो उन्होंने शेरसिंह से कहा होगा कि अरे, इंस्पेक्टर साहब! सभी बच्चे मोहन के मित्र हैं। वे सब घर के फाटक पर नारेबाजी कर रहे हैं। आज गाँधी जयन्ती है। शहर में सभी लोग इधर से उधर आ-जा रहे हैं। आपके खिलाफ नारेबाजी हो रही है, अच्छी बात नहीं है। अखबार वाले छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर छापेंगे। बात का बतंगड़ हो जाएगा। अभी-अभी तो आपको तरक्की मिली है। ऐसा न हो कि तुम्हारे खिलाफ तुम्हारे अधिकारी कोई कदम उठा लें। सम्भवत: इन्हीं बातों को सुनकर शेरसिंह माफी माँगने आ गए।

भाषा अध्ययन

1. (i) खाट + इया = खटिया।
(ii) साठ + इया = सठिया।
(iii) लोटा + इया = लुटिया।
(iv) लखटका + इया = लखटकिया।
(v) लकुटी + इया = लकुटिया।

2.

ईमानदार	ईमानदारी
बेईमान	बेईमानी
कमजोर	कमजोरी
खराब	खराबी
सफेद	सफेदी
चालाक	चालाकी

3.

महात्मा	महा	+	आत्मा
धर्मात्मा	धर्म	+	आत्मा
पुण्यात्मा	पुण्य	+	आत्मा
परमात्मा	परम	+	आत्मा
पापात्मा	पाप	+	आत्मा

4. 1. स्कूल की घंटी बजी। मंदिर में घंटा बजा।
2. हम गांधी जयंती मनाते हैं। बच्चे बाल दिवस मनाते हैं।
3. प्रधान जी ने झंडा फहराया। अध्यापक ने झंडियाँ फहराईं।

4. घर में भाई आए। घर में बहन आई।

5.

पाच	पाँच	आख	आँख
डका	डंका	तख्तिया	तख्तियाँ
मुह	मुँह	गाधी	गाँधी
हसना	हँसना	मच	मंच

6. वाक्य प्रयोग–

अर्थ	वाक्य प्रयोग
उम्र में बड़ा	– राम श्याम से **बड़ा** है।
आकार में बड़ा	– यह डिब्बा उस डिब्बे से **बड़ा** है।
पद में बड़ा	– प्रधानाध्यापक अन्य अध्यापकों से **बड़े** हैं।
खाने की वस्तु	– आज खाने में दही-**बड़े** हैं।

7. टस से मस न होना– न हिलना

वाक्य प्रयोग– धरने पर बैठे लोग **टस से मस** नहीं हुए।

पहाड़ टूट पड़ना-बड़ी मुसीबत आ जाना।

वाक्य प्रयोग– मोहन के बीमार हो जाने पर वृद्धा के ऊपर मुसीबतों का **पहाड़ टूट पड़ा**।

8. 'खाना' सहायक क्रिया वाले चार वाक्य निम्न हैं–

1. मोहन खाना खा रहा है। (भोजन-संज्ञा)
2. संदीप कुछ खा रहा है। (क्रिया)
3. विशाल खानेदार कमीज पहने हुए है। (कमीज का रंग)
4. उसने चारों खाने चित्त कर दिया। (स्थिति)

9. **बनवाया**– आज हलवाई से खोवा बनवाया।

करवाना– नेताओं ने किसानों से आन्दोलन करवाया।

सुनवाया– सुधा ने गरिमा से सुन्दर भजन सुनवाया।

धुलवाना– मालिक ने नौकर से गिलास धुलवाया।

21 सालिम अली

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. खूंखार – हिंसक, निर्दयी।

प्रेक्षण – देखने की प्रक्रिया।

पर्यवेक्षण– निगरानी।

वरिष्ठ – अपने से अधिक अनुभवी।

विलुप्त –गायब हुआ।

बुलफ्रेम– बुलफ्रेम नामक कच्ची धातु की खान।

2. **(क)** सालिम अली का पूरा नाम सालिम मुईजुद्दीन अब्दुल अली था।

(ख) चाचा ने सालिम अली का परिचय डब्लू. एस. मिलार्ड से कराया। ये "बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी" के अवैतनिक सचिव थे।

(ग) अपोलो स्ट्रीट पर "बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री" का कार्यालय था।

(घ) सालिम अली ने 'फिन बया' नामक पक्षी को खोज निकाला।

(ङ) सालिम अली को पक्षी संरक्षण के लिए 'जे. पॉल वाइल्ड लाइफ कंजर्वेशन' पुरस्कार मिला था।

(च) पाठ में उल्लिखित पुस्तकें हैं–(1) बुक ऑफ इण्डियन बर्ड्स तथा (2) हैंडबुक ऑफ द बर्ड्स ऑफ इण्डिया तथा पाकिस्तान।

3. **(क)** सालिम अली ने जिस घायल पक्षी को उठाया वह पक्षी गौरेया की तरह लगता था परन्तु उस पक्षी के गले पर पीला धब्बा था। यह देखकर सालिम अली उस पक्षी को अपने चाचा अमीरुद्दीन तैयबजी के पास ले गया और पूछा कि यह किस किस्म का पक्षी है? चाचा इस विषय में कुछ भी नहीं जानते थे। इसके लिए चाचा उस बालक को 'बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' के ऑफिस में ले गए। वहाँ डब्लू. एस. मिलार्ड ने अपनी एक दराज से मरे हुए पक्षी को उठाया। वह पक्षी बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि बालक अपने साथ लाया था। वह एक नर पक्षी था जिसको केवल वर्षा ऋतु में ही पहचाना जा सकता है। वर्षा ऋतु में उस पक्षी के गले पर पीला धब्बा उभर आता है, इसलिए उस पक्षी की पहचान करना मुश्किल था।

(ख) सालिम अली ने 'बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' में तरह-तरह के पक्षियों को देखा जिनके शरीरों में भूसा भरा था। वह यह देखकर अचम्भे में रह गया। श्री मिलार्ड ने किसी भी भारतीय वयस्क को इतने उत्साह से भरा नहीं देखा था जो पक्षियों के बारे में जानने की इच्छा रखता हो। उसने सीखना शुरू कर दिया कि पक्षियों को किस तरह पहचाना जाता है। साथ ही उसने यह भी सीख लिया कि मरे हुए पक्षियों के शरीर में भूसा भरकर उन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है।

(ग) एक भारतीय बालक द्वारा किसी पक्षी के बारे में इस प्रकार सवाल किए जाने पर मिस्टर मिलार्ड को इसलिए आश्चर्य हुआ क्योंकि वह पहला भारतीय लड़का था जो उस घायल हुई बया पक्षी के बारे में जानने की इच्छा रखता था।

मिलार्ड उसे उस कमरे में ले गए जहाँ तरह-तरह के पक्षियों को उनके शरीरों में भूसा भरकर रखा गया था। उस वयस्क सालिम अली ने इस तरह की कल्पना भी नहीं की थी कि पक्षी इतने प्रकार के होते हैं। उस लड़के ने असाधारण रूप से पक्षियों को पहचानने की कोशिश की। इन सब बातों से मिलार्ड को आश्चर्य हुआ।

(घ) सालिम अली एक पक्षी-प्रेमी थे। उनको बचपन से ही पक्षियों से लगाव था। उन्होंने कई महीनों तक बया पक्षियों का अध्ययन किया। उन्होंने स्वयं ही अनेक परीक्षण किए। उनकी एक विशेषता थी कि वे किसी भी बात को आँखें बन्द करके स्वीकार नहीं करते थे, चाहे वह बात कितने ही प्रसिद्ध व्यक्ति ने क्यों न कही हो? वे अपने पर्यवेक्षण के परिणामों को बार-बार जाँचते थे और बहुत जल्दी ही किसी परिणाम पर नहीं पहुँचते थे। अत: उनके विचारों और उनकी राय को आधिकारिक माना जाने लगा और यही उनके अन्य पक्षी-प्रेमियों से टकराव का कारण था।

(ङ) सालिम अली की पढ़ाई-लिखाई में अधिक रुचि नहीं थी। वे बीजगणित से बहुत डरते थे। उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और बर्मा (म्यांमार) चले गए। बर्मा में इनके बड़े भाई रहते थे। वे वहाँ बुलफ्रेम की माइनिंग का काम करते थे। सालिम को माइनिंग के काम में भी सफलता नहीं मिली। वे वहाँ पक्षियों की खोज करने लगे। वहाँ से लौटकर प्राणिशास्त्र में एक कोर्स कर लिया और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अजायबघर में गार्ड नियुक्त हो गए। वे अब इसका उच्च प्रशिक्षण लेने के लिए जर्मनी चले गए। लौटकर उन्होंने वर्डवाचिंग के अध्ययन के परिणाम को प्रकाशित किया जिससे उन्हें पक्षी विज्ञान में प्रसिद्धि मिली। उन्होंने विलुप्त पक्षियों की खोज की और इस प्रकार उनकी इस प्रतिभा ने उन्हें असाधारण बनाया।

4.

(अ)	(आ)
वर्षा	ऋतु
अजायब	घर
विश्व	विद्यालय
घायल	चिड़िया
पक्षी	विज्ञानी

भाषा-अध्ययन

1. **ऑफिस**—रविवार को ऑफिस बंद हो जाता है।

अवैतनिक—जयभगवान ने दो माह तक विद्यालय में अवैतनिक सेवा की।

विस्मित—वह अपने पुराने मित्र को सामने देखकर विस्मित रह गया।

वयस्क—कोई भी वयस्क मत देने का अधिकार रखता है।

प्राणिशास्त्र—गरिमा प्राणिशास्त्र की प्रवक्ता है।

कॉलेज—आज कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता है।

2.

शब्द		उपसर्ग		शब्द
विलुप्त	=	वि	+	लुप्त
असाधारण	=	अ	+	साधारण
सम्मान	=	सम्	+	मान
प्रशिक्षण	=	प्र	+	शिक्षण
अनुपस्थिति	=	अनु	+	उपस्थिति
उपयोग	=	उप	+	योग
सौभाग्य	=	सौ	+	भाग्य

3.

पूर्ण शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
नारीत्व	=	नारी	+	तत्व
राष्ट्रीय	=	राष्ट्र	+	ईय
भारतीय	=	भारत	+	ईय
विवाहित	=	विवाह	+	इत
पक्षीवाला	=	पक्षी	+	वाला

4.

अजायबघर	अजायब	+	घर
पक्षिविज्ञानी	पक्षी	+	विज्ञानी
महत्वपूर्ण	महत्व	+	पूर्ण
महाद्वीप	महा	+	द्वीप
महत्वाकांक्षी	महत्व	+	आकांक्षी
प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुति	+	करण
प्राणिशास्त्र	प्राणी	+	शास्त्र

5.

जो बिना वेतन लिए काम करता है।	अवैतनिक
जो मार्गदर्शन करता है।	मागदर्शक
जहाँ पानी के जहाज आकर खड़े होते हैं।	बन्दरगाह
जो पक्षियों से प्रेम करता है।	पक्षी-प्रेमी
पक्षियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखने वाला।	पक्षी-विज्ञानी
जो बात मुख से कही गई है।	मौखिक

22 गीता का मर्म

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. विशाल—बड़ा | वाचालता—बातूनीपन
प्रकांड—महान | पार्थ—अर्जुन
शास्त्र—पुस्तक, ग्रंथ | मर्मज्ञ—ज्ञाता
प्रयास—कोशिश | मर्म—रहस्य
मध्यस्थता—बीच-बचाव | धर्मक्षेत्र—धर्म का क्षेत्र
माहात्म्य—महत्व | प्रपंच—पाखण्ड
तारतम्य—क्रम | चित्त—मन
प्रवचन—उपदेश | युक्तियुक्त—तर्कपूर्ण
लिप्सा—लालसा
व्यापक—विस्तार, बहुत बड़ा
कुटिलता—चालाकी | धृष्टता—अशिष्टता
मन्तव्य—विचार | शमन—नाश।

2. **(क)** राजा ने मंत्रियों के समक्ष गीता का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की।

(ख) राजा की घोषणा सुनकर बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित, ज्ञानीजन उनके पास आने लगे।

(ग) गौवर्ण राजा के पास गीता का मर्म समझाने हेतु आया था।

(घ) गीता में कुल सात सौ श्लोक हैं।

(ङ) राजा के मन में आधा राज्य न देने की कुटिलता समाई हुई थी।

(च) जो स्वयं उस पर आचरण करता हो वही दूसरों को उपदेश देने का अधिकारी है।

(छ) विद्या से हममें विनम्रता आती है, मन शान्त हो जाता है, चित्त एकाग्र हो जाता है और तृष्णाओं का नाश हो जाता है।

3. **(क)** राजा आनन्द पाल ने अपने मंत्रियों से कहा कि वे 'श्रीमद्भगवद्गीता' का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। अत: पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दें कि जो भी विद्वान राजा को पूर्णरूप से गीता को समझा देगा, उसे वह (राजा) अपने राज्य का आधा हिस्सा प्रदान करेगा। मंत्रियों ने भी राजा के आदेशानुसार पूरे राज्य के समस्त नगरों तथा गाँवों में तथा राज्य के बाहर भी ढिंढोरा पिटवाकर यह घोषणा करवा दी।

(ख) गौवर्ण नाम के एक प्रकाण्ड विद्वान ने जब राजा की घोषणा सुनी तो वह गीता का मर्म समझाने हेतु राजा के पास आया और बोला कि राजन् मैं तुम्हें गीता समझाऊँगा। राजा द्वारा अनुमति प्रदान करने के उपरांत गौवर्ण ने राजा को गीता के एक-एक शब्द, पद, अक्षर व श्लोक का अर्थ व्याख्या सहित समझाया। ''धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे...'' से प्रारम्भ कर यत्र योगेश्वर: कृष्णो ''यत्र पार्थो धनुर्धर:'' तक उसने पूरे सात सौ श्लोक राजा को लगभग कण्ठस्थ करा दिए।

(ग) महायोगी व गौवर्ण से कहा कि क्या तुम दोनों ने अपना-अपना कार्य ईमानदारी से किया। राजा ने मना किया व गौवर्ण ने हामी भरी। महायोगी विशाख गौवर्ण से बोले-"सच तो यह है कि आपने स्वयं ही गीता का मर्म नहीं समझा अन्यथा आप आधे राज्य के लोभ के कारण इस प्रपंच में नहीं पड़ते क्योंकि गीता तो निष्काम कर्म करने की शिक्षा देती है, फल प्राप्ति की आशा से कर्म करने की नहीं। राजन् ने भी अर्थ नहीं समझा है अन्यथा विद्वानों का मान-सम्मान करने वाले राजा का व्यवहार इस प्रकार का नहीं होता। वास्तव में दूसरे को उपदेश देने का अधिकार वही रखता है जो स्वयं उसका आचरण करता हो।

(घ) अर्जुन ने इन्द्र से अपनी विद्या का उपयोग सत्य व न्याय की रक्षा करने, दुष्टों का दमन करने, असहायों की सहायता करने, नारी की रक्षा करने, निर्बल को सबल बनाने तथा धर्म की रक्षा करने के लिए कहा था। उन्होंने बताया मैंने ज्ञान कल्याण हेतु प्राप्त किया है, न कि सुख भोगने हेतु।

(ङ) अर्जुन व इंद्र के प्रसंग को सुनकर राजा आनन्दपाल के मन में हलचल मची क्योंकि उन्हें लगा कि राजा के रूप में उनका कार्य जन

कल्याण होना चाहिए, राज भोग की लिप्सा नहीं। उनके मन में वैराग्य भाव जाग्रत हो गया तथा उन्होंने अपना सम्पूर्ण राजपाट गीता का मर्म सुनाने वाले पंडित गौवर्ण को देने की इच्छा व्यक्त की। अब उन्हें गीता के सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो चुकी थी और वे राज-पाट के मोह से मुक्त हो गए।

(च) इस कहानी से आज का विद्यार्थी यह सीख ग्रहण कर सकता है कि सच्ची, अर्थपूर्ण एवं आदर्श शिक्षा वही विद्यार्थी प्राप्त करता है जो शिक्षा को मात्र धनोपार्जन तथा यश प्राप्ति का साधन न मानकर उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए करता है। यदि विद्यार्थी अपने द्वारा अर्जित ज्ञान (शिक्षा) को अपने चरित्र में भी ढाल लेता है तो वह और अधिक सार्थक हो सकता है। साथ ही इस कहानी के द्वारा विद्यार्थियों को यह भी संदेश दिया गया है कि उन्हें लोभ और लालच से दूर रहना चाहिए।

4. **(क)** राजा आनन्दपाल ने अपने मंत्रियों से।
(ख) गौवर्ण ने राजा आनन्दपाल से।
(ग) गौवर्ण ने राजा आनन्दपाल से।
(घ) अर्जुन ने इन्द्र से।
(ङ) महायोगी विशाख ने राजा आनन्दपाल एवं गौवर्ण से।

भाषा अध्ययन

1. आचार्य विशाख गीता ज्ञान के मर्मज्ञ थे।
गाँव के मुखिया ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि गाँव में एक विशाल दंगल का आयोजन होगा।
हिन्दू धर्म में अन्न दान का बहुत माहात्म्य बताया गया है।
पाणिनी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे।
कर्ण धनुर्विद्या में सर्वाधिक निपुण थे।
सच्चे ज्ञान हेतु स्वाध्याय जरूरी है।
मनुष्य की वैभव की तृष्णा कभी नहीं मरती।

2. **'ता' प्रत्यय से बने शब्द—**
(i) आतुर + ता = आतुरता।
(ii) कामुक + ता = कामुकता।
(iii) दृढ़ + ता = दृढ़ता।
(iv) महान + ता = महानता।

'अ' उपसर्ग से बने शब्द—
(i) अ + नाथ = अनाथ।
(ii) अ + धर्म = अधर्म।
(iii) अ + ज्ञात = अज्ञात।
(iv) अ + ज्ञानी = अज्ञानी।

3.

समास पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
महापण्डित	महान है जो पण्डित	कर्मधारय समास
मान-सम्मान	मान और सम्मान	द्वन्द्व समास
यथोचित	यथा उचित	अव्ययीभाव समास
लोभवश	लोभ के वश	तत्पुरुष समास
महाराज	महान् है जो राजा	कर्मधारय समास
देवलोक	देवों का लोक	तत्पुरुष समास
तपोनिधि	तप की निधि	तत्पुरुष समास

4.

शब्द	**सन्धि विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
सम्मान	सम् + मान	व्यंजन सन्धि
स्वागत	सु + आगत	स्वर सन्धि
उत्थान	उत् + थान	व्यंजन सन्धि
निराशा	निः + आशा	विसर्ग सन्धि
परोपकार	पर + उपकार	स्वर सन्धि

5.

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
राजा	भूपाल, नृप, भूपति
इन्द्र	देवराज, सुरेन्द्र, सुरपति
नारी	औरत, महिला, वनिता
धनुष	धनु, शरासन, चाप

6. (क) 1. उसने मुझे कुछ नहीं बताया।
2. वह मेरे लिए कुछ नहीं लाता।
(ख) 1. व्यर्थ मत बैठो।
2. गलत राह मत चलो।
(ग) 1. जानबूझकर गलती न करें।
2. गलत लोगों की संगति न करें।

7. (क) विस्मयादिबोधक वाक्य
(ख) प्रश्नवाचक वाक्य
(ग) इच्छाबोधक वाक्य
(घ) आज्ञार्थक वाक्य
(ङ) संदेहसूचक वाक्य

22 महान विभूति : दानवीर डॉ. सर हरिसिंह गौर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. अभाव—कमी।
अक्षय—अनश्वर।
अद्वितीय—अतुल्य, अकेला।
अर्जित—कमाया हुआ।
विभूति—शक्ति, सम्पन्नता।
विधिवेत्ता—विधि विशेषज्ञ, कानून का जानकार।
रूढ़िग्रस्त—परम्परा से बँधी हुई।

2.

डॉ. हरिसिंह की गौरव गाथा	प्रेरणादायिनी
विश्वविद्यालय की स्थापना	डॉ. हरिसिंह गौर
डॉ. हरिसिंह गौर की पत्नी	ओलरिया
भामा-शाह ने संचित धन दिया	राणा प्रताप को

3. (क) डॉ. हरिसिंह गौर का जन्म 26 जनवरी, सन् 1870 ई. में शनीचरी टौरी, सागर (म.प्र.) में हुआ।

(ख) डॉ. गौर सन् 1921 ई. से सन् 1936 ई. तक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति रहे। इसके बाद दो वर्ष तक वे नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे।

(ग) डॉ. गौर को शिक्षा के क्षेत्र में 'सर' की उपाधि से जनवरी, सन् 1925 में अंग्रेज सरकार ने विभूषित किया।

(घ) उन्होंने सेण्ट्रल प्रॉविंस कमीशन में अतिरिक्त सहायक आयुक्त के पद से त्यागपत्र दिया था।

(ङ) सागर विश्वविद्यालय की स्थापना 18 जुलाई, सन् 1946 को सागर नगर के निकट मकरोनिया की पथरिया पहाड़ी पर डॉ. हरिसिंह गौर ने हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में शिक्षा में वांचित लोगों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य में की।

4. (क) डॉ. गौर का प्रारंभिक जीवन अभावों में बीता। माँ ने बड़े संघर्ष के साथ उनका पालन-पोषण किया था। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा सागर में और इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा पहले जबलपुर, बाद में नागपुर में पूरी की। आगे की शिक्षा के लिए उन्होंने नागपुर के हिसलप कॉलेज में प्रवेश लिया। उस समय वे अंग्रेजी और अर्थशास्त्र में ऑनर्स करने वाले प्रथम छात्र थे। अठारह वर्ष की आयु में वे इंग्लैण्ड चले गए, जहाँ उन्होंने डाउनिंग कॉलेज और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में एम.ए. और कानून की उपाधि प्राप्त की।

(ख) डॉ. गौर विधिवेत्ता, प्रसिद्ध अधिवक्ता और दानवीर के रूप में अविस्मरणीय विभूति थे। वे अपूर्व बुद्धि और अद्‌भुत वाक् चातुर्य वाले अधिवेत्ता थे। उनकी अद्वितीय प्रतिभा, मौलिक सूझबूझ, तीव्र स्मरण शक्ति उनके प्रत्येक शब्द में आत्मविश्वास के साथ झलकती थी। न्यायालय में उनका परिवाद प्रस्तुत करने का ढंग ओजस्वी और रोचक था। इसीलिए उनको सफल अधिवक्ता के रूप में जाना जाता है।

(ग) जिस प्रकार राष्ट्रहित के लिए भामाशाह ने अपना संचित धन महाराणा प्रताप को सहर्ष सौंप दिया था, उसी प्रकार डॉ. हरिसिंह गौर ने परिश्रमपूर्वक अर्जित धन विश्वविद्यालय स्थापना के लिए दान कर दिया। इस कार्य हेतु उन्होंने आरम्भ में बीस लाख रुपये दान किए। 18 जुलाई, सन् 1946 ई. को सागर नगर के निकट मकरोनिया की पथरिया पहाड़ी पर हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में सागर विश्वविद्यालय की विधिवत स्थापना करवाई। डॉ. गौर ने इस विश्वविद्यालय में प्रथम कुलपति का पद भी सुशोभित किया। उन्होंने अपनी अन्तिम साँस लेने से पूर्व अपनी जीवन भर की गाढ़ी कमाई में से लगभग दो करोड़ रुपये की धन-सम्पत्ति सागर विश्वविद्यालय को समर्पित कर दी। अत: राष्ट्रहित में किये गये अपने कार्य हेतु डॉ. गौर भामाशाह कहलाए।

(घ) डॉ. गौर सन् 1921 ई. से सन् 1936 ई. तक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति रहे। इसके बाद दो वर्ष तक उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति का पद संभाला। उन्हें दिल्ली एवं नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट. की मानद् उपाधि से सम्मानित किया गया। डॉ. गौर ने 18 जुलाई, सन् 1946 ई. को सागर विश्वविद्यालय की विधिवत् स्थापना की। डॉ. गौर ने इस विश्वविद्यालय में प्रथम कुलपति के रूप में पदभार सँभाला।
उनका अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार था। उन्होंने

'भारतीय दण्ड संहिता की तुलनात्मक विवेचना' और 'हिन्दू लॉ' पर पुस्तकें लिखीं जो आज भी विधि की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों में गिनी जाती हैं। उनके विधि क्षेत्र में अर्जित व्यापक अनुभव को देखते हुए उन्हें भारतीय संविधान सभा का उप सभापति भी चुना गया था।

5. डॉ. गौर का बचपन बड़े अभावों से गुजरा किन्तु अपने कठिन तप से उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल स्थान प्राप्त किया। अठारह वर्ष की आयु में वे इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ उन्होंने डाउनिंग कॉलेज और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.एम. और कानून की उपाधि प्राप्त की। इस प्रकार माँ सरस्वती की महान अनुकम्पा से शिक्षा जगत में महान ख्याति अर्जित की। उन्हेंने परिश्रमपूर्वक धन अर्जित किया जिसको उन्होंने राष्ट्रहित में सागर विश्वविद्यालय की स्थापना में लगाया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने उनकी दानवृत्ति को देखकर बहुत ही सटीक कहा—

"सरस्वती लक्ष्मी दोनों ने दिया,
तुम्हें सादर जय पत्र।
साक्षी है हरिसिंह तुम्हारा,
ज्ञान-दान का अक्षय सत्र।

भाषा अध्ययन

1. **शिक्षाविद्**— डॉ. हरिसिंह गौर देश के महान शिक्षाविद् रहे।

विभूति— डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत की महान विभूति हैं।

अधिवक्ता— हरिसिंह गौर भारत के कुशल अधिवक्ता थे।

औपचारिक— आज हमारे कक्षाकार्य में हमें औपचारिक पत्र लिखाया गया।

2.

समस्तपद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
लालन-पालन	लालन और पालन	द्वन्द्व समास
कानून-शिक्षा	कानून की शिक्षा	तत्पुरुष समास
सरस्वती-लक्ष्मी	सरस्वती और लक्ष्मी	द्वन्द्व समास
सांध्य-वेला	सांध्य की वेला	तत्पुरुष समास
देश-विदेश	देश और विदेश	द्वन्द्व समास

3.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
अक्षय	अ	क्षय	—
उपकुलपति	उप	कुलपति	—
सपूत	स	पूत	—
सहर्ष	स	हर्ष	—
सफलता	—	सफल	ता
दूरदर्शिता	—	दूरदर्शी	ता
ऐतिहासिक	—	इतिहास	इक
कार्यक्षमता	—	कार्य	क्षमता

4.

वाक्य	**शब्द**
वकालत करने वाला	वकील
जो थोड़ा जानता है	अल्पज्ञ
जो कभी न हो सके	असम्भव
जिसके आर-पार देखा जा सके	पारदर्शी
विद्या अध्ययन करने वाला	विद्यार्थी

5. **झण्डा गाड़ देना**— अधिकार जमा लेना।
वाक्य प्रयोग—भारत ने ओलंपिक विश्वकप में जीत का झण्डा गाड़ दिया।

लोहा मानना— प्रभुत्व स्वीकार करना।
वाक्य प्रयोग—भारतीय सैनिकों की वीरता का शत्रु लोहा मानते हैं।

घी के दिए जलाना— खुशियाँ मनाना।
वाक्य प्रयोग—राम के अयोध्या आगमन पर लोगों ने घर में घी के दीये जलाए।

आँख का तारा होना— बहुत प्रिय होना
वाक्य प्रयोग—राघव अपने माता-पिता की आँख का तारा है।

6. **(क)** उपयुक्त शीर्षक है—'समय का महत्व'।
(ख) आलस्य।
(ग) समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति।
(घ) समय का सदुपयोग उद्यमी और कर्मठ व्यक्ति कर सकता है।

24 महर्षि परशुराम

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. पौराणिक — पुराण संबंधी।
प्रपितामह — परदादा।
अस्त्र — फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।
संस्थापक — स्थापना करने वाला।
सनातन — शाश्वत।
चिरंजीवी — अमर।
चिरस्मरणीय — लंबे समय तक याद रखा जाने वाला।
अक्षय — अविनाशी।
पितामह — दादा।
शस्त्र — हाथ में लेकर चलाए जाने वाला हथियार।
बलिष्ठ — बलवान।
भार्गव — भृगु।
अपराजेय — अपराजित।
दिव्यास्त्र — दैवीय अस्त्र।

2. **(क)** महर्षि परशुराम का जन्म त्रेतायुग में बैशाख शुक्ल तृतीया को मध्यप्रदेश के इन्दौर के निकट 'जनापाव' पर्वत पर हुआ।
(ख) महर्षि परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका थी।
(ग) बालक परशुराम ने भगवान शिव से शिक्षा प्राप्त की थी।
(घ) महर्षि परशुराम ने द्वापर युग में देवव्रत (भीष्म), द्रोण (द्रोणाचार्य), कर्ण आदि को शस्त्र विद्या सिखाई थी।
(ङ) महर्षि परशुराम में शस्त्र और शास्त्र दोनों के ही गुण विद्यमान थे।
(च) आत्मरक्षा और सामाजिक सुख-संरक्षण के लिए शस्त्र और शास्त्र का समन्वय आवश्यक है।
(छ) महर्षि परशुराम धरती पर वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। वे समाज में दुष्ट प्रवृत्तियों का शमन कर विश्व में 'अमन-शान्ति' लाना चाहते थे। उन्होंने सामाजिक उत्थान के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों को धारण किया।
(ज) केरल भगवान परशुराम की कर्मभूमि मानी जाती है। यहाँ पर उन्होंने समुद्र में अपना परशु फेंककर जो भूमि ग्रहण की उसे वर्तमान में केरल के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश में भी उन्होंने परशुराम कुण्ड निर्मित किया जिसे 'प्रभुकुठार' के नाम से जाना जाता है।

3. (क) ऋचीक (ख) भार्गव
(ग) विद्युद्भि (घ) प्रभु कुठार

4. 1. (अ) नर्मदा नदी के तट पर।
2. (ब) त्रेता।

भाषा-अध्ययन

1. **कथा**— पंडित जी ने सत्यनारायण की सुन्दर कथा कही।
अस्त्र-शस्त्र— श्रीकृष्ण ने भीष्म पितामह से अस्त्र-शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की।
आचार्य— गुरु द्रोण कौरव-पाण्डवों के आचार्य थे।
आराध्य— भगवान शिव परशुराम के आराध्य थे।
प्रकृति— परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

2. **विशेषण शब्द—** आदर्श, बलिष्ठ, वीर, महान।

3.

तत्सम	तद्भव
परशु	फरसा
गौ	गाय
मातृ	माता
पितृ	पिता
मनुष्य	मानुष

4.

शब्द	सन्धि विच्छेद
द्रोणाचार्य	द्रोण + आचार्य
दिव्यास्त्र	दिव्य + अस्त्र
महर्षि	महा + ऋषि

5. योजक चिह्न वाले शब्द—

ताना-बाना	युग-युग
शास्त्र-ज्ञान	शस्त्र-सिद्धि
शस्त्र-शास्त्र	साथ-साथ
माता-पिता	पशु-पक्षियों
शस्त्र-शक्ति	शस्त्र-प्रयोग
धर्म-ग्रन्थों	चिरंजीवी-चिरस्मरणीय

विविध प्रश्नावली-3

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. महेश्वर — नर्मदा
धर्मरथ — भगवान राम
नव संवत्सर — विक्रम संवत
वसीयतनामा — जायदाद
पथिक — पथ

2. 1. (ख) हास्य 2. (ख) अरण्य
3. (ग) 365 दिन 4. (ख) ऐतिहासिक

3. 1. विक्रम 2. मान्धाता
3. धर्मरथ 4. क्रोध
5. पक्का।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. धर्मरथ के चार घोड़े हैं— विवेक, दम, परहित तथा क्षमा।

2. महेश्वर पर मौर्य, सातवाहन और गुप्तकालीन सभ्यताओं का प्रभाव पड़ा है।

3. 'बुक ऑफ इण्डियन बर्ड्स' पुस्तक के लेखक सालिम अली हैं।

4. मोहन ने गाँधीजी के कथन—"अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है।" पर चलने का प्रयास किया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रावण लंका का शक्तिशाली राजा था। उसकी सेना विशाल और सभी प्रकार के हथियार आदि से सुसज्जित थी। स्वयं रावण भी विद्वान एवं ज्ञानी था, परन्तु उसने सीताजी का हरण किया तथा राम से बैर करने के कारण युद्ध में मारा गया। इसका एकमात्र कारण था—उसमें घमण्ड और अभिमान की अधिकता। रावण में सत्य-शील, यम-नियम, दम, दया आदि का सर्वथा अभाव था।

2. भारतवर्ष में तलवार के अनेक पराक्रमी वीर हुए हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने पराक्रम को तलवार के द्वारा प्रदर्शित किया। इनमें महाराज शिवाजी और महाराणा प्रताप आदि के नाम प्रसिद्ध हैं।

3. उत्तर भारतीय माह का आरम्भ कृष्ण-पक्ष प्रतिपदा से होता है और पूर्णिमा से अन्त होता है, अतः इसे पूर्णिमान्त कहते हैं; परन्तु दक्षिण भारत में माह का आरम्भ शुक्ल-पक्ष प्रतिपदा से होता है और अमावस्या को अन्त होता है, अतः इसे अमान्त कहते हैं।

4. शरद ऋतु में आश्विन महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक का समय शारदीय नवरात्रि का होता है जबकि बासन्तीय नवरात्रि का समय चैत्र मास की शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक का माना गया है।

5. सुन्दरता की मृगतृष्णा का पता दूर्वादल, सरिता और सरोवरों, पर्वतों, वनों तथा बावड़ियों एवं सुन्दर झरनों के मनोहारी दृश्यों को देखने से चलता है।

6. वसीयतनामे के न्याय को जाते समय मिली युवती ने राजा को अन्धा इसलिए कहा क्योंकि वह लड़की कोई साधारण लड़की नहीं थी बल्कि राजा की बहन थी जो जवान हो गयी थी। वह विवाह करना चाहती थी परन्तु उसके विवाह के लिए राजा किसी 'वर' की खोज नहीं कर पा रहा था।

7. शेरसिंह ने मोहन पर अकारण ही हाथ उठाकर उस पर अत्याचार किया था। अपने इसी व्यवहार के लिए उसने मोहन और बच्चों से शर्मिंदगी व्यक्त की।

8.

शब्द	विलोम
प्रथम	अन्तिम
सफलता	असफलता
अनुराग	विराग
माँग	पूर्ति
सम्मुख	विमुख

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. रचनाकार हमें धर्मरथ के माध्यम से यह शिक्षा देना चाहता है कि बाह्य और आन्तरिक शत्रु को सद्गुणों रूपी धर्मरथ पर आरूढ़ होकर जीता जाता है। हमारे अन्दर शौर्य, धैर्य, सत्य और शील के क्रमशः दो पहिए एवं ध्वजा-पताकाएँ हैं। रथ को खींचने वाले चार घोड़े-बल, विवेक, यम और परोपकार होते हैं। इनको क्षमा, दया, समता की रस्सी से जोता जाता है जहाँ ईश्वर का भजन ही श्रेष्ठ ज्ञान व सम्पन्न सारथी है। संसार युद्ध में प्रयुक्त हथियार (ढाल, तलवार, फरसा, शक्ति, धनुष) के रूप में हमें वैराग्य, सन्तोष, दान, बुद्धि तथा श्रेष्ठ विज्ञान का प्रयोग करना होता है। तरकशरूपी निर्मल और अडिग

मन तथा यम-नियम और संयम के बाण; ब्राह्मणों तथा गुरु की पूजा कवच होते हैं, तभी हमें अपने बाहरी और आन्तरिक शत्रुओं पर विजय मिलती है।

2. गुड़ी पड़वा के दिन श्रीरामचन्द्रजी ने किष्किंधा के राजा बाली का वध करके उसके स्वेच्छाचारी राज का अन्त किया था। बाली वध के पश्चात् वहाँ की प्रजा ने पताकाएँ फहराकर उत्सव मनाया था। इन पताकाओं को महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा कहते हैं। आजकल वहाँ आँगन में बाँस के सहारे गुड़ी खड़ी की जाती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा कहते हैं।

3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' पथिक से कहना चाहते हैं कि उसे अपने लक्ष्य-मार्ग से कहीं भी भटकना नहीं चाहिए। वे उसे समझते हैं कि मार्ग में कठिनाइयों-बाधाओं के काँटे आ सकते हैं; अनेक सौन्दर्यपूर्ण दृश्य उसे प्रलोभित कर सकते हैं, लेकिन वे वास्तविक रूप से वैसे नहीं हैं जो दिखते हैं। उनकी सुन्दरता मृगतृष्णा के समान है जो भ्रम उत्पन्न करके लक्ष्य मार्ग से विमुख करने वाली है किन्तु अपने कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ना ही तुम्हारा उद्देश्य होना चाहिए।

4. **रूपक अलंकार—**जहाँ उपमेय और उपमान का अभेद वर्ण हो वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात् जब उपमेय को उपमान का रूप दे दिया जाता है, तो वहाँ रूपक अलंकार होता है।
उदाहरण- मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
इन पंक्तियों में 'चन्द्र खिलौना' उपमेय और उपमान हैं। इनमें अभेद आरोप प्रस्तुत किया गया है, अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

5. हम भारतीयों ने कभी भी अपने देश की सीमा को विस्तृत करना नहीं चाहा है। हमने किसी अन्य देश की धन-सम्पत्ति पर अपना कब्जा जमाने की इच्छा भी नहीं रखी है। परन्तु हम अपने प्रिय राष्ट्र (भारत) की जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं देंगे। यदि किसी लालच भरी दृष्टि वाले देश ने इस पर आक्रमण करने की अथवा हमारे देश की आजादी को कुचलने की कोशिश भी की तो तत्काल ही विनाश की आग फूट पड़ेगी। यद्यपि हम तो सदैव से शान्ति दूत रहे हैं।

6. पंक्ति में 'राधा का मुख' उपमेय है।
पंक्ति में 'कमल' उपमान है।
मानो, समान, अति सुन्दर वाचक शब्द हैं।
पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार 'उत्प्रेक्षा' है।

7. **उक्त पाठ वर्तमान में पाठ्य-पुस्तक से हटा दिया गया है।**

8. 'नन्हा सत्याग्राही' पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमको कभी भी अन्याय और अत्याचार चुपचाप सहन नहीं करना चाहिए बल्कि उसके विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए। यदि उसके लिए संघर्ष भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए क्योंकि जुल्म को सहन करना उसे बढ़ावा देना है।

9. (क) जब कठिन कर्म पगडंडी पर,
राही का मन उन्मन होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्त्तव्य मार्ग सम्मुख होगा।
तब अपनी प्रथम विफलता में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

(ख) अपने भी विमुख पराये बन,
आँखों के सम्मुख आएँगे।
पग-पग पर घोर निराशा के,
काले बादल छा जाएँगे।
तब अपने एकाकीपन में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

10. 'वसीयतनामे का रहस्य' कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मन में लालच का विचार लाने वाला व्यक्ति भी अपराध का भागी होता है।

11. रेडक्रॉस संस्था के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं—
(i) युद्धकाल में घायल एवं बीमार सैनिकों को चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराना।
(ii) जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा करना।
(iii) मातृत्व एवं शिशु की देखभाल करना।
(iv) विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण विस्थापित लोगों की सहायता करना।
(v) विभिन्न देशों के मध्य शान्ति की स्थापना करना एवं उसे बनाये रखना।

12. 1. गुरु की आज्ञा मानने का सन्देश विद्यालय में मिलता है।
2. विद्यालय — विद्या + आलय।
निष्कपट — नि: + कपट।
निस्वार्थ — नि: + स्वार्थ।
3. यथाशक्ति, कार्यशाला, राष्ट्रधर्म।
4. विद्यालय में छात्र संस्कारिता शिक्षा, निस्वार्थ सेवाभाव एवं राष्ट्रप्रेम सीखते हैं।

अभ्यास प्रश्न-पत्र (हिन्दी कक्षा-8)

1. (अ) (क) नर्मदा।

(आ) (ग) हिन्दुस्तान की तलवार से

(इ) (ग) ब्रह्मचर्य

(ई) (ख) सत्य + आग्रह

2. (अ) कुसुमपुर

(आ) सूर्य

(इ) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(ई) स्वर्णयुग

(उ) आस्तिक

3. (अ) ग्रामीण

(आ) विचार-खयाल, हस्तक्षेप-दखल।

(इ) नारी + त्व - नारीत्व, पुरुष + त्व - पुरुषत्व।

(ई) सुंदर नारी, शीतल जल

(उ) जान पड़ता है नेत्र देख बड़े-बड़े हीरकों में गोल नीलम हैं जड़े।

(ऊ) पण्डित-पण्डिताइन, आत्मज-आत्मजा, तरुणी-तरुण, पत्नी-पति।

(ए) वीभत्स रस का।

(ऐ) बलाघात

4- (अ) 'बाम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसायटी' में सालिम अली को रोचक, सुखद एवं आश्चर्यपूर्ण अनुभव प्राप्त हुए। वहाँ उन्होंने प्रोफेसर मिलार्ड के सान्निध्य में तरह-तरह के पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। पक्षियों की इसी परख ने उन्हें एक महान पक्षी विज्ञानी बना दिया।

(आ) जब संगीत समाज के लिए एक प्रेरणादायक स्रोत बन जाए, तब संगीत का महत्व बढ़ जाता है। क्योंकि संगीत से मिली वह प्रेरणा समाज को नया बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती है। जिससे समाज में व्याप्त बुराइयाँ व कुरीतियाँ समाप्त हो सकें एवं लोगों में नई चेतना व ऊर्जा का संचार हो।

(इ) कारकों के चिह्न (परसर्ग) निम्न है-

	कारक	चिह्न (परसर्ग)
1.	कर्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से (के द्वारा)
4.	संप्रदान	के लिए (को)
5.	अपादान	से (पृथक होने पर)
6.	सम्बंध	का, की, के, रा, री, रे
7.	अधिकरण	में, पे, पर
8.	संबोधन	हे!, ओ!, अरे!

(ई) मोहन पढ़ने में चतुर है और वह गाना भी गाता है।

(उ) 'वसीयतनामे का रहस्य' कहानी में बूढ़े किसान की दूरदर्शिता एवं राजा की न्याय कुशलता का वर्णन है। बूढ़े किसान ने अपनी मृत्यु के समय संपत्ति के तीन हिस्से किए जबकि उसके चार पुत्र थे। लोग इस घटना से अचंभित हुए। बूढ़े किसान ने मरने से पहले यह भी कहा था कि ''जो मेरी संपत्ति का वसीयत के अनुसार बँटवारा कर देगा, उसी से मेरी बेटी का विवाह होगा।'' एक दिन चारों भाई तथा गाँव के लोग इस घटना को लेकर राजा के पास पहुँचे तथा उनसे न्याय की गुहार लगाई। राजा ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए, सभी भाइयों को अलग-अलग कमरों में बंद कर दिया। उन्हें एक तलवार देकर एवं संपत्ति का लालच देकर एक-दूसरे की हत्या के लिए उकसाया। तीन भाई इस तरह के लालच में नहीं आए किन्तु चौथा भाई स्वार्थवश शेष तीन भाइयों की हत्या के लिए तैयार हो गया। इस प्रकार राजा ने वसीयत के असली हकदारों की पहचान कर ली। शर्त के अनुसार उन तीनों भाइयों ने अपनी सुंदर बहिन का विवाह राजा के साथ कर दिया।

(ऊ) (i) मेरा स्वराज्य

(ii) स्वराज्य का ध्येय अपनी सभ्यता की विशेषता को अक्षुण्ण बनाए रखना है।

(iii) ऐसा तभी कहा जा सकेगा, जब जनता यह अनुभव करने लगेगी कि उसे अपनी उन्नति करने तथा रास्ते पर चलने की आजादी है।

5. (अ) 172, पटेल नगर,
ग्वालियर
दिनांक 20/07/20--
सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक जी,
रा. उ. प्रा. विद्यालय, ग्वालियर
विषय-तीन दिवस के अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मेरे मामाजी का परिवार हमारे यहाँ आया हुआ है। हम सभी ने मिलकर साँची घूमने की योजना बनाई है, जिससे साँची के प्रसिद्ध स्तूप को भी देख पाएँ। अत: मुझे 21 जुलाई, 20-- से 23 जुलाई, 20-- तक दिन दिवस का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अभिषेक शर्मा
कक्षा-8 'ब'

अथवा

विद्याभवन, जयपुर
दिनांक 16 नवम्बर, 20--
आदरणीय माताजी,
सप्रेम नमस्ते! मैं यहाँ सकुशल हूँ। उम्मीद है आप भी कुशल होंगी। दो दिन पहले 14 नवम्बर को हमारे विद्यालय में बालदिवस मनाया गया। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम हुए। मैंने भाषण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। हम सबने भरपूर आनंद लिया तथा बाल दिवस के महत्व को भी जाना। पिताजी को प्रणाम व छुटकी को प्यार।
आपकी पुत्री
शैलजा कुमारी
कक्षा-8 'स'

(आ) (1) गणतंत्र दिवस

विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के व्याकरण (रचना) में पृष्ठ 255 पर निबंध क्रमांक 5 'गणतंत्र दिवस' देखें।

(2) तुलसीदास

प्रस्तावना—हिन्दी में जिन महान कवियों ने अपनी वाणी को समाज की मंगल साधना का लक्ष्य बनाया उनमें महाकवि तुलसीदास का स्थान विशिष्ट है। जिस कवि ने घोर संकट, संताप और तिरस्कार से हताश भारतीय समाज को आशा और आत्मविश्वास के उद्घोष से जनजीवन प्रदान किया, उसके प्रति मेरी विशेष आस्था होना स्वाभाविक है।

तुलसी का जीवन—रामाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं सन्त, तुलसीदास जी की जन्मतिथि और जन्मस्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। सामान्यत: उनका जन्म 1532 ई. में हुआ माना जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार इनका जन्म संवत् 1554 (1497 ई.) में श्रावण शुक्ल की सप्तमी के दिन हुआ था। तुलसी के जन्म-स्थान के विषय में भी कई मत प्रचलित हैं। इनमें दो मत प्रमुख हैं—उत्तर प्रदेश में बाँदा जिले का राजापुर ग्राम। एटा जिले का सोरों नामक स्थान। एक किंवदन्ती के अनुसार जब ये उत्पन्न हुए थे तभी इनके मुख में दाँत थे। इनके बचपन का नाम रामबोला था इनके पिता का नमा आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इन्हें बचपन में ही माता-पिता ने त्याग दिया था, अत: ये भीख माँगकर पेट भरते रहे।

जन्मकाल की परिस्थितियाँ—तुलसी का जन्म विषम परिस्थितियों में हुआ। हिन्दू समाज अशक्त होकर विदेशी चंगुल में फँस चुका था। हिन्दू समाज की संस्कृति और सभ्यता पर निरन्तर आघात हो रहे थे। कहीं पर कोई उचित आदर्श नहीं था। इस युग में मन्दिरों का विध्वंस और ग्रामों व नगरों का विनाश हो रहा था। संस्कार

समाप्त हो रहे थे। तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। सर्वत्र धार्मिक विषमता व्याप्त थी।

तुलसीदास जी का कृतित्व—तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ— 1.रामलला नहछू, 2. वैराग्य संदीपनी, 3. रामाज्ञा-प्रश्न, 4. जानकी-मंगल 5. श्रीरामचरितमानस-इस विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ में कवि ने मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का व्यापक वर्णन किया है। 6. पार्वती-मंगल 7. गीतावली, विनय-पत्रिका आदि हैं।

तुलसीदास : एक लोकनायक— हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का कथन है—"लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की संस्कृतियाँ, जातियाँ और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। इस दृष्टि से तुलसीदास एक महान लोकनायक थे।

उपसंहार—तुलसी ने अपने युग और भविष्य, स्वदेश और विश्व, व्यष्टि और समष्टि सभी के लिए महत्वपूर्ण सामग्री दी है। तुलसी को आधुनिक दृष्टि ही नहीं, हर युग की दृष्टि मूल्यवान मानेगी। मणि की चमक अन्दर से आती है, बाहर से नहीं।

(3) कम्प्यूटर का उपयोग व महत्व

प्रस्तावना—पूरे मानव समाज के लिये विज्ञान का अनोखा और पथप्रदर्शन करने वाला उपहार है कम्प्यूटर। अपनी सुगमता और कार्य-क्षमता के कारण इसका प्रयोग व्यापक तौर पर होता है जैसे—ऑफिस, बैंक, होटल, शिक्षण संस्थान, स्कूल कॉलेज, दुकान, उद्योग आदि।

कम्प्यूटर क्या है?— यह एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो गणना करने तथा बड़ी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष है। यह हमारे कौशल को बढ़ाने में और आसानी से जानकारी प्राप्त करने में भी हमारी मदद करता है। यह एक डेटा आधारित मशीन है। यह हमें कई सारे टूल्स उपलब्ध कराता है जैसे—टेक्स्ट टूल्स, पेंट टूल्स आदि जो बच्चों के लिये बहुत फायदेमंद है और विद्यार्थी इसे अपने स्कूली तथा प्रोजेक्ट कार्यों में काफी प्रभावपूर्ण रूप में उपयोग कर सकते हैं। यह एक बड़ा शब्दकोश और बड़ा स्टोरेज डिवाइस है जो किसी भी तरह के डेटा को सुरक्षित रखने के लिये उपयुक्त है।

कम्प्यूटर का महत्व—कार्य स्थल, शिक्षा के क्षेत्र में तथा निजी उपयोग के लिए कम्प्यूटर का बहुत ही महत्व है। पुराने समय में हम सारे काम अपने हाथ से करते थे लेकिन आज खातों के प्रबंधन, डेटाबेस बनाने, आवश्यक जानकारी संग्रहीत करने जैसी विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कम्प्यूटर का उपयोग किया जाता है। हम इसका प्रयोग बड़े और छोटे गणितीय गणनाओं के लिये सटीक ढंग से कर सकते हैं। इसका उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, किताब, न्यूज पेपर, डाइग्नोजिंग आदि के लिये किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन रेलवे आरक्षण, होटल या रेस्टोरेंट की बुकिंग के लिये किया जाता है।

उपसंहार—आजकल हर कोई इंटरनेट के जरिये कम्प्यूटर पर काम करना आसान मानता है। वास्तव में आज के समय कम्प्यूटर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

(4) मेरा प्रिय शिक्षक

विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के व्याकरण (रचना) भाग में पृष्ठ संख्या 256 निबंध क्रमांक 6 'मेरे प्रिय शिक्षक' देखें।

6. **(अ) प्रसंग**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' कक्षा-8 के पाठ-13 'न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है' पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत पद्यांश में कवि हमारे देश के धैर्य व शौर्य का परिचय दे रहा है।

भावार्थ—हम सदा शान्ति का संदेश देते आए हैं। इसका मतलब यह नहीं कि हम अहिंसा का आचरण अपनाकर वीरता का त्याग कर देंगे और कायर बन जाएँगे। इसका मतलब यह भी नहीं है कि हम अपने देश की नारी (बहनों-माताओं) का अपमान सह लेंगे। सभी को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि जब धरती पर पैरों के नीचे

दबी-कुचली, लाचार अवस्था में सोई हुई धूल भी पैरों की ठोकर खाने पर आकाश में उमड़कर चारों तरफ छा जाती है तो इंसान अपमानित होकर कैसे चुप बैठ सकता है।

अथवा

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' कक्षा-8 के पाठ-1 'वर दे' से लिया गया है। इसमें कवि हम सबको परतंत्रता व अज्ञानता से मुक्त होने की प्रेरणा देता है।

भावार्थ—मनुष्यमात्र के अज्ञानता से भरे हृदय के सभी बंधनों को काट दीजिए और उनके हृदयों में ज्ञान का ज्योतिरूपी झरना बहा दीजिए। मन के अन्दर जितने भी क्लेशरूपी दोष और अज्ञानता के विकार हैं, उनको दूर कर दीजिए तथा ज्ञान का प्रकाश भर दीजिए। इस प्रकार सम्पूर्ण संसार को जगमगा दीजिए।

(आ) प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा-भारती' के पाठ-3 'मध्यप्रदेश की संगीत विरासत' से लिया गया है। इसमें लेखक समाज में संगीत के महत्व को बताता है।

भावार्थ—संगीत हमारे ऋषि-मुनियों और साधकों की हजारों वर्ष पुरानी तपस्या व अभ्यास का प्रतिफल है। कहा जाता है कि शोक के स्वर से श्लोक बना यानि जब व्यक्ति ने पहली बार अपनी व्याकुलता को स्वर के माध्यम से अभिव्यक्त किया तो संगीत का जन्म हुआ। समय व परिस्थिति के अनुसार संगीत का निरंतर विकास होता गया। संगीत एक कला है जिस समाज में यह कला उपस्थित नहीं होती वह समाज असभ्य आचरण वाला व अव्यवस्थित बन जाता है।

अथवा

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक भाषा-भारती के पाठ-7 'भेड़ाघाट' से ली गई हैं। इनमें लेखक नर्मदा नदी के किनारे स्थित पहाड़ियों के अनोखे सौंदर्य का वर्णन करता है।

व्याख्या—नर्मदा के किनारे की चट्टानें अद्‌भुत, विशाल व आकर्षक हैं। उनकी सुंदरता प्रकृति के अनुरूप ढलती रहती है। रात को जब चाँद निकलता है तो ये पहाड़ियाँ चाँदी जैसी धवल व उज्ज्वल हो जाती हैं। दिन के समय सूरज की तेज धूप से पीली दिखाई देने लगती हैं।

●●